0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि·२०० ० १५४

आधुनिक हिन्दी काव्य

४.

डाक्टर वर्मा और वर्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M
०१.९४८
कि: २००
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नं ९५८

आधुनिक हिन्दी काव्य

[नवीन प्रगति की मौलिक रचनाओं का संग्रह]

प्रयाग विश्वविद्यालय और लखनऊ विश्वविद्यालय

की

बी० ए० परीक्षा की पाठ्य-पुस्तक

सम्पादक

डा० धीरेन्द्र वर्मा एम० ए०, डी० लिट्०,

डा० रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०,

प्रयाग विश्वविद्यालय

[संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण]

बनारस

प्रकाशक

सरस्वती प्रकाशन मन्दिर

जार्जटाउन, इलाहाबाद

चौथी बार] २००७ मूल्य ४)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मुद्रक—सुशीलचन्द्र वर्मा
सरस्वती प्रेस,
जार्जटाउन, इलाहाबाद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

निवेदन

प्रथम संस्करण

खड़ी बोली हिन्दी में कविता की रचना भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को किसी प्रकार भी मान्य नहीं थी। उन्होंने अपने नाटकों में जहाँ गद्य की भाषा खड़ी बोली मानी है, वहाँ पद्य में उन्होंने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। पद्य में खड़ी बोली का प्रयोग या तो उन्होंने 'अन्धेर नगरी' प्रहसन में हास्य की सृष्टि करने के लिये किया है, अथवा 'चन्द्रावली' नाटिका के चतुर्थ अंक में, जहाँ वे योगनी से प्रेम की मर्यादा के विषय में कुछ कहलाना चाहते। 'उन्होंने' कुछ ग़ज़लों की रचना भी खड़ी बोली में की। 'चन्द्रावली' नाटिका में भारतेन्दु ने खड़ी बोली में कविता की रचना प्रयोगात्मक रूप में की, यद्यपि वे उसमें सफल नहीं हो सके। भारतेन्दु ने अपने 'हिन्दी भाषा' शीर्षक निबन्ध में इस विषय का निर्देश भी किया है। उन्होंने खड़ी बोली का एक पद्य लिख कर यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि कविता की भाषा खड़ी बोली नहीं है। वह अवतरण इस प्रकार है :—

"भजन करौ श्री कृष्ण का, मिल कर के सब लोग,
सिद्ध होयगा काम, औ छूटैगा सब सोग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"अब देखिये यह कैसी भौंडी कविता है! मैंने इसका कारण सोचा कि खड़ी बोली में कविता मीठी क्यों नहीं बनती तो मुझको सब से बड़ा कारण जान पड़ा कि इसमें क्रिया इत्यादि में प्रायः दीर्घ मात्रा होती है, इससे कविता अच्छी नहीं बनती। आप लोगों को ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगा कि कविता की भाषा निस्सन्देह ब्रज भाषा ही है और दूसरी भाषाओं की कविता इतना चित्त को नहीं पकड़ती।"[१]

इस प्रकार भारतेन्दु ने कविता की भाषा ब्रज भाषा ही मानी है। भारतेन्दु के समकालीन तथा परवर्ती कवियों ने भी भारतेन्दु के आदर्श को स्वीकार करते हुए ब्रज भाषा ही में पद्य-रचना की। पंडित महावीर-प्रसाद द्विवेदी को यह श्रेय था कि उन्होंने 'सरस्वती' के द्वारा इस बात की यथार्थता सिद्ध की कि गद्य और पद्य दोनों के लिये खड़ी बोली सब प्रकार से उपयुक्त है। उन्होंने 'कवि और कविता' शीर्षक निबन्ध में यह लिखा भी है कि 'जिस बात के कहने में लोग स्वाभाविक रीति पर जैसे और जिस क्रम से शब्द प्रयोग करते हैं वैसे ही कवि को भी करना चाहिये[२]।'

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के नवीन दृष्टिकोण से प्रभावित होकर खड़ी बोली कविता की रूप-रेखा का निर्माण होने लगा। राय देवी-प्रसाद पूर्ण और श्रीधर पाठक ने खड़ी बोली कविता का सूत्रपात नवीन ढंग से करना प्रारम्भ किया। राय देवीप्रसाद पूर्ण ने अपने नाटक 'चन्द्रकला भानुकुमार' में ब्रजभाषा पद्य का ही प्रयोग किया है, यद्यपि वे

१ हिन्दी भाषा—(भारतेन्दु) पृष्ठ ११,(खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर.)१८६०
२ हिन्दी निबन्ध माला (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, १६८७); भाग १

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

खड़ी बोली पद्य की सार्थकता का समर्थन करते हैं। वे खड़ी बोली पद्य के भविष्य में सफल होने की कामना करते हुए कहते हैं:—यद्यपि वे भाषाएँ (प्राकृत–उनमें सबसे अधिक ब्रजभाषा) खड़ी बोली से थोड़ी-बहुत अन्तर रखती हैं, तथापि उन भारतवासियों के लिए जो हिन्दी बोलने वाले प्रान्तों में रहते हैं, वे ही भाषाएँ मातृ-भाषावत् सरल और सुन्दर हैं और बड़े-बड़े कवियों के द्वारा व्यवहृत होते-होते उनमें पद्य-प्रयुक्त होने की विशेष योग्यता आ गयी है। यह योग्यता खड़ी बोली में तब आयेगी जब वह भी पद्य-रचना के लिए समर्थ कवियों के द्वारा व्यवहार के खराद पर चढ़ायी जायगी[१]।"

इसी प्रकार पूर्ण जी ने समस्या पूर्तियों एवम् अपने नाटक में पद्य की भाषा ब्रजभाषा तो रक्खी है, लेकिन स्वदेश कुंडल के ५२ कुंडलिये खड़ी बोली ही में लिखे गये हैं[२]। हिन्दू विश्वविद्यालय डेपुटेशन का स्वागत[३], बसन्त वियोग[४], नवीन सम्वत्सर का स्वागत[५], लखनऊ के पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दी गयी वक्तृता के पद्य[६], ग़ज़ल[७] आदि सभी खड़ी बोली में हैं। कहीं कहीं इस खड़ी बोली में ब्रजभाषापन अवश्य आ गया है।

---

१ चंद्रकला भानुकुमार नाटक (रसिक मंडल, कानपूर १६०४); भूमिका पृष्ठ ६
२ पूर्ण संग्रह, (गंगा पुस्तक माला; लखनऊ १६८२) पृष्ठ २०५-२१६
३ „ पृष्ठ २२०
४ „ „ १२६
५ „ „ २२७
६ „ „ २६२
७ „ „ २३८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पंडित श्रीधर पाठक ने गोल्डस्मिथ के ग्रन्थों के अनुवाद में अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उन्होंने भी खड़ी बोली का प्रयोग पद्य-रचना में किया। राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' की भांति पाठकजी की रचना में भी पूर्ण परिमार्जित शब्दावली नहीं है। पंडित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने पंचम हिन्दी साहित्य सम्मेलन में, सभापति पंडित श्रीधर पाठक के निर्वाचन सम्बन्धी प्रस्ताव का समर्थन करते हुए उनकी कविता की प्रशंसा इस प्रकार की थी:—जिन्होंने आज तक पाठकजी की कविताएँ नहीं पढ़ी हैं, उनसे अनुरोध है कि वह पढ़ें और देखें कि पाठकजी कैसे मधुर कवि हैं! उनकी कविता का कुछ नमूना मैं यहाँ सुनाता हूँ। 'एकान्तवासी योगी' की पहली पंक्ति है:—

सुनिये झाड़खंड वनवासी, दयाशील हे वैरागी!
करके कृपा बता दो मुझको कहाँ जलै है वह आगी?

जो समझते हैं कि यह विशुद्ध खड़ी बोली की कविता है वह भूलते हैं। 'कहाँ जलै है वह आगी' खड़ी बोली नहीं है खड़ी बोली है—"कहाँ जलती है वह आग।" सज्जनों, यह कविता इतनी मधुर इसी से हुई कि इसमें व्रजभाषा की पुट है। अगर यह पुट न होती तो यह कविता संपुट हो जाती (हर्ष ध्वनि)।

"कहाँ जलै है वह आगी" को लेकर दिसम्बर १९१४ और जनवरी फ़रवरी १९१५ के 'भारतमित्र' के अंकों में 'पर्यालोचक' और 'विचारक' में ख़ूब वाग्युद्ध हुआ था जिसमें उक्त पंक्ति को खड़ी बोली या व्रजभाषा की पंक्ति सिद्ध किया गया था। सत्य चाहे जिस ओर हो यह स्पष्ट है कि 'कहाँ जलै है वह आगी' खड़ी बोली का सर्वमान्य रूप नहीं है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पंडित श्रीधर पाठक की कविता में खड़ी बोली अपने अपरिष्कृत रूप में है जिस पर ब्रज-भाषा का प्रभाव स्पष्टतः लक्षित है।

खड़ी बोली कविता का वास्तविक प्रारम्भ श्री मैथिलीशरण गुप्त की कविता से मानना चाहिए। श्री मैथिलीशरण ने हिन्दी गद्य की सुसंस्कृत शब्दावली को क्रियारूप के साथ सरस बना कर पद्य में स्थान दिया। न तो श्री मैथिलीशरण की कविता में भाषा का कोई असंस्कृत रूप है और न ब्रजभाषा का कोई प्रभाव ही। गुप्तजी के इस काव्य के परिमार्जित रूप का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उनके समकालीन कवियों ने भी (जो कभी ब्रजभाषा में लिखते थे) खड़ी बोली की कविता में यथेष्ट परिमार्जन की मात्रा रक्खी। अतः श्री मैथिलीशरण गुप्त विशुद्ध खड़ी बोली के प्रथम कवि हैं। इसलिए यह संग्रह श्री मैथिलीशरण की कविता से प्रारम्भ होता है।

श्री मैथिलीशरण ने जिस भाव-धारा को अपनी कविता में प्रवाहित किया था, वह देश-हित की भावना से पूर्ण थी। उसी से प्रेरित होकर उन्होंने 'भारत-भारती' की रचना की। यह भाव-धारा सम्भवतः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के 'भारत दुर्दशा' या 'भारत जननी' से आयी हुई ज्ञात होती है। हिन्दी कविता में देश-भक्ति की भावना रीतिकाल के बाद सबसे पहले भारतेन्दु जी ने ही अपने नाटकों में रक्खी थी। उसी भावना को श्री मैथिलीशरण ने अपने अध्ययन का आधार देकर सुसंस्कृत किया। इसी लिए श्री मैथिलीशरण ने जिस भाव-धारा का प्रतिनिधित्व किया वह संधि-कालीन धारा है। जिसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और महावीरप्रसाद द्विवेदी दोनों के युग का प्रतिनिधित्व करने वाली भावनाएँ मिली हुई हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सन्धिकालीन धारा में चार कवि आते हैं—सर्व श्री मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी और गोपालशरण सिंह। इस विशिष्ट नामोल्लेख का यह तात्पर्य नहीं कि सन्धिकालीन धारा में इन चार के अतिरिक्त अन्य कवि नहीं हैं। धारा का निरूपण करने के लिए इन चार कवियों को ही चुन लिया गया है। श्री मैथिलीशरण गुप्त ने भाव-जगत का बड़ा विस्तृत क्षेत्र रक्खा। उन्होंने साहित्य के विकसित होते हुए दृष्टिकोण के साथ ही अपनी लेखनी की गति भी सशक्त रक्खी और उन्होंने कभी यह धारणा नहीं बनने दी कि वे समय के पीछे हो गये हैं। अधिकतर उन्होंने राष्ट्रीय भावों को जाग्रत किया है, इसलिए वे राष्ट्रीय कवि माने गये हैं। उन्होंने हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व तो पूर्ण रूप से किया ही है, साथ ही साथ संस्कृति के दृष्टिकोण को कभी धूमिल नहीं होने दिया। इसका सबसे तीव्र उदाहरण 'यशोधरा' में है, जहाँ नारीत्व की महान् मर्यादा उहोंने संसार के संघर्षमय वातावरण में बड़ी गम्भीरता के साथ रक्खी है। 'साकेत' में उन्होंने संस्कृत के महाकाव्य के आदर्शों को अक्षुण्ण रखते हुए उर्मिला के चरित्र को—

"बल हो तो सिन्दूर-विन्दु यह—यह हर-नेत्र निहारो"

के रूप चित्रित कर गौरव से समन्वित कर दिया है। इस प्रकार श्री मैथिलीशरण राष्ट्र की संस्कृति को अधिक से अधिक स्पष्ट करने में प्रयत्न-शील हुए हैं। आधुनिक दृष्टिकोण से धार्मिक कथा-वस्तुओं की विवेचना करते हुए श्री मैथिलीशरण ने धर्म को व्यावहारिकता के रंग से रंजित कर दिया है। पंडित अयोध्यासिंह उपाध्याय ने भी 'प्रिय-प्रवास' में यही दिया है। उनके श्रीकृष्ण 'श्रीमद्भागवत' के ही कृष्ण नहीं हैं जो क्रीड़ा-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विलास में अपनी अलौकिकता का परिचय देते हैं, वरन् वे जाति-सेवी, समाज-सेवी हैं; वे विश्व-बन्धुत्व की भावना से ओतप्रोत हैं। उनके चौपदों का भाव-संसार भी प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है। श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अपने खंड काव्यों में आत्मोत्सर्ग और स्वदेश-प्रेम का जो आदर्श स्थापित किया है वह उनके सन्धिकालीन दृष्टिकोण का परिचायक है। श्री गोपालशरण सिंह ने 'माधवी' में कृष्ण का जो चित्र उपस्थित किया वह प्राचीन परम्परा को लिए हुए भी आधुनिक भावनाओं में कितना नवीन है! श्री कृष्ण के चरित्र को मनोवैज्ञानिक पीठिका पर चित्रित कर कवि ने आज श्री कृष्ण को हमारे जीवन के समीप ला दिया है। 'मानवी' में नारी की रूप-रेखा, मर्यादा की बड़ी सुसंयत सीमा में चित्रित की गई है। इस प्रकार इन चार कवियों की रचना से सन्धिकालीन धारा का परिचय मिलता है जो पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी के आदर्शों से प्रभावित हुई थी।

सन्धि काल में हिन्दी कविता का परिष्करण उस सीमा तक हो गया था कि कवि अपनी मौलिक भावनाओं को आत्मा के रहस्यों की ओर प्रेरित कर दे। वस्तु-स्थिति को गौण मान कर भावनाओं के अन्तरतम प्रदेश का अन्वेषण कवि की प्रतिभा का आवश्यक अंग बन गया। इसी भावना-जगत का स्पष्टीकरण नवीन धारा के कवि 'प्रसाद', 'निराला' और 'पन्त' की रचनाओं में मिला। 'प्रसाद' ने 'आँसू से प्रारम्भ कर 'कामायनी' में हृदय की प्रवृत्तियों का बड़ा सूक्ष्म विश्लेषण किया। उसमें 'प्रसाद' जी के अध्ययन का गाम्भीर्य स्पष्ट रूप से है। जीवन के इसी भाव-गाम्भीर्य में रहस्यवाद का सूत्रपात हुआ है जिसकी सर्व-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रथम अभिव्यक्ति 'प्रसाद' जी की रचनाओं में हुई। श्री 'निराला' ने इसी मनोवैज्ञानिक तत्व को दर्शन की जटिल शृंखलाओं में कस कर भी कलात्मक रूप में हमारे सामने रक्खा। यद्यपि मुक्त-वृत्त की असंयत पदावली हिन्दी की संगीत-प्रिय परंपरा को ग्राह्य नहीं हो सकी तथापि जिस उन्मेष और आवेग से 'निराला' ने काव्य की रेखा खींची वह हिन्दी में अमिट होकर रह गयी। पंडित सुमित्रानन्दनपन्त ने 'निराला' के विपरीत कविता में उत्कृष्ट संगीत की सृष्टि की। उन्होंने भावों को जिस कोमल रूप में देखा, उसी कोमल रूप में उनके शब्द भी सुसज्जित हुए। पन्त की भाव-धारा में संसार की समस्त अभिव्यक्ति बड़े मोहक रूप में उपस्थित हुई। पन्त में 'प्रसाद' और 'निराला' का दर्शन भी संगीत का रूप रख कर आया। पन्त में यदि कोई दोष है तो वह यह कि उनमें जीवन का आवेग नहीं है। उनमें जीवन की वह कोमलता है जो पुरुष में भी शृंगार की भावना लिये हुए है। इसमें सन्देह नहीं कि जो उन्होंने इधर जीवन की वास्तविकता को भी कविता की रेखाओं में बाँधने का प्रयत्न किया है। 'नारी' शीर्षक रचना में उन्होंने यथार्थवाद को सम्यवाद के रूप में चित्रित किया है, किन्तु इस प्रकार की रचना में काव्य का वह रूप प्रस्फुटित नहीं हुआ जो अमर रह सके। उसमें न तो संकेत ही है न और व्यंजना और इन दोनों के बिना कविता की ध्वनि समय की दूर दिशाओं तक जाने में असमर्थ है। अतः भौतिकवाद तभी कविता का अंग हो सकता है जब उसमें चित्रित भावनाओं की ध्वनि व्यंजनात्मक हो। पन्त का इस नवीन दिशा में प्रयास भले ही श्लाघ्य हो, लेकिन कविता के दृष्टिकोण से अभी उसमें परिष्करण

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं हुआ। 'प्रसाद', 'निराला' और 'पन्त' की भावनाओं का संकेत पाकर नवीन धारा के उत्तरकालीन तीन कवि सर्वश्री महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा और भगवतीचरण वर्मा, जीवन में अन्तर्हित रहस्यों को उद्घाटित करने में समर्थ हुए। तीनों का भाव-जगत् स्थूल संसार में भी सूक्ष्म प्रवृत्तियों को खोजने में समर्थ हो सका, यद्यपि तीनों की शैली भिन्न-भिन्न मार्ग के अनुसरण में संलग्न हुई। श्रीमती महादेवी ने पीड़ा की परिधि में अपने समस्त भाव-जगत को बसाया। उन्होंने जीवन के विनाश को जीवन का एक क्रम मानते हुए उसे स्वीकार किया और उसी में आत्मा का निर्वाण पाया। अपने को केन्द्र-विन्दु मानते हुए श्रीमती महादेवी ने अपने आराध्य को परिधि के रूप में खींच लिया है। उन्होंने अपने दोषों के आवरण में ही जीवन को प्रकाशमान करने के उपकरण प्राप्त किये हैं। जलन को अनपवार्य मानकर उन्होंने उसी में शान्ति की कल्पना की है। श्री रामकुमार वर्मा ने संसार की सारहीनता में अपने आराध्य को और भी स्पष्ट पाया है। श्री रामकुमार में रहस्यवाद की भावना विशेष प्रखर है। संकेत उनका साधन है। संसार के मिटने में उन्हें क्षोभ है, रूप के विनाश में उन्हें कष्ट है, लेकिन उसके खँडहरों से वे अपने आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करना चाहते हैं। वस्तुतः महादेवी और रामकुमार के दृष्टिकोण में अधिक भेद नहीं है। दोनों का आदर्श एक ही है, पर महादेवी ने पीड़ा और प्रेम को प्रधान माना है, राजकुमार ने करुणा और रूप को। महादेवी ने अपने आराध्य को स्पष्ट पाया है; राजकुमार ने संकेत में। श्री भगवतीचरण वर्मा ने जीवन का सूक्ष्म तत्व जीवन के उद्वेग में प्राप्त किया है। वे वस्तुवाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

के क़ायल हैं और समस्त भावावेग से वे संसार के चित्र खींचकर एक निष्कर्ष निकालना चाहते हैं। भगवतीचरण में संकेत बिलकुल नहीं है, आध्यात्मक ध्वनि भी नहीं। वे स्पष्टवादी हैं और सम्पूर्ण बल से संसार को समेट कर उसे कुछ तत्वों में केन्द्रीभूत कर देते हैं। भगवतीचरण वर्मा का आदेश ही उनके काव्य का जीवन है। इन तीनों कवियों के बाद इस शैली के अनेक कवि हुए जिन्होंने पूर्वोक्त कवियों के सिद्धान्तों को विविध दृष्टिकोण से पुष्ट किया।

कविता में राष्ट्रीय भावना का जो समावेश भारतेन्दु से हुआ था, उसका स्पष्टीकरण भी आधुनिक कविता में हुआ। जो देश-प्रेम की भावना भारतेन्दु ने उद्भूत की थी, उसका पल्लवित रूप श्री मैथिलीशरण गुप्त की कविता से होता हुआ राष्ट्रीय धारा के कवि सर्वश्री 'एक भारतीय आत्मा,' 'नवीन,' सुभद्राकुमारी और गया प्रसाद शुक्ल की कविता में विशेष प्रकार से आकर्षक हुआ। 'एक भारतीय आत्मा' ने काव्य की आत्मा से राष्ट्रीयता को सम्बद्ध कर एक नवीन शैली का सूत्रपात किया। काव्य के अन्तर्गत रहस्यवाद को उन्होंने देश-प्रेम में परिणत कर दिया। यद्यपि कलात्मक रूप की व्यंजना 'एक भारतीय आत्मा' को रुचिकर नहीं हुई, तथापि वे शब्द-चित्रों के निर्माण से अपने को विरत नहीं कर सके। जनता की भावना तक पहुंचने के लिए उन्होंने भाषा को साधारण ही रक्खा, इससे भी उनकी कलात्मकता की हानि हुई। भाव-चित्रण में 'एक भारतीय आत्मा' सिद्धहस्त हैं। इसी आदर्श का पालन 'नवीन' ने भी किया किन्तु उनमें रहस्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वाद की अपेक्षा भावावेश का प्राधान्य है। साधारण शब्दों में जैसे ज्वालामुखी का अग्नि-प्रवाह है और वह देश-प्रेम की दिशा में प्रवाहित है। 'नवीन' कहीं-कहीं सौन्दर्य की भावना में कोमल हैं, शायद उस वीर की तरह जो युद्ध और अन्तःपुर दोनों स्थलों में उत्साह से पूर्ण है और जीवन के पहलुओं का क़ायल है। श्रीमती सुभद्राकुमारी में स्वाभाविक तेज है जो नारी के आदर्श से मिल कर और भी प्रखर हो गया है। शब्दों में सौकुमार्य है, पर अर्थ में उन्मेष। श्रीमती सुभद्राकुमारी की कविता भी दोनों दिशाओं में है। जहाँ एक ओर वह प्रेम-भावना के सुन्दर चित्र तैयार करती है, दूसरी ओर वह क्षत्राणी की ललकार में प्रति-ध्वनित होती है। श्री गयाप्रसाद शुक्ल 'त्रिशूल' ने अधिकतर राष्ट्रीय कविताएँ लिखी हैं यद्यपि अन्य प्रकार की रचनाओं में भी उनका दृष्टिकोण है। इसीलिए वे 'सनेही' और 'त्रिशूल' दो उपनाम साथ-साथ चला सके। उर्दू और हिन्दी में उन्होंने देश-प्रेम की जो धारा प्रवाहित की, उसमें स्पष्टतः वर्णनात्मकता है। देश-प्रेम की सीधी भावना को उन्होंने सीधे शब्दों में वर्णन करना ही अधिक उचित समझा है, यद्यपि उस सरल शैली में भी जागृति है, उत्साह है और उमंग की अजेय शक्ति। इस प्रकार राष्ट्रीय-धारा के कवियों ने दो चित्र उपस्थित किये हैं—एक शृंगार का और दूसरा वीर का और दोनों में उन्होंने समान रूप से सफल रचनाएँ की हैं।

हिन्दी कविता की मुख्य धाराओं और उनके कवियों का यह संक्षिप्त निरूपण है। इस संग्रह में जो अन्य कवियों के नाम नहीं आ सके हैं, उसका कारण केवल विस्तार-भय ही है, किसी के प्रति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उपेक्षा का भाव नहीं। किसी विशेष धारा में जो कवि साधारण रूप धर सके हैं, उन्हीं की चुनी हुई रचनाओं का यह संग्रह है। इस संग्रह में कुछ कवियों के स्थान पर कुछ अन्य कवि भी आ सकते हैं और कुछ रचनाओं के स्थान पर अन्य रचनाएँ भी रक्खी जा सकती हैं। पर यह तो रुचि-भेद है, अतः हम इस संग्रह को प्रस्तुत करते हुए आशा करते हैं कि इससे हिन्दी के विद्यार्थियों और कविता के जिज्ञासुओं को हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों को समझने में सहायता मिलेगी।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

द्वितीय संस्करण की भूमिका

हिन्दी विद्यार्थियों तथा विद्वानों के प्रति हम कृतज्ञ हैं कि इस पुस्तक के तीसरे संस्करण का अवसर प्राप्त हुआ। इस संस्करण में कुछ परिवर्तन और संशोधन करना आवश्यक हो गया। पुस्तक के प्रथम संस्करण से इस समय तक हिन्दी कविता में यथेष्ट प्रगति हुई है और आधुनिक हिन्दी काव्य में उस प्रगति का समावेश होना चाहिए। विशेषकर जब यह पुस्तक विश्वविद्यालय में पाठ्य पुस्तक के रूप में निर्धारित है तब विद्यार्थियों को कविता की आधुनिक प्रगति से पूर्ण परिचित होना चाहिए।

इस संस्करण में नवीन धारा (उत्तर) के उपरान्त मध्य धारा का भी समावेश कर दिया गया है। इसे मध्य धारा का नाम इसलिए दिया गया है कि इस धारा के कवियों ने नवीन-धारा (उत्तर) के कवियों की विचार-धारा के साथ ही हिन्दी की अन्य प्रवृत्तियों का समावेश भी अपने काव्य में किया है। इस धारा में तीन कवि रक्खे गये हैं—सर्व श्री सियारामशरण गुप्त, हरिवंशराय 'बच्चन' और उदयशङ्कर भट्ट। श्री सियारामशरण गुप्त ने रहस्यात्मक भावनाओं के साथ ही अपने काव्य में कथा-साहित्य की सृष्टि करते हुए सामाजिक रूढ़ियों को नष्ट करने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चेष्टा की है। उनके सामने 'वीर-पूजा' की भावना भी प्रमुख रूप में है। 'बापू' पर उन्होंने एक स्वतन्त्र काव्य लिखा है जो अन्य किसी कवि द्वारा 'वीर-पूजा' की भावना से नहीं लिखा गया। साथ ही सामयिक घटनाओं पर भी उनकी दृष्टि चली जाती है। इस प्रकार संकेत के साथ उनके सामने वस्तुवाद का नग्न सत्य भी उपस्थित होता है जिस कारण वे मध्यधारा के प्रथम कवि माने जा सकते हैं।

श्री हरवंश राय 'बच्चन' ने रहस्यवादी भावान्वेषण के साथ ही साथ अपने जीवन की विषमताओं का स्पष्ट चित्रण किया है। 'मधुशाला' में खैयाम की व्यंजना का आधार लेते हुए उन्होंने जीवन के अनेक तथ्यों का अन्वेषण किया है। साथ ही 'मधुशाला' के बाद की रचनाओं में उन्होंने प्रकृति का आश्रय लेते हुए जीवन की विकलताओं और भावनाओं की प्रतिक्रियाओं का अत्यंत स्पष्ट शब्दों में चित्रण किया है। परिस्थितियों में संघर्षशील प्रवृत्ति का उन्होंने बड़ा ही सुन्दर निर्देश किया है। उनकी सब-से बड़ी कमी यही रही कि कविताओं में वे भारतीय संस्कृति की छाप नहीं ला सके जो श्री सियारामशरण गुप्त सरलता से उपस्थित कर सके हैं।

श्री उदयशङ्कर भट्ट बड़े अशान्त कवि हैं। उनकी रचनाओं में विद्रोह की ऐसी प्रखर ज्वाला है कि उनकी काव्य-चेतना में अशान्ति का वातावरण उपस्थित कर देती है। यों उनकी रचनाओं में प्रायः वही पृष्ठ-भूमि है जो नवीन धारा (उत्तर) के कवियों में वर्तमान है। वे प्रकृति का चित्रण भी प्रायः नवीन धारा के कवियों की भाँति ही करते है किन्तु विद्रोह-भावना के कारण उनके चित्र विकृत हो जाते हैं। उनकी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

काव्य-धारा साहित्यिक मर्यादाओं का अतिक्रमण करती हुई फूट निकलती है। उनकी रचनाओं में आधुनिक अशान्ति के चित्र विशेष रूप से मिलते हैं। यद्यपि वे आधुनिक अर्थ में 'प्रगतिशील' कवि नहीं बन पाये हैं किन्तु किसान और मज़दूर के संतापों से वे अवश्य अशान्त और व्यथित हो उठे हैं। साहित्य की मध्ययुगीन छाप लेकर भी वे वर्तमान परिस्थितियों से आक्रान्त हैं। इस प्रकार वे मध्यधारा के तीसरे कवि हैं।

इस संस्करण में राष्ट्रीय धारा के अन्तर्गत थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया गया है। श्री गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के स्थान पर श्रीरामधारी सिंह 'दिनकर' की रचानएँ रख दी गई हैं। श्री गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की राष्ट्रीय भाव-धारा का साहित्य में स्थान अवश्य है किन्तु आधुनिक काव्य के विकास में उस भाव-धारा को हम इतिहास की वस्तु मानने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इधर श्री 'दिनकर' ने राष्ट्रीयता के क्षेत्र में सुन्दर कविताओं की रचना की है। अतः विस्तार भय से श्री 'सनेही' के स्थान पर श्री 'दिनकर' की कविताएँ रख दी गई हैं। श्री 'दिनकर' ने राष्ट्रीयता का दृष्टिकोण अत्यन्त सांस्कृतिक ढंग से ग्रहण किया है। एक ओर जहाँ उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं को सजीव बनाते हुए हमारे प्राणों में उत्साह की जाग्रति की है, वहाँ उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों से—वर्तमान विवशताओं से—संघर्ष लेने की हुँकार भी प्रतिध्वनित की है। वे ऐसे राष्ट्रीय कवि हैं जिन्होंने अपने देश की प्रत्येक स्थिति की जानकारी रखते हुए स्वतन्त्रता के क्षेत्र में आगे बढ़ने की उमंग उत्पन्न की है। इसीलिए इस संस्करण में उनकी रचनाओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को स्थान दिया गया है। इसके साथ ही श्री 'सनेही' जी की रचनाओं के प्रति हम श्रद्धावनत होते हुए उनकी रचनाओं को अन्य संग्रहों में स्थान देना उचित समझते हैं।

हम अपने कवि-मित्रों के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हैं जिन्होंने मुक्त हृदय से अपनी रचनाओं को इस संग्रह में सम्मिलित करने की अनुमति प्रदान की। उनकी अनुमति प्राप्त करके ही हम यह अवसर प्राप्त कर सके कि विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को आधुनिक काव्य प्रगति में उनकी रचनाओं के वास्तविक महत्व और मूल्य का ज्ञान दे सकें।

आशा है, 'आधुनिक हिन्दी काव्य' के इस परिवर्द्धित और संशोधित संस्करण से कविता प्रेमी पाठकों, विद्यार्थियों और विद्वानों की सुरुचि को पूर्ण सन्तोष होगा।

धीरेन्द्र वर्मा
रामकुमार वर्मा

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विषय-सूची

सन्धि-कालीन धारा

	पृष्ठ
१—श्री मैथिली शरण गुप्त	१
आँख मिचौनी	५
उर्मिला की विरह-व्यथा	६
कैकेयी का परिताप	९
यशोधरा	१७
परीक्षा	१९
गोपी	२१
नहुष का पतन	३३
कुणाल गीत	३७
श्री मैथिलीशरण गुप्त के ग्रन्थ	३९
२—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय	४०
प्रिय-प्रवास	४२
आँख	५१
बेचारा बाप	५२
समय का फेर	५५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भाव-भक्ति ५८
स्वर्ग ६२
आश्रम में सीता ६६
श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय के ग्रन्थ ७२
३—श्री रामनरेश त्रिपाठी ७३
पथिक का आत्मचिन्तन ७६
स्वगत ८१
पश्चात्ताप ९०
पुष्प-विकास ९०
आकांक्षा ९१
अन्वेषण ९१
श्री रामनरेश त्रिपाठी के ग्रन्थ ९४
४—श्री गोपाल शरणसिंह ९५
नन्दलाल ९६
शिशु १००
चाँदनी १०३
परदे में १०७
अकेला ११२
जीने की अभिलाषा ११३
सागरिका ११३
श्री गोपालशरणसिंह के ग्रन्थ ११४

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नवीन धारा (पूर्व)

१—श्री जयशंकर 'प्रसाद' ११७
गीत ११६
लहर ११६
स्मृति १२१
शिल्प-सौन्दर्य १२५
खोलो द्वार १२८
इड़ा १२६
श्री जयशङ्कर 'प्रसाद' के ग्रन्थ १३३

२—श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' १३५
बादल-राग १३८
जागो फिर एक बार १३६
तुम और मैं १४२
गीति १४४
राम की शक्ति-पूजा १४७
आत्म-बोध १५०
तुम्हें चाहता वह भी सुन्दर १५३
कुकुरमुत्ता १५४
गर्म पकौड़ी १५८
श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के ग्रन्थ १५६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

३—सुमित्रानन्दन पन्त १६१
मौन निमन्त्रण १६३
गुञ्जन १६६
मधुवन १६७
एक तारा १६९
बापू के प्रति १७१
भारतमाता १७८
चमारों का नाच १८०
श्री सुमित्रानन्दन पन्त के ग्रन्थ १८३

नवीन धारा (उत्तर)

१—श्रीमती महादेवी वर्मा १८७
मेरा राज्य १८९
प्रतीक्षा १९३
रश्मि १९५
उलझन १९७
गीत १९९
सान्ध्य गीत २०३
दीपशिखा २०६
श्रीमती महादेवी वर्मा के ग्रन्थ २१३
२—श्रीरामकुमार वर्मा २१४
ये गजरे तारों वाले २१६
समय शान्त है २१७

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यात्रा का अन्त	२१८
अशान्त	२१६
कंकाल	२२२
गीत	२२७
यह तुम्हारा हास आया	२३१
परिचय	२३२
किरण-कण	२३३
जिज्ञासा	२३४
प्रार्थना	२३५
चट्टान	२३६
साधना-संगीत	२४०
विरह	२४१
विश्ववंद्य बापू	२४२
श्री रामकुमार वर्मा के ग्रन्थ	२४४
३—श्री भगवतीचरण वर्मा	२४५
मेरी आग	२४७
नूरजहाँ की क़ब्र पर	२४६
गीत	२६०
भैंसा गाड़ी	२६७
राजा साहब का वायुयान	२७३
श्री भगवती चरण वर्मा के ग्रन्थ	२७६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

३—सुमित्रानन्दन पन्त १६१

मौन निमन्त्रण १६३

गुञ्जन १६६

मधुवन १६७

एक तारा १६६

बापू के प्रति १७१

भारतमाता १७८

चमारों का नाच १८०

श्री सुमित्रानन्दन पन्त के ग्रन्थ १८३

नवीन धारा (उत्तर)

१—श्रीमती महादेवी वर्मा १८७

मेरा राज्य १८६

प्रतीक्षा १६३

रश्मि १६५

उलझन १६७

गीत १६६

सान्ध्य गीत २०३

दीपशिखा २०६

श्रीमती महादेवी वर्मा के ग्रन्थ २१३

२—श्रीरामकुमार वर्मा २१४

ये गजरे तारों वाले २१६

समय शान्त है २१७

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यात्रा का अन्त	२१८
अशान्त	२१६
कंकाल	२२२
गीत	२२७
यह तुम्हारा हास आया	२३१
परिचय	२३२
किरण-कण	२३३
जिज्ञासा	२३४
प्रार्थना	२३५
चट्टान	२३६
साधना-संगीत	२४०
विरह	२४१
विश्ववंद्य बापू	२४२
श्री रामकुमार वर्मा के ग्रन्थ	२४४
३—श्री भगवतीचरण वर्मा	२४५
मेरी आग	२४७
नूरजहाँ की क़ब्र पर	२४६
गीत	२६०
भैंसा गाड़ी	२६७
राजा साहब का वायुयान	२७३
श्री भगवती चरण वर्मा के ग्रन्थ	२७६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मध्य धारा

१—श्री सियारामशरण गुप्त २८३
घट २८५
ग्वालिनें २८७
पूजन २९०
एक फूल की चाह २९१
बापू ३०५
विकलाङ्ग ३०८
श्री सियारामशरण गुप्त के ग्रन्थ ३०९
२—श्री हरिवंश राय 'बच्चन' ३१०
मधुशाला ३१२
प्याला ३१६
रात आधी हो गई है ३२६
बीते दिन कब आने वाले ३२७
अब मत मेरा निर्माण करो ३२८
मुझे पुकार लो ३२९
तुम गा दो ३३१
श्री हरिवंश राय 'बच्चन' के ग्रन्थ ३३३
३—श्री उदयशंकर भट्ट ३३५
मैं पथिक अवरुद्ध पथ ३३७
युग-युग का मेरा रुद्ध मौन ३४१
मेघ-गीत ३४२

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लुई सुई और शॅकाई ३४३

जीवन ३५४

सावन गीत ३५५

रात की गोद में ३५६

श्री उदयशंकर भट्ट के ग्रन्थ ३६१

राष्ट्रीय धारा

१—श्री माखनलाल चतुर्वेदी ३६५

कुञ्ज कुटीरे यमुना तीरे ३६७

पुष्प की अभिलाषा ३६६

खीझमयी मनुहार ३७०

वेदना गीत से ३७०

क़ैदी और कोकिला ३७३

उन्मूलित वृक्ष ३७७

जवानी ३७६

घर मेरा है ३८३

हिमकिरीटिनी ३८५

श्री माखनलाल चतुर्वेदी के ग्रन्थ ३६१

२—श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ३६३

विप्लव गायन ३६५

नंगे भूखों का यह गाना ३६७

कब मिलेंगे ध्रुव चरण वे ४०८

कुहू की बात ४०६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सजन मेरे सो रहे हैं ४१०
लिख विरह के गान ४१२
हिय-रार मेरी ४१४
श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के ग्रन्थ ४१५

३—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ४१७

झाँसी की रानी ४१६
विजयादशमी ४२८
मातृ-मन्दिर में ४३०
समर्पण ४३२
वीरों का कैसा हो वसन्त ४३३
श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान के ग्रन्थ ४३५

४—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ४३६

कविता की पुकार ४३८
पाटलिपुत्र की गंगा से ४४१
बोधिसत्व ४४६
दिगम्बरि ४४८
हिमालय के प्रति ४५२
प्रतीक्षा ४५७
श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के ग्रन्थ ४५८

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सन्धि कालीन धारा

श्री मैथिली शरण गुप्त

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय

श्री रामनरेश त्रिपाठी

श्री गोपाल शरण सिंह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राजकीय संस्कृत महाविद्या

आधुनिक हिन्दी काव्य

श्री मैथिलीशरण गुप्त

श्री मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्हें सम्वत् १९९३ में 'साकेत' ग्रन्थ पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया था। हिन्दी साहित्य संसार ने उनका सम्मान 'गुप्त जयन्ती' मनाकर और 'मैथिली-मान-ग्रन्थ' समर्पित कर किया था। ये द्विवेदी काल के कवि हैं और उसी समय से अपनी कविता का परिमार्जन और संस्करण करते चले आ रहे हैं। यद्यपि बाबू मैथिलीशरण उपन्यासकार या कहानी लेखक नहीं हैं, तथापि उनकी कविता का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उन्होंने धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, राष्ट्रीय और साहित्यिक कृतियाँ हिन्दी संसार को दी हैं। 'चन्द्रहास' या 'तिलोत्तमा' जैसे नाटक भी लिखे हैं, पर चरित्रों के संग्रह में असफलता पाने के कारण वे नाटककार के रूप में अधिक प्रसिद्ध नहीं हो सके। ये नाटक पौराणिक ही हैं, कथा के विकास में उनकी कल्पना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सहायक नहीं हुई। वे कथा को उसी रूप में अपने काव्य की पुट मिलाकर रख देते हैं। धार्मिक रचनाओं में 'हिन्दू', 'तेग बहादुर' आदि रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। इन रचनाओं में ये राष्ट्रीय भी हो गये हैं और हमारे सामने हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि कवि के रूप में भी आये हैं।

पहले पहल 'रंग में भंग', 'भारत भारती' और 'जयद्रथ बध' में हमें कवि का परिचय मिला। 'रंग में भंग' एक ऐतिहासिक वृत्त है जिसमें वर्णनात्मकता अधिक है। 'भारत भारती' ने हमें कवि की राष्ट्रीयता के बहुत निकट ला दिया। उन्होंने भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य के चित्र स्पष्टता और काव्य-कौशल से खींचे। इसी ग्रन्थ ने कवि को लोक-प्रियता प्रदान की। अपने समय में 'भारत भारती' की रचना से हिन्दी साहित्य आलोकित हो उठा था। 'जयद्रथ बध' में अभिमन्यु का शौर्य और उत्तरा का विलाप वर्णित है। यह एक खंड काव्य है। वीर और करुणा—दो विपरीत रस—स्थान-स्थान पर अद्वितीय रूप में हैं। करुण रस तो मानो उत्तरा के आँसुओं से ही लिखा गया है। उसने हिन्दी के न जाने कितने पाठकों की आँखों से आँसू बहा दिये हैं।

साहित्य की प्रगति में गुप्त जी ने पूरा योग दिया है। कविता की आधुनिक प्रगति में भी वे पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने 'झंकार' नामक कविता-ग्रन्थ में छायावाद की भावना को बहुत स्पष्ट कर दिया है। उसमें भी 'अनन्त' के लिए आसक्ति है। पर गुप्त जी का यह 'अनन्त' उपनिषदों का ब्रह्म है और वे उसे पाने के प्रयत्न की परिधि भौतिकवाद

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

के विन्दु से खींचते हैं। वर्तमान कविता का दृष्टिकोण वे सफलता-पूर्वक रखने में समर्थ हो सके हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

उन्होंने धार्मिक ग्रन्थों में 'साकेत' और द्वापर की रचना कर अपनी मौलिकता प्रदर्शित की है। 'साकेत' में गुप्त जी ने कैकेयी और उर्मिला के चित्रण में अपनी प्रतिमा का चमत्कार दिखलाया है। 'द्वापर' में उन्होंने कृष्ण-चरित्र के प्रत्येक पात्र की रूप-रेखा खींचकर भ्रमरगीत को नवीन रूप से लिखा है।

'यशोधरा' एक ऐतिहासिक वृत्त है। सिद्धार्थ के गृह-त्याग पर उनकी पत्नी यशोधरा के स्त्री-हृदय का चित्रण अद्वितीय है।

अबला जीवन, हाय! तुम्हारी यही कहानी—
आँचल में है दूध, और आँखों में पानी।

के सिद्धान्त पर ही इसकी रचना हुई है। हृदय के चित्रण में 'यशोधरा' का विशेष स्थान है। सं० १९९४ में प्रकाशित 'मंगल घट' में उनकी पुरानी कविताएँ संग्रहीत हैं जिनमें से अधिकांश पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित 'कविता कलाप' में प्रकाशित हो चुकी थीं।

सम्वत् १९९७ में श्री गुप्तजी ने 'नहुष' की रचना की। यह काव्य पौराणिक इतिवृत्त का आधार लेकर भी आधुनिक युग का सन्देश-वाहक क्रांतिदूत है। पतन में भी मानवता कितने ऊपर उठ सकती है, इसका चित्र 'नहुष' के पृष्ठों में है। सम्वत् १९९९ में गुप्तजी के चार ग्रन्थ प्रकाशित हुए; 'कुणाल गीत', 'अर्जन और विसर्जन', 'विश्व-वेदना तथा 'काबा और कर्बला'। इनमें भावोत्कृष्टता की दृष्टि से 'कुणाल गीत'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सर्वोत्कृष्ट है। इसमें व्यथित हृदय के उद्गारों को बड़ी मनोरम कलात्मकता प्रदान की गई है।

अरी भावती, भामिनी !
मेरी कांचन कामिनी !

जैसे गीत भावना के क्षेत्र में अमर हैं। इसमें नारी-विज्ञान की भी यत्र-तत्र बड़ी सुन्दर झलक है। "काबा और कर्बला" में कवि ने इस्लाम धर्म के विकास को बड़ी सहानुभूति के साथ चित्रित किया है। मुहम्मद साहब के व्यक्तित्व और इमाम हुसैन के चरित्र चित्रण में मानवता के गांभीर्य को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसके द्वारा कवि ने साम्प्रदायिकता का नहीं, विश्व-मैत्री का सन्देश दिया है। 'अर्जन और विसर्जन' में इउडोसिया और मूर-महिषी काहिना का प्रोज्ज्वल चरित्र चित्रित किया गया है। 'विश्व-वेदना' में पिछले महायुद्ध और वर्तमान युद्ध में मानवता के त्रास के कुछ हृदयग्राही चित्र हैं। 'काबा और कर्बला', 'अर्जन और विसर्जन' एवं 'विश्व-वेदना' में वर्णनात्मकता ही प्रधान हैं। सम्भवतः ये रचनाएँ कवि के विश्राम-क्षणों की कृतियाँ हैं जिनमें वह आप बीती और जगबीती अधिक कहता है।

मैथिलीशरण गुप्त की प्रतिभा हिन्दी में अद्वितीय है। वे अब भी उतने ही नवीन हैं, जितने तीस वर्ष पहले थे।

११ अगस्त १९४५ को साठ वर्ष की समाप्ति पर महाकवि की स्वर्ण-जयन्ती मनाई गई है।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आँख मिचौनी

अच्छी आँख - मिचौनी खेली,
बार बार तुम छिपो और मैं
खोजूँ तुम्हें अकेली।

किसी शान्त एकान्त कुंज में,
तुम जाकर सो जाओ;
भटकूँ इधर उधर मैं, इसमें
क्या रस है बतलाओ?

यदि मैं छिपूँ और तुम खोजो,
अनायास ही पाओ,
कहाँ नहीं तुम जहाँ छिपूँ मैं,
जाने भी दो—आओ।

करें बैठ रँग रेली।
अच्छी आँख-मिचौनी खेली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर जब तुम हो सभी कहीं, तब,
मैं ही क्यों यों भटकूँ,
चाहूँ जिधर उधर ही अपना
भार पटक कर सटकूँ;

इसकी भी क्या आवश्यकता
जो बाहर पर अटकूँ,
अन्तर के ही अन्धकार में
क्यों न पीत पट झटकूँ ?

बन अपनी ही चेली।
अच्छी आँख मिचौनी खेली।

उर्मिला की विरह-व्यथा

वेदने, तू भी भली बनी,

पायी मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी।
नयी किरण छोड़ी है तूने, तू वह हीर-कनी,
सजग रहूँ मैं; साल हृदय में, ओ प्रिय-विशिख-अनी!
ठंडी होगी देह न मेरी, रहे दृगम्बु-सनी,
तू ही उष्ण उसे रक्खेगी मेरी तपन-मनी!

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आ, अभाव की एक आत्मजे, और अदृष्टि-जनी !
तेरी ही छाती है सचमुच उपमोचितस्तनी !
अरी वियोग-समाधि, अनोखी, तू क्या ठीक ठनी,
अपने को, प्रिय को, जगती को, देखूँ खिंची-तनी ।
मन-सा मानिक मुझे मिला है तुझमें उपल-खनी,
तुझे तभी त्यागूँ जब सजनी, पाऊँ प्राण-धनी ।

———

कहती मैं, चातकि, फिर बोल
ये खारी आँसू की बूँदें दे सकतीं यदि मोल !
कर सकते हैं क्या मोती भी उन बोलों की तोल ?
फिर भी, फिर भी, इस झाड़ी के झुरपुट में रस घोल,
श्रुति-पुट लेकर पूर्व स्मृतियाँ खड़ीं यहाँ पट खोल,
देख, आप ही अरुण हुए हैं उनके पाण्डु कपोल !
जाग उठे हैं मेरे सौ-सौ स्वप्न स्वयम् हिल-डोल,
और सन्न हो रहे, सो रहे, ये भूगोल-खगोल ।
न कर वेदना-सुख से वंचित, बढ़ा हृदय-हिन्दोल,
जो तेरे सुर में सो मेरे उर में कल-कल्लोल !

———

निरख सखी, ये खंजन आये,
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये !
फैला उनके तन का आतप, मन-से सर सरसाये,
घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुसकाये,
फूल उठे हैं कमल, अधर-से ये बन्धूक सुहाये !
स्वागत ! स्वागत शरद ! भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नभ ने मोती वारे लो, ये-अश्रु अर्घ्य भर लाये !

———

शिशिर, न फिर, गिरि-वन में,
जितना माँगे, पतझड़ दूँगी मैं इस निज नन्दन में,
कितना कम्पन तुझे चाहिए, ले मेरे इस तन में,
सखी कह रही, पाण्डुरता का क्या अभाव आनन में ?
वीर, जमा दे नयन-नीर यदि तू मानस-भाजन में,
तो मोती-सा मैं अकिंचना रक्खूँ उसको मन में,
हँसी गयी, रो भी न सकूँ मैं—अपने इस जीवन में,
तो उत्कण्ठा है, देखूँ फिर क्या हो भाव-भुवन में।

———

मुझे फूल मत मारो,
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत, मदन पटु, तुम कटु गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो श्रम परिहारो।
नहीं भोगनी यह मैं कोई जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर-विन्दु यह—यह हर-नेत्र निहारो।
रूप-दर्प कन्दर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण-धूलि उस रति के सिर पर धारो !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यही आता है इस मन में,
छोड़ धाम-धन जाकर मैं भी रहूँ उसी वन में।
प्रिय के व्रत में विघ्न न डालूँ रहूँ निकट भी दूर,
व्यथा रहे, पर साथ साथ ही समाधान भरपूर।
हर्ष डूबा हो रोदन में,
यही आता है इस मन में,
बीच-बीच में उन्हें देख लूँ मैं झुरमुट की ओट,
जब वे निकल जायँ तब लेटूँ उसी धूल में लोट।
रहें रत वे निज साधन में,
यही आता है इस मन में।
जाती-जाती, गाती-गाती, कह जाऊँ यह बात—
धन के पीछे जन, जगती में उचित नहीं उत्पात।
प्रेम की ही जय जीवन में,
यही आता है इस मन में;

कैकेयी का परिताप

तदनन्तर बैठी सभा उटज के आगे,
नीले वितान के तले दीप बहु जागे,
टकटकी लगाये नयन सुरों के थे वे,
परिणामोत्सुक उन भयातुरों के थे वे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उत्फुल्ल, करौंदी-कुंज वायु रह-रह कर,
करती थी सबको पुलक-पूर्ण मह मह कर।
वह चन्द्रलोक था कहाँ चाँदनी वैसी?
प्रभु बोले गिरा गँभीर नीर-निधि जैसी;

"हे भरत भद्र, अब कहे अभीप्सित अपना,"
सब सजग हो गये भङ्ग हुआ ज्यों सपना।
"हे आर्य, रहा क्या भरत अभीप्सित अब भी?
मिल गया अकंटक राज्य उसे जब, तब भी?
पाया तुमने तरु-तले अरण्य-बसेरा,
रह गया अभीप्सित शेष तदपि क्या मेरा?
तनु तड़प-तड़प कर तप्त तात ने त्यागा,
क्या रहा अभीप्सित और तथापि अभागा?
हा! इसी अयश के हेतु जनन था मेरा,
निज जननी ही के हाथ हनन था मेरा!
अब कौन अभीप्सित और आर्य वह किसका?
संसार नष्ट है भ्रष्ट हुआ घर जिसका।
मुझ से मैंने ही आज स्वयम् मुँह फेरा,
हे आर्य, बता दो तुम्हीं अभीप्सित मेरा?"
प्रभु ने भाई को पकड़ हृदय पर खींचा,
रोदन-जल से सविनोद उन्हें फिर सींचा,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उस के आशय की थाह मिलेगी किसको,
"जन कर जननी ही जान न पायी जिसको?"
"यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को",
चौंके सब सुन कर अटल-कैकयी स्वर को।
सब ने रानी की ओर अचानक देखा,
वैधव्य-तुषारावृता यथा विधु-लेखा,
बैठी थी अचल तथापि असंख्य तरंगा,
वह सिंही अब थी, हहा! गोमुखी गंगा —
"हाँ, जन कर भी मैंने न भरत को जाना,
सब सुन लें तुमने स्वयम् अभी यह माना,
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया।
अपराधिन मैं हूँ तात, तुम्हारी मैया।
दुर्बलता का ही चिन्ह-विशेष शपथ है,
पर, अबलाजन के लिए कौन-सा पथ है?
यदि मैं उकसायी गयी भरत से होऊँ,
तो पति समान ही स्वयम् पुत्र भी खोऊँ।
ठहरो; मत रोको मुझे—कहूँ सो सुन लो—
पाओ यदि उसमें सार, उसे सब चुन लो।
करके पहाड़-सा पाप मौन रह जाऊँ?
राई भर भी अनुताप न करने पाऊँ?"
थी सनक्षत्र शशि-निशा ओस टपकाती,
रोती थी नीरव सभा हृदय थपकाती,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उल्का-सी रानी, दिशा दीप्त करती थी ;
सब में भय, विस्मय, और खेद भरती थी।
"क्या कर सकती थी मरी मन्थरा दासी ?
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी।
जल, पंजर-गत अब, अरे अधीर अभागे
वे ज्वलित भाव थे स्वयम् तुझी में जागे,
पर था केवल क्या ज्वलित भाव ही मन में ?
क्या शेष बचा था कुछ न और इस जन में ?
कुछ मूल्य नहीं वात्सल्यमात्र क्या तेरा ?
पर आज अन्य-सा हुआ वत्स भी मेरा !
थूके मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों चूके !
छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे,
रे राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे !
कहते आते थे यही अभी नर-देही,
'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।'
अब कहें सभी यह हाय ! विरुद्ध विधाता,
'है पुत्र पुत्र ही, रहें कुमाता माता।'
बस मैंने इसका बाह्य मात्र ही देखा,
दृढ़ हृदय न देखा, मृदुल गात्र ही देखा ;
परमार्थ न देखा, पूर्ण स्वार्थ ही साधा,
इस कारण ही तो हाय ; आज यह बाधा !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी—
'रघुकुल में भी थी एक अभागी रानी!'
निज जन्म-जन्म में सुने जीव यह मेरा—
'धिक्कार उसे था महास्वार्थ ने घेरा।
"सौ बार धन्य वह एक लाख की माई,
जिस जननी ने है जना भरत-सा भाई।"
पागल-सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई—
'सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"
"हा लाल! उसे भी आज गंवाया मैंने,
विकराल कुयश ही यहाँ कमाया मैंने,
निज स्वर्ग उसी पर वार दिया था मैंने,
हर तुम तक से अधिकार लिया था मैंने,
पर वही आज यह दीन हुआ रोता है,
शंकित सब से धृत हरिण-तुल्य होता है।
श्रीखंड आज अंगार-चंड है मेरा,
फिर इससे बढ़ कर कौन दंड है मेरा?
पटके मैंने पद-पाणि मोह के नद में,
जन क्या क्या करते नहीं स्वप्न में, मद में?
हा! दंड कौन? क्या उसे डरूँगी अब भी?
मेरा विचार कुछ दयापूर्ण हो तब भी,
हा दया! हन्त! वह घृणा! अहह वह करुणा!
वैतरणी-सी हैं आज जाह्नवी-वरुणा!!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सह सकती हूँ चिर नरक, सुनें सुविचारी,
पर मुझे स्वर्ग की दया दंड से भारी।
लेकर अपना यह कुलिश कठोर कलेजा,
मैंने इसके ही लिए तुम्हें बन भेजा।
घर चलो इसी के लिए, न रूठो अब यों,
कुछ और कहूँ तो उसे सुनेंगे सब क्यों ?
मुझको यह प्यारा और इसे तुम प्यारे,
मेरे दुगुने प्रिय रहो न मुझ से न्यारे।
मैं इसे न जानूँ, किन्तु जानते हो तुम
अपने से पहले इसे मानते हो तुम,
तुम भ्राताओं का प्रेम परस्पर जैसा,
यदि वह सब पर यों प्रकट हुआ है वैसा।
तो पाप-दोष भी पुन्य-दोष है मेरा,
मैं रहूँ पंकिला, पद्म-कोष है मेरा।
आगत ज्ञानी जन, उच्च भाल ले ले कर
समझावें तुमको अतुल युक्तियाँ देकर,
मेरे तो एक अधीर हृदय है बेटा,
उसने फिर तुमको आज भुजा भर भेटा,
देवों की ही चिरकाल नहीं चलती है;
दैत्यों की भी दुर्वृत्ति यहाँ फलती है।'
हँस पड़े कैकयी-कथन देव यों सुन कर,
रो दिया क्षुब्ध दुर्दैव दैत्य सिर धुन कर;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"छल किया भाग्य ने मुझे अयश देने का,
बल दिया उसी ने भूल मान लेने का,
अब कटे सभी वे पाश नाश के प्रेरे,
मैं वही कैकयी, वही राम तुम मेरे।
होने पर बहुधा अर्ध रात्रि अन्धेरी,
जीजी आकर करती पुकार थी मेरी –
'लो कुहकिनि, अपना कुहक, राम यह जागा,
निज मँझली माँ का स्वप्न देख उठ भागा!'
भ्रम हुआ भरत पर मुझे व्यर्थ संशय का
प्रतिहिंसा ने ले लिया स्थान तब भय का।
तुम पर भी ऐसी भ्रान्ति भरत से पाती,
तो उसे मनाने भी न यहाँ मैं आती।
जीजी ही आतीं—किन्तु कौन मानेगा?
जो अन्तर्यामी, वही इसे जानेगा।"
"हे अम्ब, तुम्हारा राम जानता है सब,
इस कारण वह कुछ खेद मानता है कब?"
"क्या स्वाभिमान रखती न कैकयी रानी?
बतला दे कोई मुझे उच्चकुल मानी।
सहती कोई अपमान तुम्हारा अम्बा?
पर हाय, आज वह हुई निपट नालम्बा।
मैं सहज मानिनी रही, वही क्षत्राणी,
इस कारण सीखी नहीं दैन्य यह वाणी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर महादीन हो गया आज मन मेरा,
भावज्ञ, सहे जो तुम्हीं भाव-धन मेरा।
समुचित ही मुझको विश्व-घृणा ने घेरा,
समझाता कौन सशान्ति मुझे, भ्रम मेरा ?
यों ही तुम वन को गये, देव सुरपुर को,
मैं बैठी ही रह गयी लिये इस उर को ?
बुझ गयी पिता की चिता भरत भुज-धारी,
पितृ-भूमि आज भी तप्त तथापि तुम्हारी।
भय और शोक सब दूर उड़ाओ उसका,
चलकर सुचरित, फिर हृदय जुड़ाओ उसका,
हो तुम्हीं भरत के राज्य, स्वराज्य सम्हालो,
मैं पाल सकी न स्वधर्म, उसे तुम पालो।
स्वामी को जीते जी न दे सकी सुख मैं,
मर कर तो उसको दिखा सकूँ यह मुख मैं।
मर मिटना भी है एक हमारी क्रीड़ा;
पर भरत-वाक्य है—सहूँ विश्व की व्रीड़ा।
जीवन-नाटक का अन्त कठिन है मेरा,
प्रस्ताव-मात्र में जहाँ अधैर्य अँधेरा।
अनुशासन ही था मुझे अभी तक आता,
करती है तुमसे विनय आज यह माता।"

(साकेत से)

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यशोधरा

सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।

सखि, वे मुझसे कह कर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते?
मुझको बहुत उन्होंने माना,
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना,
जो वे मन में लाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

स्वयम् सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को, प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में—
क्षात्र-धर्म के नाते।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किस पर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रहें स्मरण ही आते ।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते;
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गये तरस ही खाते ।
सखि; वे मुझसे कह कर जाते ।
जाँय; सिद्धि पावें वे सुख से;
दुखी न हों इस जन के दुख से;
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से ?
आज अधिक वे भाते ।
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।
गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे,
पर क्या गाते गाते ?
सखि, वे मुझसे कह कर जाते ।

———

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

परीक्षा

अब कठोर हो वज्रादपि, ओ कुसुमादपि सुकुमारी,
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
मेरे लिए पिता ने सब से धीर-वीर बर चाहा,
आर्यपुत्र को देख उन्होंने सभी प्रकार सराहा।
फिर भी हठ कर हाय ! वृथा ही उन्हें उन्होंने थाहा,
किस योद्धा ने बढ़कर उनका शौर्य-सिन्धु अवगाहा ?
क्यों कर सिद्ध करूँ अपने को मैं उन नर की नारी ?
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
सभी सुन्दरी बालाओं में मुझे उन्होंने माना,
सब ने मेरा भाग्य सराहा, सब ने रूप बखाना,
खेद, किसी ने उन्हें न फिर भी ठीक-ठीक पहचाना,
भेद चुने जाने का अपने मैंने भी अब जाना,
इस दिन के उपयुक्त पात्र की उन्हें खोज थी सारी।
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
मैं अबला ! पर वे तो विश्रुत वीर-बली थे मेरे,
मैं इन्द्रियासक्त ! पर वे कब थे विषयों के चेरे ?
अयि मेरे अर्द्धांगि-भाव, क्या विषय-मात्र थे तेरे ?
हा ! अपने अंचल में किसने ये अंगार बिखेरे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है नारीत्व मुक्ति में भी तो, ओ वैराग्य-विहारी।
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा अब है मेरी बारी।
सिद्धि मार्ग की बाधा नारी ! फिर उसकी क्या गति है ?
पर उनसे पूछूँ क्या, जिनको मुझसे आज विरति है !
अर्द्ध विश्व में व्याप्त शुभाशुभ मेरी भी कुछ मति है।
मैं भी नहीं अनाथ जगत में, मेरा भी प्रभु पति है !
यदि मैं पतिव्रता तो मुझको कौन भार-भय भारी ?
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ?
यशोधरा के भूरि भाग्य पर ईर्षा करने आली,
तरस न खाओ कोई उस पर, आओ भोली-भाली !
तुम्हें न सहना पड़ा दुःख यह, मुझे यही सुख वाली,
बधू-वंश की लाज दैव ने आज मुझी पर डाली
बस, जातीय सहानुभूति ही मुझ पर रहे तुम्हारी।
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।
जाओ नाथ, अमृत लाओ तुम, मुझ में मेरा पानी;
चेरी ही मैं बहुत तुम्हारी; मुक्ति तुम्हारी रानी।
प्रिय तुम तपो, सहूँ मैं भरसक, देखूँ बस हे दानी—
कहाँ तुम्हारी गुण गाथा में मेरी करुण-कहानी ?
तुम्हें अप्सरा-विघ्न न व्यापे यशोधरा कर-धारी !
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी।

(यशोधरा से)

———

...l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गोपी

राधा का प्रणाम मुझ से लो,
श्याम-सखे; तुम ज्ञानी ;
ज्ञान भूल, बन बैठा उसका,
रोम रोम ध्रुव-ध्यानी ।
न तो आज कुछ कहती है वह,
और न कुछ सुनती है ;
अन्तर्यामी ही यह जाने,
क्या गुनती बुनती है ?
कर सकती तो करती तुम से
प्रश्न आप वह ऐसे—
"सखे, लौट आये गोकुल से ?
कहो, राधिका कैसे ?"
राधा हरि बन गयी, हाय ! यदि
हरि राधा बन पाते,
तो उद्धव मधुवन से उलटे ।
तुम मधुपुर ही जाते ।
अभी विलोक एक अलि उड़ता,
उसने चौंक कहा था—
"सखि, वह आया, इस कलिका में
क्या कुछ शेष रहा था ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर तत्त्तण ही गरज उठी वह
भौंह चढ़ा कर बाँकी –
"सावधान अलि ! हट कर लेना
तू प्यारी की झाँकी !"

आत्मज्ञान-हीन वह मुग्धा
वही ज्ञान तुम लाये,
धन्यवाद है बड़ी कृपा की,
कष्ट उठा कर आये।
पर वह भूली रहे आपको,
उसको सुध न दिलाना,
होगा कठिन अन्यथा उसका
जीना और जिलाना।

डूबी-सी वह बीच-बीच में
पलक खोल कर आये,
चिल्ला उठती है बिलोल-सी
बोल—'राधिके, राधे !'
ज्ञान - योग से हमें हमारा
प्रेम-वियोग भला है.
जिसमें आकृति, प्रकृति, रूप, गुण,
नाट्य, कवित्त्व, कला है।

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राम-राम ! मिथ्या माया के
भाव कहाँ से जागे ?
सच्चे ज्ञान, अनन्त ब्रह्म के
जीव आप तुम आगे !
विद्यमान सब विगत क्यों न हो,
किन्तु समागत भावी ;
मिथ्या कैसे है माया भी,
जब तक वह मायावी ?

हम में तुम में एक ब्रह्म, पर
वह कैसा नटखट है,
बोलो, दो घट में दो बातें,
करा रहा खटपट है ।
उसको यही प्रपंच रुचे तो
हमें कौन-सी व्रीड़ा ?
एक-मात्र यदि वही रहे तो
चले कहाँ से क्रीड़ा ?

होगा निर्गुण; निराकार वह,
छली तुम्हारे लेखे ;
हम से पूछो तुम, उसके गुन—
रूप हमारे देखे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अन्तर्दृष्टि मिले तो हम भी
शून्य देख लें अब के;
पर जब तक हैं, कहो क्या करें—
चर्म-चक्षु हम सब के?

कहाँ हमारा कृष्ण, हाय! हम
यह क्या तुम्हें बतावें;
ठौर नहीं दिखलायी पड़ता,
उसको जहाँ जतावें।
अब तक यहाँ ध्यान में तो था
वह मोहन मन-भाया,
किन्तु आ अड़ी आज बीच में
कूद ज्ञान की माया।

चाहे क्या राधा बियोगिनी,
स्वयम् योग लाये तुम,
आहा! क्या ज्ञानाग्नि-रूप में
भाग्य-भोग लाये तुम!
दृश्यमान का भस्म लेप कर
फिरे योगिनी बन में;
उसका योगिराज, वह राजे
मथुरा - राज - भवन में!

...onal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand...

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

क्या जानें, ज्ञानी ने उसका
ज्ञान, कहाँ कब सीखा,
ज्ञान और अज्ञान हमें तो
यहाँ एक-सा दीखा !
देख न पावें आप आप को,
ये आँखें तो भय क्या ?
सब में उस अपने को देखें,
तब भी कुछ संशय क्या ?

गायें यहाँ घेरनी पड़तीं,
नाच नाचना पड़ता;
वह रस गोरस कभी चुराना,
कभी जाँचना पड़ता।
राजनीति का खेल वहाँ है
सूक्ष्म-बुद्धि पर सारा;
निराकार-सा हुआ ठीक ही,
वह साकार हमारा।

आते-जाते प्रति दिन बन से
घर, फिर घर से बन को,
वह बढ़ गया और कुछ उस दिन
नगर पवन सेवन को !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यही बहुत हम ग्रामीणों को
जो न वहाँ वह भूला,
किंवा संग वहाँ भी थी यह
कालिन्दी कल—कूला।

सचमुच ही हम देख रही थीं
जगते जगते सपना;
जहाँ रहे, बस सुखी रहे वह,
दुःख हमारा अपना।
यौवन-सा शैशव था उसका,
यौवन का क्या कहना ?
कुब्जा से बिनती कर देना—
'उसे देखती रहना।'

कृपया वचन न मन में रखना
तुम अन्यान्य हमारे;
प्रिय के बन्धु, अतिथि हो उद्धव,
तुम सम्मान्य हमारे।
विवशों का मन, वाणी को भी,
व्याकुल कर देता है;
आर्त्तों का आक्रोश ईश भी
सुन कर सह लेता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ज्ञानी हो तुम किन्तु भाग्य तो
अपना अपना होता;
वक्ता भी क्या करे, न पावे
यदि अधिकारी श्रोता ?
हम अपने को जान न पायी,
उसको क्या जानेंगी ?
मन की बात मानती आयी,
मन की ही मानेंगी।

निर्गुण निपट निरीह आप हम,
सभी रूप गुण भागे।
निराकार ही निराकार है
आज हमारे आगे;
राधा के अनुरूप जोग की
कोई जुगत जुगाते,
उद्धव, हाय ! राज-हंसी को
तुम हीरे न चुराते।

क्या समझाते हो तुम हमको,
वह अरूप है, ओहो !
गोचारी, गोपाल हमारा,
रहे अगोचर, जो हो !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हमें मोह ही सही, किन्तु वह
उसी मनोमोहन का;
काम, किन्तु वह उसी श्याम का,
लोभ उसी जन-धन का।

ज्ञान-योग लेकर सुषुप्ति ही
तुम न सिखाने आये;
जागृति को समाधि-निद्रा का
स्वप्न दिखाने आये?
नाम-मात्र का ब्रह्म तुम्हारा,
रहे तुम्हें फलदायक;
उद्धव, नहीं निरीह हमारा,
नटवर, नागर, नायक।

निज विराट को छोड़, सूक्ष्म से
कौन यहाँ सिर मारे?
धार सके उसको जो जितना,
जी भर-भर कर धारे;
वे अघ-बक सब कहाँ गये अब?
अरे, एक तो आवे!
देखें हमको छोड़ हमारा
छली कहाँ फिर जावे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अन्तवन्त हम हन्त ! कहाँ से
वह अनन्तता लावें ?
इस मृण्मय में ही निज चिन्मय
पावें, तो हम पावें ;
सिमिट एक सीमा में, मानो
अपने में न समाता ;
मिला हमें ऐसे वह जैसे
छोड़ हमीं से नाता ।

क्या बतलावें, वह वंशीधर
कैसा आया हम में ?
ताल न आया होगा ऐसा
कभी किसी की सम में;
जीवन में यौवन-सा आया,
यौवन में मधु-मद-सा,
उस मद में भी, छोड़ परम पद,
आया वह गद्गद्-सा !

बृन्दावन में नव मधु आया,
मधु में मन्मथ आया;
उसमें तन, तन में मन, मन में
एक मनोरथ आया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उसमें आकर्षण, हाँ, राधा
आकर्षण में आयी;
राधा में माधव, माधव में
राधा - मूर्त्ति समायी।

यही सृष्टि की तथा प्रलय की
उद्धव! कथा हमारी;
पर कितना आनन्द हमारा!
कितनी व्यथा हमारी;
कहो, इसे हम किसे जनावें,
कौन कहाँ जानेगा?
कौन भूल कर आप आपको,
पर को पहचानेगा?

नयी अरुणिमा जगी अनल में,
नवलोज्ज्वलता जल में
नभ में नव्य नीलिमा, नूतन
हरियाली भूतल में
नया रंग आया समीर में,
नया गन्ध-गुण छाया;
प्राण-तुल्य पाँचों तत्वों में
वह पीताम्बर आया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कोटि कमल फूटें, कमलों पर
आ-आ कर अलि टूटे;
चित्र पतंग विचित्र पटों की
प्रतिकृति लेने छूटे;
पात-पात में फूल और थे
डाल-डाल में झूले;
वन की रँग-रलियों में हम सब
घर की गलियाँ भूले!

नयी तरंगें थीं यमुना में,
नयी उमंगें ब्रज में;
तीन लोक-से दीख रहे थे
लोट-पोट इस रज में;
ऊपर घटा घिरी थी, नीचे
पुलक कदम्ब खिले थे;
झूम-झूम रस की रिम-झिम में
दोनों हिले-मिले थे।

मद का कहो, अँधेरा-सा ही
आया श्याम सही था;
राधा का छिप गया सभी कुछ,
वह थी और वही था!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किन्तु गया उजियाले-सा वह,
उलटा हुआ यहाँ है;
देश-काल सब अड़े खड़े हैं
राधा किन्तु कहाँ है?

आँख-मिचौनी में वह भागा,
हमने पकड़ न पाया;
देर हुई तो चातक तक ने
रह-रह रोर मचाया;
हँसा किन्तु भेदी पिक हा! हा!
हू! हू! कर इतराया;
तब केकी ने नाच निकट ही
कृपया पता बताया!

उद्धव! वे दिन भूलेंगे क्या,
तुम्हीं बता दो, कैसे?
संकट भी जब हुए हमारे
क्रीड़ा-कौतुक जैसे!

(द्वापर से)

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहुष का पतन

मत्त - सा नहुष चला बैठ ऋषि-यान में,
व्याकुल - से देव चले साथ में; विमान में।
पिछड़े तो वाहक विशेषता से भार की,
आरोही अधीर हुआ प्रेरणा से मार की!

"दीखता है कठिन मुझे तो मार्ग कटना,
यह बढ़ना है तो कहूँ मैं किसे हटना ?
बस, क्या यही है बस, विधियाँ गढ़ो ?
अश्व से अड़ो न अरे, कुछ तो बढ़ो, बढ़ो।"

बार बार कन्धे फेरने को, ऋषि अटके,
आतुर हो राजा ने स-रोष पैर पटके।
क्षिप्र पद पाय ! एक ऋषि को जो जा लगा,
सातों ऋषियों में महा क्षोभानल आ जगा।

"भार बहें बातें सुनें लातें भी सहें क्या हम ?
तू ही कह क्रूर, मौन अब भी रहें क्या हम ?
पैर था या साँप यह, डँस गया संग ही,
पामर पतित हो तू होकर भुजंग ही!"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा हत-तेज हुआ, शाप सुनते ही काँप,
पीकर जगा गया हो, जैसे उसे पीना साँप।
श्वास टूटने-सी मुख-मुद्रा हुई विकला;
हाय! यह हुआ क्या? यही व्यग्र वाक्य निकला।

जड़-सा सचिन्त वह नीचा सिर करके,
पालकी का नाल, डूबते का तृण धरके,
शून्य-पट-चित्र हुआ घुलता-सा वृष्टि से,
देखा फिर उसने समक्ष शून्य दृष्टि से।

दीख पड़ा उसको न जाने क्या समीप-सा,
चौंका एक साथ वह बुझता प्रदीप-सा—
'संकट तो संकट, परन्तु यह भय क्या?
दूसरा सृजन नहीं मेरा एक लय क्या?"

सम्हला अदम्य मानी खींच कर ढीले अंग—
"कुछ नहीं, स्वप्न था सो हो गया भला ही भंग।
कठिन कठोर सत्य! तो भी शिरोधार्य है;
शान्त हों महर्षि, मुझे शाप अंगीकार्य है।

दुःख में भी राजा मुसकाया पूर्व दर्प से—
"मानते हो तुम अपने को डँसा सर्प से।
होते ही परन्तु पद-स्पर्श भूल चूक से,
मैं भी क्या डँसा नहीं गया हूँ दन्दशूक से?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मानता हूँ भूल हुई, खेद मुझे इसका,
सौंपे वही कार्य उसे धार्य हो जो जिसका।
स्वर्ग से पतन, किन्तु गोत्रिणी की गोद में,
और जिस जोन में जो, सो उसी में मोद में।

काल गतिशील, मुझे ले के नहीं बैठेगा;
किन्तु इस जीवन में विष घुस पैठेगा।
तो भी खोजने का कुछ कष्ट जो उठावेंगे।
विष में भी अमृत छिपा वे कृती पावेंगे।

मानता हूँ, आड़ ही ली मैंने स्वाधिकार की.
मूल में तो प्रेरणा थी काम के विकार की।
माँगता हूँ आज मैं शची से भी खुली क्षमा,
विधि से बहिर्गता भी साध्वी वह ज्यों रमा।

मानता हूँ, भूल गया नारद का कहना—
"दैत्यों से बचाये यह भोग-धाम रहना।"
आ घुसा असुर हाय! मेरे ही हृदय में,
मानता हूँ आप लज्जा पाप-अविनय में।

मानता हूँ और सब, हार नहीं मानता,
अपनी अगति नहीं आज भी मैं जानता।
आज मेरा भुक्तोज्झित हो गया स्वर्ग भी,
ले के दिखा दूँगा कल मैं ही अपवर्ग भी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तन जिसका हो, मन और आत्मा मेरा है,
चिन्ता नहीं बाहर उजेला या अँधेरा है।
चलना मुझे है, बस अन्त तक चलना,
गिरना ही मुख्य नहीं, मुख्य है सम्हलना।

गिरना क्या उसका उठा ही जो नहीं कभी ?
मैं ही तो उठा था आप, गिरता हूँ जो अभी।
फिर भी उठूँगा और बढ़ के रहूँगा मैं,
नर हूँ, पुरुष हूँ मैं चढ़ के रहूँगा मैं।

चाहे जहाँ मेरे उठने के लिए ठौर है,
किन्तु लिया आज मैंने भार कुछ और है।
उठना मुझे ही नहीं एक मात्र रीते हाथ,
मेरी देवता भी और ऊँची उठे मेरे साथ।

(नहुष से)

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कुणाल गीत

(१)

अरी भावती; भामिनी !
मेरी कांचन - कामिनी !
हो जा अब तो अग्रगामिनी ,
रही बहुत अनुगामिनी !
अभी भावती भामिनी !

भोजन में मातृत्व दिखा कर ,
भगिनी सी शुभ सीख सिखा कर ,
रही सेविका नाम लिखा कर
लिख लूँ अब तो स्वामिनी ?
अरी भावती, भामिनी !

तुझ में मेरा सारा जग है ,
मेरे पग हैं, तेरा मग है ।
चन्द्रमुखी किससे जगजग है
मेरी यह चिर यामिनी ?
अरी भावती, भामिनी !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

(२)

संगिनि; तू फिर सिसकी !
कहाँ रहें, क्या करें आज हम,
बृथा भावना इसकी।

जाग, सँभाल तनिक अपने को,
जाने दे अब उस सपने को।

हटा हाथ से वे निज अलकें,
जो पलकों पर खिसकी !
संगिनि, तू फिर सिसकी !

हुई धूप भी मुझको छाया,
गई आप ही मिथ्या माया।

आज हमारी चिन्ता सब को,
हमें नहीं जिस - तिसकी !
संगिनि ! तू फिर सिसकी !

हम में कुछ छल-छिद्र नहीं है,
सदय स्वदेश दरिद्र नहीं है।

वहुधा विपुल, समाज सुसंस्कृत,
कह फिर बाधा किसकी ?
संगिनि ! तू फिर सिसकी !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अब क्या हम सुख से न रहेंगे ?
सब की सुन अपनी न कहेंगे ?
भिक्षुक भी राजा हूँगा मैं,
तुझ सी रानी जिसकी।
संगिनि ! तू फिर सिसकी !

हम बाहर हों अथवा घर में,
अपना धन है अपने कर में।
आ, हँस कर ही करें उपेक्षा,
निठुर नियति की रिस की।
संगिनि, तू फिर सिसकी !

श्री मैथिलीशरण गुप्त के ग्रन्थ

काव्य-ग्रन्थ—रंग में भंग, जयद्रथ वध, भारत भारती, शकुन्तला, किसान, पत्रावली, वैतालिक, स्वदेश-संगीत, पंचवटी, हिन्दू, त्रिपथगा, गुरुकुल, शक्ति, वन-वैभव, साकेत, द्वापर, सिद्धराज, विकट भट, झंकार, यशोधरा, मंगल घट, नहुष, कुणाल गीत, अर्जन और विसर्जन, विश्व-वेदना तथा काबा और कर्बला।

नाटक—तिलोत्तमा, चन्द्रहास, अनघ।

अनुवाद—मेघनाद वध, वीरांगना, विरहिणी-व्रजांगना, पलासी का युद्ध, उमरख़ैयाम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय

श्री उपाध्याय जी आधुनिक काल के सबसे पुराने कवि हैं। सम्वत् १९९५ में उन्हें प्रिय-प्रवास ग्रन्थ पर मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया था और अब सम्वत् २००१ में हिन्दुस्तानी एकेडमी, युक्त प्रान्त ने उन्हें 'वैदेही बनवास' पर ५००) से पुरस्कृत किया। उपाध्याय जी ने द्विवेदी काल में ही अपनी प्रतिभा का पूर्ण परिचय दे दिया था। इनका 'प्रिय-प्रवास' ग्रन्थ तो युग-प्रवर्त्तक ग्रन्थ ही कहा जा सकता है। यह खड़ी बोली में प्रथम अतुकान्त महाकाव्य है। इससे इनके काव्य-ज्ञान तथा इनकी भाषा का पूर्ण परिचय मिलता है। 'प्रिय-प्रवास' की विस्तृत भूमिका में इन्होंने अपने काव्य-सिद्धान्तों के विषय में अच्छी विवेचना की है। 'प्रिय-प्रवास' की विशेषता भाव-सौन्दर्य और चरित्र-चित्रण में है।

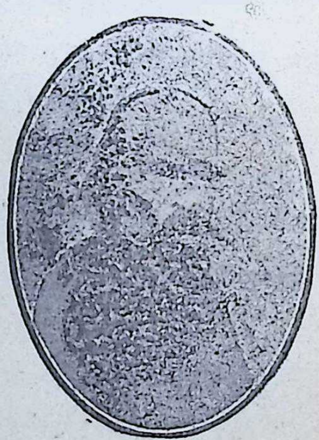

जहाँ उपाध्याय जी ने 'प्रिय-प्रवास' में अपनी परिष्कृत और संस्कृत शैली का परिचय दिया है, वहाँ उन्होंने 'बोलचाल', 'चुभते-चौपदे' और 'चोखे-चौपदे' में अपनी सरल, स्वाभाविक और बोल-चाल की मुहाविरे-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दार भाषा में काव्य-रचना की है। इनकी इस प्रकार की कविताओं में जीवन की अनेक प्रवृत्तियों का निरूपण, सरल भाषा में अच्छी तरह किया गया है। यद्यपि कविता में कहीं-कहीं मुहाविरों के प्रयोग से भावों के चित्रण पर आघात पहुँचा है, तथापि भाषा की स्वाभाविकता अक्षुण्ण है।

द्विवेदी काल में ब्रजभाषा का भी साहित्य में अच्छा प्रयोग हुआ। उपाध्याय जी ने उस प्रवृत्ति का परिचय अपने 'रस कलश' नामक ग्रन्थ में दिया है। इस ग्रन्थ में शृंगार रस की विशेष अच्छी कविता है और ब्रजभाषा के साहचर्य से तो शृंगार रस में और भी अधिक माधुर्य आ गया है।

कविता के सिवाय उपाध्याय जी ने गद्य रचनाएँ भी की हैं। इनसे पहले इंशा की 'रानी केतकी की कहानी' ठेठ हिन्दी में पहली और अन्तिम कहानी थी। उपाध्याय जी ने 'ठेठ हिन्दी का ठाट' और 'अधखिला फूल' लिख कर इंशा के आदर्शों में और भी वृद्धि की। 'ठेठ हिन्दी' का गद्य इन दोनों पुस्तकों में बहुत अच्छी तरह से प्रयुक्त किया गया है। 'ठेठ हिन्दी का ठाट' या 'देवबाला' में तो भाषा के साथ-साथ कथा का भी अच्छा निर्वाह किया गया है।

उपाध्याय जी हमारी कविता के आचार्य हैं। सम्वत् १९९१ में आरा की नागरी-प्रचारिणी सभा ने उनकी ७० वीं वर्ष-गाँठ पर उन्हें अभिनन्दन-ग्रन्थ भेट किया था।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रिय-प्रवास

आयी वेला हरि-गगन की छा गयी खिन्नता-सी
थोड़े ऊँचे नलिनपति जा छिपे पादपों में;
आगे सारे स्वजन करके, साथ अक्रूर को ले
धीरे-धीरे स-जनक कढ़े सद्म में से मुरारी;

आते आँसू अति कठिनता साथ रोके दृगों के
होती खिन्ना हृदय-तल के सैकड़ों संशयों से,
नाना बामा परम दुखिता, संग शोकाभिभूता
पीछे प्यारे तनय, निकली गेह में से यशोदा।

द्वारे आया व्रज-नृपति को देख यात्रा लिये ही,
भोला भाला निरख मुखड़ा फूल से लाड़िलों का;
खिन्ना दीना परम लख के नन्द की भामिनी का,
चिन्ता-डूबी सकल जनता, हो उठी कम्पमाना।

कोई रोया, नहिं जल रुका लाख रोके दृगों का,
कोई आहें सदुख भरता; हो गया बावला-सा,
कोई बोला, 'सकल व्रज के जीवनाधार प्यारे,
यों लोगों को व्यथित करके आज जाते कहाँ हो ?'

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रोता, होता विकल अति ही एक आभीर बूढ़ा,
दीनों के से बचन करता पास अक्रूर आया,
बोला—"कोई जतन जन को आप ऐसा बतावें,
मेरे प्यारे कुँवर मुझ से आज न्यारे न होवें।"

"मैं बूढ़ा हूँ यदि कुछ कृपा आप चाहें दिखाना,
तो मेरी है विनय इतनी स्याम को छोड़ जावें।
हा ! हा ! सारी ब्रज-अवनि का प्राण है लाल मेरा,
क्यों जीयेंगे हम सब उसे आप ले जायँगे जो ?"

"रत्नों की है नहिं कुछ कमी आप लें रत्न ढेरों,
सोना-चाँदी सहित धन भी गाड़ियों आप ले लें।
गायें ले लें, गज तुरँग भी आप ले लें अनेकों,
लेवें मेरे न निजधन को जोड़ता हाथ मैं हूँ।"

"जो है प्यारी धरनि ब्रज की यामिनी के समाना,
तो तातों के सहित, सिगरे गोप हैं तारकों से ;
मेरा प्यारा कुँवर उसका एक ही चन्द्रमा है,
छा जावेगा तिमिर, वह जो दूर होगा दृगों के !"

"सच्चा प्यारा सकल ब्रज का, वंश का है उजाला,
दीनों का है परमधन, और वृद्ध का नेत्र-तारा ;
बालाओं का प्रिय स्वजन, और बन्धु है बालकों का,
ले जाते हैं सु-रतन कहाँ, आप ऐसा हमारा।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बूढ़े के ये वचन सुनके नेत्र में नीर आया,
'आँसू रोके परम मृदुता साथ अक्रूर बोले—
क्यों होते हैं दुखित इतने मानिये बात मेरी,
आ जावेंगे विवि दिवस में आपके लाल दोनों।"

आयी प्यारे निकट श्रम से एक वृद्धा-प्रवीणा,
हाथों से छू कमल-मुख को प्यार से लीं बलायें।
पीछे बोली दुखित स्वर से, "तू कहीं जा न बेटा,
तेरी माता अहह, कितनी बावली हो रही है!"

"जो रूठेगा नृपति, ब्रज का वास ही छोड़ दूँगी,
ऊँचे-ऊँचे भवन तज के जंगलों में बसूँगी;
खाऊँगी फूल-फल-दल को व्यंजनों को तजूँगी,
मैं आँखों से अलग न तुझे लाल मेरे करूँगी।"

"जाओगे क्या कुँवर मथुरा? कंस का क्या ठिकाना?
मेरा जी है बहुत डरता, क्या न जाने करेगा?
मानूँगी मैं न, सुरपति का राज ले क्या करूँगी।"
तेरा प्यारा बदन लख के, स्वर्ग को मैं तजूँगी।"

'जो लेवेगा नृपति मुझसे दंड दूँगी करोड़ों,
लोटा-थाली सहित तन के वस्त्र भी बेच दूँगी;
जो माँगेगा हृदय वह तो, काढ़ दूँगी उसे भी;
बेटा! तेरा गमन मथुरा, मैं न आँखों लखूँगी।'

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"कोई भी है न सुन सकता, जा किसे मैं सुनाऊँ ?
मैं हूँ, मेरा हृदय-तल है, और व्यथा हैं अनेकों,
बेटा ! तेरा सरल मुखड़ा शान्ति देता मुझे है,
क्यों जीऊँगी कुंवर ! बतला जो चला जायगा तू ?"

"प्यारे तेरा गमन सुन के; दूसरे रो रहे हैं,
मैं रोती हूँ, सकल ब्रज है वारि लाता दृगों में;
सोचो बेटा ! उस जननि की क्या दशा आज होगी ?
तेरा जैसा सरल जिसका एक ही लाड़िला है ।"

प्राचीना की स-दुख सुन के, बात सारी मुरारी,
दोनों आँखें सजल करके प्यार के साथ बोले—
"मैं आऊँगा कुछ दिन गये बाल होगा न बाँका,
क्यों माता तू, विकल इतना आज यों हो रही है ?"

दौड़ा ग्वाला ब्रज-नृपति के सामने एक आया,
बोला, "गायें सकल वन को आपकी हैं न जातीं;
दाँतों से हैं न तृण गहती हैं न बच्चे पिलातीं,
हा ! हा ! मेरी सुरभि, सबको आज क्या हो गया है ।

"देखो ! देखो ! सकल हरि की ओर ही आ रही हैं,
रोके भी हैं वह न रुकतीं, बावली हो गयी हैं,"
यों ही बातें सदुख कहते फूट के ग्वाल रोया,
बोला, 'मेरे कुँवर सब को यों रुला के न जाओ ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रोता ही था अहिर, तब लौं नन्द की सर्व गायें,
दौड़ी आयीं निकट हरि पूँछ ऊँची उठाये
खिन्ना, दीना, विपुल, वह थीं, वारि था नेत्र लाता,
ऊँची आँखों कमल-मुख थीं देखतीं, शंकिता हो।

काकातूआ महर-गृह के द्वार का भी दुखी था,
भूला जाता सकल स्वर था, उन्मना हो रहा था,
चिल्लाता था, अति विकल था औ यही बोलता था,
"यों लोगों को व्यथित करके लाल जाते कहाँ हो?"

पंछी की औ सुरभि सब की, देख ऐसी दशाएँ,
थोड़ी जो थी, अहह! वह भी, धीरता दूर भागी;
हा! हा! शब्दों सहित इतना फूट के लोग रोये,
हो जाती थी निरख जिसको भग्न छाती शिला की।

आवेगों के सहित बढ़ते देख सन्ताप नाना,
धीरे-धीरे व्रज-नृपति से खिन्न अक्रूर बोले—
"देखी जाती नहीं व्रज-व्यथा, शोक है वृद्धि पाता,
आज्ञा दीजे, जननि पग छू, यान पै श्याम बैठें।"

आज्ञा पा के निज जनक की, मान अक्रूर बातें,
जेठे भ्राता सहित, जननी पास गोपाल आये;
छू माता के कमल पग को, धीरता साथ बोले,
"जो आज्ञा हो जननि अब, तो यान पै बैठ जाऊँ।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दोनों प्यारे कुँवर-वर के यों विदा माँगते ही,
रोके आँसू जननि-दृग में, एक ही साथ आये,
धीरे बोलीं, परम दुख से, "जीवनाधार जाओ,
दोनों भैया, मुख-शशि हमें लौट आके दिखाओ"

"धीरे-धीरे सु-पवन बहे, स्निग्ध हो अंशुमाली,
प्यारी छाया विटप बितरें, शान्ति फैले बनों में,
बाधाएँ हों शमन, पथ की दूर हों आपदाएँ,
यात्रा तेरी सफल सुत हो, छेम से सद्म आओ।"

लेके माता-चरण-रज को श्याम और राम दोनों,
आये विप्रों निकट उनके पाँव की बन्दना की;
भाई-बन्दों सहित मिल के हाथ जोड़ा बड़ों को,
पीछे बैठे विशद रथ में, बोध दे के सबों को;

दोनों प्यारे निज कुँवर को, यान पै देख बैठा,
आवेगों से विवश अति ही हो उठीं नन्दरानी;
आँसू डूबे, युगल दृग से, वारि-धारा बहा के,
बोलीं दीना सदृश वह यों, दग्ध हो-हो पती से—

अहह ! दिवस ऐसा हाय ! क्यों आज आया ?
निज प्रिय सुत से जो मैं जुदा हो रही हूँ;
अगणित गुणवाली प्राण से नाथ प्यारी,
यह अनुपम थाती मैं तुम्हें सौंपती हूँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सब पथ कठिनाई नाथ हैं जानते ही,
नहिं कुँवर कहीं भी आज लौं हैं सिधारे;
मधुर फल खिलाना, दृश्य नाना दिखाना
कुछ पथ-दुख मेरे बालकों को न होवे;

खर पवन सतावे लाड़िलों को न मेरे,
दिनकर-किरणों की ताप से भी बचाना;
यदि उचित जँचे तो छाँह में भी बिठाना,
मुख सरसिज ऐसा म्लान होने न पावे,

विमल जल मँगाना, देख प्यासा, पिलाना,
कुछ छुधित हुए ही, व्यंजनों को खिलाना,
दिन बदन सुतों का देखते ही बिताना,
प्रफुलित अधरों को सूखने भी न देना,

युग तुरग सजीले वायु से वेग वाले,
अति अधिक न दौड़ें यान धीरे चलाना,
बहु हिल कर हा! हा! कष्ट कोई न देवे,
परम मृदुल मेरे बालकों का कलेजा;

सकल नगर में ही बाम ऐसी मिलेंगी,
सब नहिं जिनकी हैं बामता बूझ पाते;
सकल समय ऐसी साँपिनों से बचाना,
वह निकट हमारे लाड़िलों के न आवें;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"जब नगर दिखाने के लिए नाथ, जाना,
निज सरल कुमारों को खलों से बचाना
सँग-सँग रखना और साथ ही गेह लाना,
छन सुश्रन दृगों से दूर होने न पावें;

"धनुष-मख सभा में देख मेरे सुतों को,
तनक भृकुटि टेढ़ी नाथ जो कंस की हो,
अवसर लख ऐसे यत्न तो सोच लेना,
न कुपित नृप होवें, और बचें लाल मेरे।

"यदि विधिवश सोचा भूप ने और ही हो,
यह विनय बड़ी ही दीनता से सुनाना—
हम बस न सकेंगे, जो हुई दृष्टि मैली,
युग सुअन यही हैं जीवनाधार मेरे।

"लख कर मुख सूखा, सूखता है कलेजा,
उर बिच बलती है आग देखे दुखों के;
शिर पर सुत के जो आंपदा नाथ आयी,
यह अवनि फटेगी औ समा जाऊँगी मैं;

"जग कर कितनी ही रात मैंने बितायी,
यदि तनक कुमारों को हुई बेकली थी;
यह हृदय हमारा भग्न कैसे न होगा?
यदि कुछ दुख होगा बालकों को हमारे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"बहु निशि नहिं मैंने शीत को शीत जाना,
थर-थर कँपती थी औ लिये अंक में थी,
यदि सुखित न यों भी देखती लाल को थी,
सब रजनि खड़े औ घूमते थी बिताती।

"निज सुख अपने, मैं ध्यान में भी न लायी,
प्रिय सुत सुख ही से मैं सुखी आज लौं हूँ;
मुख तक कुम्हलाया नाथ, मैंने न देखा,
अहह ! दुखित कैसे लाड़िले को लखूँगी ?

"यह समझ रही हूँ, और हूँ जानती भी;
हृदय-धन तुम्हारा भी यही लाड़िला है,
पर विवश हुई हूँ जी नहीं मानता है,
यह विनय इसी से नाथ, मैंने सुनायी।

"अब अधिक नहीं मैं भाखना चाहती हूँ,
अनुचित मुझसे है नाथ, होता बड़ा ही,
निज युग कर जोड़े ईश से हूँ मनाती,
सकुशल गृह लौटें आप ले लाड़िलों को !"

[प्रिय प्रवास से]

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आँख

पाँवड़े कैसे न पलकों के पड़े ?
जोत के सारे सहारे हो तुम्हीं।
आँख में, बस आँख में, हो घूमते ;
आँख के तारे हमारे हो तुम्हीं।

देखने वाली न आँखें हों मगर,
देखने का है उन्हें चसका बड़ा।
आप परदा किसलिए हैं कर रहे ?
हो भले ही आँख पर परदा पड़ा।

जान कर भी जानते जिसको नहीं,
क्यों उसी के जानने का दम भरें ?
आपही क्यों आँख अपनी ले कुचो ?
क्यों किसी की आँख में उँगली करे ?

देख कर, आँख देख ले जिनको,
वे बनाये गये नहीं वैसे ;
आँख में जो ठहर नहीं सकता,
आँख उस पर ठहर सके कैसे ?

राह पर साथ राहियों के चल,
साहबी आँख से उसे देखें,
आँख की साख जो कहाती है,
हम उसी आँख से उसे देखें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जोत न्यारी तो नहीं दिखला पड़ी ,
आँख में क्यों ज्ञान के दीये बलें ?
आँख में अंजन अनूठा लें लगा ,
हम जमायें आँख या आँखें मलें ?

है जहाँ में कहाँ न जादूगर ?
पर दिखाया न, देखते ही हो ;
भूल जादूगरी गई सारी ,
आँख जादू भरी भले ही हो ।

है जहाँ आँख पड़ नहीं सकती ,
आँख मेरी वहाँ न पायी जम ;
जग पसारा न लख सके सारा ,
आँख हमने नहीं पसारा कम ।

[बोलचाल से]

—:o:—

बेचारा बाप

भाग पलटे पलट गया वह भी ,
बा-समझ औ बहुत भला जो था ;
आज वह सामना लगा करने ,
आँख के सामने पला जो था ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्यार का प्याला पिला पाला जिसे,
हाथ से उसके बहुत से दुख सहे;
कर रहा है छेद छाती में वही,
हम जिसे छाती तले रखते रहे।

मानते जिसको बहुत ही हम रहे,
मानता है क्या न वह मेरा कहा?
किसलिए वह मूँग छाती पर दले?
जो सदा छाती तले मेरी रहा।

क्यों वही है आँख का काँटा हुआ;
आँख जिसको देख सुख पाती रही?
जी हमारा क्यों जलाता है वही,
पा जिसे छाती जुड़ा जाती रही?

बावला हो जाय जी कैसे नहीं!
आँख से कैसे न जल-धारा बहे!
है कलेजे में छुरी वह मारता!
हम कलेजे में जिसे रखते रहे!

फूल से हम न जिसे मार सके,
है वही आज भोंकता भाला,
आह! है खा रहा कलेजा वह,
है कलेजा खिला जिसे पाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्यों कलेजा न प्यार का दहले ?
ले कलेजा पकड़ न क्यों नेकी ?
बाप के मोम से कलेजे को,
दे कुचल कोर जो कलेजे की।

किरकिरी वह आँख की जाये न बन,
जो हमारी आँख का तारा रहा;
कर न दे टुकड़े कलेजे के वही,
है जिसे टुकड़ा कलेजे का कहा।

सुख अगर दे हमें नहीं सकता,
तो रखे लाज दुख अँगेजे की;
वह फिरे देखता न कोर कसर,
कोर है जो मेरे कलेजे की।

दूसरा क्या सपूत करता है,
किस तरह मुँह न मोड़ लेवे वह ?
पीठ पर ही उसे फिरे लादे,
पीठ कैसे न तोड़ देवे वह ?

[चोखे चौपदे से]

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समय का फेर

धन विभव की बात क्या जिनके बड़े,
रज बराबर थे समझते राज को,
है तरस आता उन्हीं के लाड़ले;
हैं तरसते एक मूठी नाज को!

क्या दिनों का फेर हम इसको कहें?
या कि है दिखला रही रंगत विपत?
थी कभी हमसे नहीं जिनकी चली,
आज दिन वे ही चलाते हैं चपल।

बेर खा वे बिता रहे हैं दिन,
जो रहे धन-कुबेर कहलाते;
अन्न से घर भरा रहा जिनका,
आज वे पेट भर नहीं पाते!

चाव से चुगते जहाँ मोती रहे,
हंस, तज कर मानसर आये हुए;
पोच दुख से आज वाँ के जन पचक,
फिर रहे हैं पेट पचकाये हुए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जो सुखों की गोदियों के लाल थे,
दिन ब दिन वे हैं दुखों से घिर रहे,
जो रहे अकड़े जगत के सामने,
आज वे हैं पेट पकड़े फिर रहे !

बाँटते जो जहान को, उनको
सुध रही बाट बाँटने ही की,
पाटते जो समुद्र थे, उनको
है पड़ी पेट पाटने ही की !

पेट जिनसे चीटियों तक का पला,
जा सके जिनके नहीं जाचक गिने,
कट रहे हैं पेट के काटे गये,
लट रहे हैं कौर वे मुँह का छिने !

दूध पीने को उन्हें मिलता नहीं,
जो सहित परिवार पीते घी रहे;
अब किसी का पेट भर पाता नहीं,
लोग आधा पेट खा, हैं जी रहे।

पेट भर अब अन्न मिलता है कहाँ ?
हैं कहाँ अब डालियाँ फल से लदी ?
बह रहा है सोत दुख का अब वहाँ,
थी जहाँ घी दूध की बहती नदी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

छिन गया आज कौर मुँह का है,
गाय देती न दूध है दूहे;
है बुरा हाल भूख से मेरा,
पेट में कूद हैं रहे चूहे।

बात बिगड़े नहीं किसी की यों,
मरतबा यों न हो किसी का कम,
पाँव मेरे जहान पड़ता था,
दुख पड़े, पाँव पड़ रहे हैं हम।

आज वे हैं जान के गाहक बने,
मुँह हमारा देख जो जीते रहे;
हाथ धो वे आज पीछे हैं पड़े,
जो हमारा पाँव धो पीते रहे।

छू जिन्हें मैल दूर होता था,
आज वे हो गये बहुत मैले;
वे नहीं आज फैलते घर में,
पाँव जो थे जहान में फैले!

बेतरह क्यों न दिल रहे मलता,
दुख दुखी चित्त किस तरह हो कम ?
लोटते पाँव के तले जो थे,
पाँव उनका पलोटते हैं हम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गालियाँ हैं आज उनको मिल रहीं,
गीत जिनका देवता थे गा रहे;
पाँव जिनके प्रेम से पुजते रहे,
पाँव की वे ठोकरें हैं खा रहे !

अब वहाँ छल की, कपट की फूट की,
नटखटी की है रही फहरा धुजा,
पापियों का पाप मन का मैल धो,
है जहाँ पर पाँव का धोअन पुजा !

आज वे पाले दुखों के हैं पड़े,
जो सदा सुख-पालने में ही पले,
सेज पर जो फूल की थे लेटते,
वे रहे हैं लेट तलवों के तले !

[चुभते चौपदे से]

भाव-भक्ति

पादप के पत्ते हैं प्रताप के पताके हरे,
क्यारियाँ सुमन की सुमनता सँवारी हैं;
तेरे अनुराग राग ही से रंजित है उषा,
नाना रवि तेरे तेज ही से तेजधारी हैं;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"हरिऔध" तेरे रंग ही में रजनी है रँगी,
बिधु की कलाएँ कर-कंज की सुधारी हैं,
महा प्रभावान पूत नख की प्रभा से लसे,
सारे नभ तारे तेरे पग के पुजारी हैं।

सेमल को लाल-लाल सुमन मिले हैं कहाँ?
पीले-पीले पुष्प दिये किसने बबूलों को?
तुली तूलिकाएँ ले-ले कैसे साजता है कौन,
सुललित लतिका के कलित दुकूलों को?

'हरिऔध' किसके खिलाये कलिकाएँ खिलीं,
दे-दे दान मंजुल मरन्द अनुकूलों को,
किससे रँगीली साड़ियाँ हैं तितली को मिली,
कौन रँगरेज रँगता है इन फूलों को?

किसके करों से है धवलिमा निराली मिली,
किसके धुलाये हैं धवल फूल धुलते?
किसके कहे से ओस-बिन्दु सुमनावली के,
मोह कर मानस है मोतियों से तुलते?

'हरिऔध' किसके सहारे से समीर द्वारा,
मंजुल मही में हैं मरन्द भार ढुलते;
किसके लुभाने के बहाने मनमाने कर,
रात में ख़जाने रत्न-राजि के हैं खुलते?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गालियाँ हैं आज उनको मिल रहीं,
गीत जिनका देवता थे गा रहे;
पाँव जिनके प्रेम से पुजते रहे,
पाँव की वे ठोकरें हैं खा रहे !

अब वहाँ छल की, कपट की फूट की,
नटखटी की है रही फहरा धुजा,
पापियों का पाप मन का मैल धो,
है जहाँ पर पाँव का धोअन पुजा !

आज वे पाले दुखों के हैं पड़े,
जो सदा सुख-पालने में ही पले,
सेज पर जो फूल की थे लेटते,
वे रहे हैं लेट तलवों के तले !

[चुभते चौपदे से]

भाव-भक्ति

पादप के पत्ते हैं प्रताप के पताके हरे,
क्यारियाँ सुमन की सुमनता सँवारी हैं;
तेरे अनुराग राग ही से रंजित है उषा,
नाना रवि तेरे तेज ही से तेजधारी हैं;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"हरिऔध" तेरे रंग ही में रजनी है रँगी,
बिधु की कलाएँ कर-कंज की सुधारी हैं,
महा प्रभावान पूत नख की प्रभा से लसे,
सारे नभ तारे तेरे पग के पुजारी हैं।

सेमल को लाल-लाल सुमन मिले हैं कहाँ ?
पीले-पीले पुष्प दिये किसने बबूलों को ?
तुली तूलिकाएँ ले-ले कैसे साजता है कौन,
सुललित लतिका के कलित दुकूलों को ?

'हरिऔध' किसके खिलाये कलिकाएँ खिलीं,
दे-दे दान मंजुल मरन्द अनुकूलों को,
किससे रँगीली साड़ियाँ हैं तितली को मिली,
कौन रँगरेज रँगता है इन फूलों को ?

किसके करों से है धवलिमा निराली मिली,
किसके धुलाये हैं धवल फूल धुलते ?
किसके कहे से ओस-बिन्दु सुमनावली के,
मोह कर मानस है मोतियों से तुलते ?

'हरिऔध' किसके सहारे से समीर द्वारा,
मंजुल मही में हैं मरन्द भार ढुलते;
किसके लुभाने के बहाने मनमाने कर,
रात में खजाने रत्न-राजि के हैं खुलते ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

झर-झर झरने, उल्लाल वारि-विन्दुओं को,
अंक किसका है मंजु मोतियों से भरते ?
पादप के पत्ते हिल-मिल हैं रिझाते किसे,
खिल खिल फूल क्यों सुगन्ध हैं बितरते ?

'हरिऔध' किसी ने न इसका बताया भेद,
सकल फबीले फल क्यों हैं मन हरते ?
बजते बधावे क्यों उमंग भरे भृङ्ग के हैं,
क्यों हैं रंग-रंग के विहंग गान करते ?

कामना-कलित-कलिका को है खिलाता कौन,
मधु है मिलाता कौन मानस-हिलोरे में ?
कौन है विलसाता सरस वासना के मध्य,
रस भरता है कौन प्रमद कमोरे में ?

'हरिऔध' लालायित होती हैं ललक काहें,
कौन लासता है लोक लालसा के कोरे में ?
कौन लाभ हुआ लोने-लोने लोचनों के मिले,
जो न लाली लाल की दिखायी लाल डोरे में ?

लगन लगे भी लालसाएँ जो ललाती रहीं,
कैसे तो न लोक-काल लोलुपों को टोकेंगे ?
वसुधा विकासिनी विभूति विरहित जन,
सुधा के प्रवाह कैसे मानस में रोकेंगे ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

'हरिऔध' कैसे कान्त कामना विहीन कर,
मनु जात जीवन महान फल लोकेंगे ?
जो न बने मानस मुकुर मल मोचन, तो
कैसे लोक-लोचन को लोचन बिलोकेंगे ?

किस लोक मंजु की महान मंजुता से रीझ,
महँक रही है वायु महँक अधिक ले,
किस मधु-सिन्धु को सुनाता है मधुप गान ?
अति कमनीय तान मधुप रसिक ले ?

'हरिऔध' कूक-कूक किसे है बनाता मुग्ध,
रुचिर रसाल मंजरी का रस पिक ले ?
किसे अवलोके फूल खिलते अघाते नहीं,
किसके बिलोके कुन्द के हैं दाँत निकले ?

जिसकी पुनीत भावना में उर लीन रहे,
क्या न वह भाव भरी मुरली बजायेंगे ?
क्या न रोम-रोम में भरेंगे तमहारी तेज,
क्या न भीत जन को अभीत कर पायेंगे ?

'हरिऔध' जिसकी सजीवता सजीवन है,
लोग जाग जिससे जगत को जगायेंगे,
क्या न वह गान फिर गायेंगे कृपानिधान;
क्या न वह मंजु तान कान को सुनायेंगे ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किसे लाभकर महि महिमामयी है हुई,
किसकी पुनीत केलि कीर्ति कलसी-सी है ?
मानवता किसकी महान मति से है लसी,
दानवता किस के पदों से गयी पीसी है ?

'हरिऔध' ऐसी पति देवता कहाँ है मिली,
किसकी प्रतीति प्रीति प्रगति सती-सी है ?
कौन पाप पीन जन पातक निकन्दिनी है,
कौन जग वन्दिनी जनक नन्दिनी-सी है ?

[कल्पलता से]

स्वर्ग

शार्दूल-विक्रीडित

है ऐरावत-सा गजेन्द्र न कहीं है, कौन देवेन्द्र-सा ।
है कान्ता न शची समान अपरा देवापगा हैं कहाँ ।
श्री जैसी गिरिजा गिरा सम नहीं देखी कहीं देवियाँ ।
पाई कल्पलतोपमा न लतिका, है स्वर्ग ही स्वर्ग-सा ॥१॥

शोभा-संकलिता नितान्त ललिता कान्ता कलालंकृता ।
लीला-लोल सदैव यौवनवती सद्वेश-वस्त्रावृता ।
नाना गौरव-गर्विता गुणमयी उल्लासिता संस्कृता ।
होती है दिव-दिव्यता-विलसिता स्वर्गाङ्गना सुन्दरी ॥२॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शुद्धा सिद्धि-विधायिनी अमरता आधारिता निर्जरा।
सारी आधि-उपाधि-व्याधि-रहिता बाधादि से वर्जिता।
कान्ता कान्ति-निकेतनातिसरसा दिव्या सुधासिंचिता।
नाना भूति विभूति मूर्त्ति महती है स्वर्ग स्वर्गीयता ॥३॥

जो होती न विराजमान उसमें दिव्यांग देवांगना।
जो देते न उसे प्रभूत विभुता देवेश या देवते।
नाना दिव्य गुणावली-सदन जो होती नहीं स्वर्गभू।
तो पाती न महान भूत्ति महती होती महत्ता नहीं ॥४॥

होते म्लान नहीं प्रसून, रहते उत्फुल्ल हैं सर्वदा।
पा के दिव्य हरीतिमा बिलसती है कान्त वृक्षावली।
पत्ते हैं परिणाम रम्य फल हैं होते सुधा के भरे।
है उद्यान न अन्य, स्वर्ग-अवनी के नन्दनोद्यान-सा ॥५॥

जो हो स्वस्थ शरीर, भाग्य जगता, पद्मासना की कृपा।
जो हो पुत्र विनीत. बुद्धि विमल, हो बंधु में बंधुता।
जो हो मानवता विवेक-सफला, हों सात्विकी वृत्तियाँ।
हो कान्ता मृदुभाषिणी अनुगता तो स्वर्ग है सद्म ही ॥६॥

होती है विकरालता जगत की जाते जहाँ कम्पिता।
आता काल नहीं समीप जिसके आरक्त आँखें किये।
होता है भय आप भीत जिसकी निर्भीकता भूति से।
जा पाते यमदूत हैं न जिसमें है स्वर्ग-सा स्वर्ग ही ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होता क्रन्दन है नहीं, न मिलता है आर्त कोई कहीं।
हाहाकार हुआ कभी न, उसने आहें सुनी भी नहीं।
देखा दृष्य न मृत्यु का, न दव से दग्धा विलोकी चिता।
है आनंद-निधान स्वर्ग-विभुता उत्फुल्लिता-मूर्त्ति है ॥८॥

गाती है वह गीत, पूत जिससे होती मनोवृत्ति है।
लेती है वह तान रीझ जिससे है रीझ जाती स्वयं।
ऐसी है कलकंठता कलित जो है मोहती विश्व को।
है संगीत सजीव मूर्त्ति दिवि को लोकोत्तरा अप्सरा ॥६॥

सारी मोहन-मंत्र-सिद्धि स्वर में, आलाप में मुग्धता।
तालों में लय में महामधुरता, शब्दावली में सुधा।
भावों में वर भावना सरसता उत्कंठता कंठ में।
देती है भर भूतप्रीतिध्वनि में गंधर्व गंधर्वता ॥१०॥

जागे सात्विक भाव भूति टलती हैं तामसी वृत्तियाँ।
देखे दिव्य दिवा-विकास छिपती है भीतभूता तमा।
जाती है मिट ज्ञान भानु-कर से अज्ञान की कालिमा।
पाते हैं द्युति लोक दिवि की आलोकमाला मिले ॥११॥

पाते हैं बहुदीप्ति देवगण से दिव्यांगना-वृन्द से।
होते झंकृत हैं सदैव बजते वीणादि झंकार से।
हो आरंजित रत्न से विलसते हैं मोहते लोक को।
आँखों में बसते सदा विहँसते आवास हैं स्वर्ग के ॥१२॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हो-हो नृत्य-कला निमग्न दिखला अत्यन्त तल्लीनता।
पाँवों के वर नूपुरादि ध्वनि में संसार को मोहती।
ले-ले तान महान मंजु रव से धारा सुधा की बहा।
नाना भाव-भरी परी सहित गा है नाचती किन्नरी ॥१३॥

नाना रोग वियोग-दुख-दल से जो द्वंद्व से है बचा।
सारी ऋद्धि प्रसिद्ध निधि पा जो भूति से है भरा।
जो है मृत्यु-प्रपंच-हीन जिसमें हैं जीवनी ज्योतियाँ।
तो क्या है अपवर्ग-पुण्य बल से जो स्वर्ग ऐसा मिले ॥१४॥

सारी संसृति है विभूति उसकी, है भूत-सत्ता वही।
प्यारा है वह लोक लोकपति का है लोक प्यारा उसे।
जो हो जाय अनन्यता जगत में तो अन्यता है कहाँ।
तो क्या है अपवर्ग-प्राप्ति-गरिमा, तो स्वर्ग संसर्ग क्या ॥१५॥

जो माने न उसे असार, समझे संसार की सारता।
जो देखे तृण से त्रिदेव तक में दिव्यांग की दिव्यता।
जो आँखें अवलोक लें अखिल में आत्मीयता का समा!
जो मानव का हो महान मन तो क्या साहिबी स्वर्ग की ॥१६॥

[पारिजात से]

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आश्रम में सीता

रघुकुल पुंगव ने पूरा गाना सुना।
धीर धुरंधर करुणा-वरुणालय बने ॥
इसी समय कर पूजित-पग की वन्दना।
खड़े दिखाई दिये प्रिय अनुज सामने ॥

कुछ आकुल कुछ तुष्ट कुछ अचिन्तित दशा।
देख सुमित्रा-सुत की प्रभुवर ने कहा ॥
"तात ! तुम्हें उत्फुल्ल नहीं हूँ देखता।
क्या मुझको अवलोक दृगों से जल बहा ?

आश्रम में तो सकुशल पहुँच गई प्रिया ?
वहाँ समादर स्वागत तो समुचित हुआ।
हैं मुनिराज प्रसन्न ? शान्त है तपोवन।
नहीं कहीं पर तो है कुछ अनुचित हुआ ?"

सविनय कहा सुमित्रा के प्रिय-सुअन ने।
"मुनि हैं मंगल-मूर्ति तपोवन पूततम ॥
आर्य्या हैं स्वयमेव दिव्य देवियों सी।
आश्रम है सात्विक-निवास सुरलोक सम ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वह है सद्व्यवहार - धाम सत्कृति-सदन
वहाँ कुशल है 'कार्य-कुशलता' सीखती ॥
भले - भाव सब फूले फले मिले वहाँ ।
भली - भावना - भूति भरी है दीखती ॥

किन्तु एक अति - पति - परायणा की दशा ।
उनकी मुख - मुद्रा उनकी मार्मिक व्यथा ॥
उनकी गोपन - भाव - भरित दुख - व्यंजना ।
उनकी बहु संयमन प्रयत्नों की कथा ॥

मुझे बनाती रहती है अब भी व्यथित ।
उसकी याद सताती है अब भी मुझे ॥
उन बातों को सोच न कब छलके नयन ।
आश्वासन देतीं कह जिन्हें कभी मुझे ॥

तपोभूमि का पूत वायुमण्डल मिले ।
मुनि-पुंगव के सात्विक पुण्य-प्रभाव से ॥
शान्ति बहुत कुछ आर्य्या को है मिल रही ।
तपस्विनी-गण सहृदयता सद्भाव से ॥

किन्तु पति - परायणता की जो मूर्त्ति है ।
पति ही जिसके जीवन का सर्वस्व है ॥
बिना सलिल की सफरी वह होगी न क्यों ।
पति-वियोग में जिसका विफल निजस्व है ॥"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सिय - प्रदत्त - सन्देश सुना सौमित्र ने।
कहा, "भरी है इनमें कितनी वेदना॥
बात आपकी चले न कब दिल हिल गया।
कब न पति - रता आँखों से आँसू छना॥

उनको है कर्त्तव्य ज्ञान वे आपकी—
कर्म - परायण हैं सच्ची सहधर्मिणी॥
लोक - लाभ-मूलक प्रभु के संकल्प पर।
उत्सर्गी कृत होकर हैं कृति ऋण ऋणी॥

फिर भी प्रभु की स्मृति, दर्शन की लालसा।
उन्हें बनाती रहती है व्यथिता अधिक।
यह स्वाभाविकता है उस सद्भाव की।
जो आजन्म रहा सतीत्व - पथ का पथिक॥

जिसने अपनी वर-विभूति-विभुता दिखा।
रज समान लंका के विभवों को गिना॥
जिसके उस कर से जो दिव-बल-दीप्त था।
लंकाधिप का विश्व-विदित-गौरव छिना॥

कर प्रसून सा जिसने पावक-पुंज को।
दिखलाई अपनी अपूर्व तेजस्विता॥
दानवता आतपता जिसकी शान्ति से।
बहुत दिनों तक बनती रही शरद सिता॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बड़े अपावन भाव परम पावन बने।
जिसकी पावनता का करके सामना॥
चौदह वत्सर तक जिसकी धृति-शक्ति से।
बहु दुर्गम वन अति सुन्दर उपवन बना॥

इष्ट-सिद्धि होगी उसका ही बल मिले!
सफल बनेगी कठिन से कठिन साधना॥
भव-हित होगा भय-विहीन होगी धरा।
होवेगी लोकोत्तर लोकाराधना॥

यह निश्चित है पर आर्य्या की वेदना।
जितनी है दुस्सह उसको कैसे कहूँ॥
वे हैं महिमामयी सहन कर लें व्यथा।
उन्हें व्यथा है, इसको मैं कैसे सहूँ॥

कुलपति आश्रम-गमन किसे प्रिय है नहीं।
इस मांगलिक-विधान से मुदित हैं सभी॥
पर न आज है राज-भवन ही श्री-रहित।
सूना है हो गया अवध सा नगर भी॥

मुनि-आश्रम के वास का अनिश्चित समय।
किसे बनाता है नितान्त चिन्तित नहीं॥
मातायें यदि व्यथित हैं वधुओं-सहित।
पौर-जनों का भी तो स्थिर है चित नहीं॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुझे देख सब के मुख पर यह प्रश्न था।
कब आयेंगी पुण्यमयी महि-नन्दिनी ॥
अवध पुरी फिर कब होगी आलोकिता।
फिर कब दर्शन देंगी कलुष-निकन्दिनी ॥

प्रायः आर्य्या जाती थीं प्रातः समय।
पावन-सलिला सरयू सरिता-तीर पर ॥
और वहाँ थीं दान पुण्य करती बहुत।
वारिद-सम वर-वारि-विभव की वृष्टि कर ॥

समय समय पर देव-मन्दिरों में पहुँच।
होती थीं देवी समान वे पूजिता ॥
सकल-न्यूनताओं की करके पूर्त्तियाँ।
सत्प्रवृत्ति को रहीं बनाती ऊर्जिता ॥

वे निज प्रिय-रथ पर चढ़ कर संध्या-समय।
अटन के लिये जब थीं बाहर निकलती ॥
तब खुलते कितने लोगों के भाग्य थे।
उन्नति में थी बहु-जन अवनति बदलती ॥

राज-भवन से जब चलती थीं उस समय।
रहते उनके साथ विपुल-सामान थे ॥
जिनसे मिलता आर्त्त-जनों को त्राण था।
बहुत अकिञ्चन बनते कञ्चनवान थे ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दत्त दासियाँ जितनी रहती साथ थीं।
वे जनता-हित-साधन की आधार थीं॥
मिले पंथ में किसी रुग्न विकलांग के।
करती उनके लिये उचित उपचार थीं॥

इसी लिये उनके अभाव में आज दिन।
नहीं नगर में ही दुख की धारा बही॥
उदासीनता है कह रही उदास हो।
राज-भवन भी रहा न राज-भवन वही॥

आर्य्या की प्रिय-सेविका सुकृतिवती ने।
अभी गान जो गाया है उद्विग्न बन॥
अहह भरा है उसमें कितना करुण-रस।
वह है राज-भवन दुख का अविकल-कथन॥

गृहजन परिजन पुरजन की तो बात क्या।
रथ के घोड़े व्याकुल हैं अब तक बड़े॥
पहले तो आश्रम को रहे न छोड़ते।
चले चलाये तो पथ में प्रायः अड़े॥

घुमा घुमा शिर रहे रिक्त-रथ देखते।
थे निराश नयनों से आँसू ढालते॥
बार बार हिनहिना प्रकट करते व्यथा।
चौंक चौंक कर पाँव कभी थे डालते॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आर्य्या कोमलता ममता की मूर्ति हैं।
हैं सद्भाव-रता उदारता पूरिता॥
हैं लोकाराधन-निधि-शुचिता-सुरसरी।
हैं मानवता-राका-रजनी की सिता॥

फिर कैसे होती न लोक में पूजिता।
क्यों न अदर्शन उनका जनता को खले?
किन्तु हुई निर्विघ्न मांगलिक क्रिया है।
हित होता है पहुँचे सुर पादप तले॥

[वैदेही वनवास से]

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय के ग्रन्थ

पद्य—प्रेमाम्बुवारिधि, प्रेमाम्बुप्रवाह, प्रेमाम्बु प्रस्रवण, प्रेमप्रपंच, प्रेम पुष्पोपहार, काव्योपवन, ऋतु मुकुर।
प्रिय प्रवास, चुभते चौपदे, चोखे चौपदे, कल्पना, बोल-चाल, पद्य प्रसून, रस कलश, वैदेही वनवास, पारिजात।

गद्य—ठेठ हिन्दी का ठाट, अधखिला फूल।

अनूदित—वेनिस का बाँका

संग्रह—सरस सग्रह, कबीर वचनावली

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री रामनरेश त्रिपाठी

श्री रामनरेश त्रिपाठी का व्यक्तित्व क्या है ? एक कवि, आलोचक, नाटककार, उपन्यासकार, टीकाकार, कहानी लेखक, अनुवादक और संपादक।

द्विवेदी युग के प्रमुख साहित्यिकों में श्री रामनरेश त्रिपाठी का विशेष स्थान है, क्योंकि द्विवेदी जी की भाँति त्रिपाठी जी का भी स्थान कविता के अतिरिक्त साहित्य के अनेक अंगों पर गया और उन्होंने व्याकरण सम्मत गद्य और पद्य के मार्ग को परिष्कृत कर प्रशस्त किया। उन्होंने कविता, कहानी नाटक, उपन्यास और समालोचना आदि अंगों पर समान रूप से रचनाएँ करते हुए अनुवाद, सम्पादन और संग्रह-कार्य भी किया। साथ ही साथ उन्होंने स्त्री-साहित्य और बाल-साहित्य के लिये भी अपनी प्रतिभा का प्रयोग किया। रामचरित मानस की एक टीका लिखने का गौरव भी त्रिपाठी जी ने प्राप्त किया है। अतः साहित्य के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जितने अंगों पर त्रिपाठी जी ने रचना की है, उतने अंगों पर हिन्दी साहित्य के किसी लेखक की लेखनी ने काम नहीं किया। इस क्षेत्र में त्रिपाठी जी अद्वितीय हैं।

कविता-क्षेत्र में वे राष्ट्रीय हैं। 'मिलन', 'पथिक' और 'स्वप्न' में स्वदेश-सेवा के ऊँचे आदर्शों का निरूपण है। कथा के पात्र किसी महात्मा से उपदेश सुन कर देश-भक्ति के लिए प्रोत्साहित होते हैं और अन्त में अपने उद्देश्य की प्राप्ति करते हैं। यह देश की नवीन जागृति का ही परिणाम है कि त्रिपाठी जी देश-सेवा के लिए आत्मोत्सर्ग का आदर्श रखते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में एक सा आदर्श होने से विविध पात्रों की मनोवैज्ञानिक विवेचना में संकीर्णता अवश्य आ गयी है, परन्तु कथा के मनोरंजन में कोई बाधा नहीं पड़ी।

त्रिपाठी जी की कविता सरल, स्पष्ट और व्याकरण के आदेशानुसार है। क्रिया रूप कभी छूटने नहीं पाये हैं और इसलिए उनके भाव सदैव स्पष्ट पाये जाते हैं। उनका कविता-संग्रह 'मानसी' भाव-चित्रों से पूर्ण है और उसमें कल्पना का भी विशेष भाग है "मेरे करुणा-निधि का आसन गरम होगा, कौन जाने कब मेरे शीतल उसास से" में कवि का व्यथित हृदय है।

त्रिपाठी जी प्रबन्ध अच्छा लिख सकते हैं। जहाँ कविता के क्षेत्र में प्रबन्धात्मकता सफल हुई है, वहाँ कहानियों, उपन्यासों और नाटकों के निर्माण में भी त्रिपाठी जी को कथा-वस्तु की सफलता प्राप्त हुई है। त्रिपाठी जी की कथावस्तु मनोरंजक और कौतूहलपूर्ण है। 'स्वप्नों के चित्र' में तो त्रिपाठी जी विनोदी भी हो गये हैं। त्रिपाठी जी के नाटक—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जयन्त और प्रेमलोक—आदर्श की दृष्टि से अच्छे नाटक हैं। रंगमंच पर उनका अभिनय होना चाहिए।

'कविता कौमुदी' के पाँच भाग, 'ग्रामगीत' का संकलन, हिन्दुस्तानी-कोष और मानस की टीका त्रिपाठी जी के अध्यवसाय पर प्रकाश डालने के लिए काफ़ी हैं। 'तुलसीदास और उनकी कविता' में लेखक ने भक्त और विवेचक के विभिन्न व्यक्तित्व को एक करने की क्षमता प्रदर्शित की है।

एक ओर जहाँ श्री रामनरेश त्रिपाठी ने कवि और समालोचक बन कर साहित्य की अनुभूति और विवेचना की है, वहाँ दूसरी ओर उन्होंने हमारे बालकों के सामने मीठी और चुरचुर कहानियाँ कह कर उनका मनोरंजन भी किया है। श्री रामनरेश त्रिपाठी एक विचारक साहित्य-कार हैं और उनके इसी गुण ने उनकी कविता भावना को घनीभूत होने का अवसर नहीं दिया। वे केवल कवि न होकर सम्पूर्ण साहित्यिक हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:..

पथिक का आत्म-चिन्तन

कुसुद-बन्धु की मुदित कौमुदी भू पर उतर गगन से,
सोयी थी सिकता-समूह पर परम अचिन्तित मन से;
बैठे हुए शिला पर, तन आगे की ओर झुकाये,
पथिक अचेतन, अचल, एकटक क्षिति पर दृष्टि गड़ाये–

था अति विकल निरीह, जुए में मानों सब कुछ हारे,
पता नहीं था उसे छोड़ मुनि कब चुपचाप सिधारे।
मुनि के सच्चे वचन पथिक के प्रेम-विशुद्ध हृदय में,
सपदि हुए अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित, अल्प समय में।

अनुभव कहते हुए हृदय में एक अचिन्तित दुख को,
कुछ क्षण बाद उठाया उसने परम विषादित मुख को;
आँखें विष में बूड़ रही-सी थीं रसहीन सजल हो,
लम्बी एक उसाँस खींच कर बोला पथिक विकल हो।

"हाय! परम कर्त्तव्य भूल कर आ विरमा मैं वन में,
इससे बढ़ कर और भूल क्या होगी इस जीवन में?"
फिर कर जोड़ कहा उसने-"हे अखिल जगत के स्वामी।
करके दया बना लो अब निज इच्छा का अनुगामी।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

फिर उसने विस्तृत स्वदेश की ओर दृष्टि निज फेरी,
कहा—"अहा! कैसी सुन्दर है जन्मभूमि यह मेरी!"
भक्ति, प्रेम, श्रद्धा से उसका तन पुलकित हो आया.
रोम-रोम में सेवा-व्रत का परमानन्द समाया।

फिर बोला—"हे जन्मभूमि! हे देश! प्रेमधन मेरे!
मैं यह जीवन-पुष्प चढ़ाता हूँ चरणों पर तेरे।"
यह कह लगा सोचने मन में कर्म उचित उपयोगी,
'जाने बिना निदान, बिना अनुभव, न सफलता होगी।'

'एक बार सम्पूर्ण देश का भ्रमण प्रथम मैं कर लूँ,
सुख-दुख का सब हेतु समझ कर ध्येय ध्यान में धर लूँ,
तब मैं करूँ कर्म पथ निश्चित जो ध्रुव सत्य विहित हो,
धर्म नीति के संरक्षण के जीव मात्र का हित हो।'

अतः निरन्तर एक वर्ष तक दृढ़ निश्चय कर मन में,
लगा रहा वह प्रान्त-प्रान्त में देश-दशा-दर्शन में।
उसने देखा—प्रचुर भरा सर्वत्र प्राकृतिक सुख है,
किन्तु देश उसने नितान्त अनभिज्ञ विरक्त विमुख है।

छूता हुआ गाँव की सीमा अति निर्मल जल वाला,
बहता है अविराम निरन्तर कलकल स्वर से नाला,
अनति दूर पर हरियाली से लदी खड़ी गिरि-माला,
किन्तु नहीं इससे हृदयों में है आनन्द-उजाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पथिक का आत्म-चिन्तन

कुमुद-बन्धु की मुदित कौमुदी भू पर उतर गगन से,
सोयी थी सिकता-समूह पर परम अचिन्तित मन से;
बैठे हुए शिला पर, तन आगे की ओर झुकाये,
पथिक अचेतन, अचल, एकटक क्षिति पर दृष्टि गड़ाये—

था अति विकल निरीह, जुए में मानों सब कुछ हारे,
पता नहीं था उसे छोड़ मुनि कब चुपचाप सिधारे।
मुनि के सच्चे वचन पथिक के प्रेम-विशुद्ध हृदय में,
सपदि हुए अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित, अल्प समय में।

अनुभव करते हुए हृदय में एक अचिन्तित दुख को,
कुछ क्षण बाद उठाया उसने परम विषादित मुख को;
आँखें विष में बूड़ रही-सी थीं रसहीन सजल हो,
लम्बी एक उसाँस खींच कर बोला पथिक विकल हो।

"हाय! परम कर्त्तव्य भूल कर आ विरमा मैं वन में,
इससे बढ़ कर और भूल क्या होगी इस जीवन में?"
फिर कर जोड़ कहा उसने-"हे अखिल जगत के स्वामी।
करके दया बना लो अब निज इच्छा का अनुगामी।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

फिर उसने विस्तृत स्वदेश की ओर दृष्टि निज फेरी,
कहा—"अहा ! कैसी सुन्दर है जन्मभूमि यह मेरी !"
भक्ति, प्रेम, श्रद्धा से उसका तन पुलकित हो आया.
रोम - रोम में सेवा-व्रत का परमानन्द समाया।

फिर बोला—"हे जन्मभूमि ! हे देश ! प्रेमधन मेरे !
मैं यह जीवन-पुष्प चढ़ाता हूँ चरणों पर तेरे।"
यह कह लगा सोचने मन में कर्म उचित उपयोगी,
'जाने बिना निदान, बिना अनुभव, न सफलता होगी।'

'एक बार सम्पूर्ण देश का भ्रमण प्रथम मैं कर लूँ,
सुख-दुख का सब हेतु समझ कर ध्येय ध्यान में धर लूँ,
तब मैं करूँ कर्म पथ निश्चित जो ध्रुव सत्य विहित हो,
धर्म नीति के संरक्षण के जीव मात्र का हित हो।'

अतः निरन्तर एक वर्ष तक दृढ़ निश्चय कर मन में,
लगा रहा वह प्रान्त-प्रान्त में देश-दशा-दर्शन में।
उसने देखा—प्रचुर भरा सर्वत्र प्राकृतिक सुख है,
किन्तु देश उससे नितान्त अनभिज्ञ विरक्त विमुख है।

छूता हुआ गाँव की सीमा अति निर्मल जल वाला,
बहता है अविराम निरन्तर कलकल स्वर से नाला,
अनति दूर पर हरियाली से लदी खड़ी गिरि-माला,
किन्तु नहीं इससे हृदयों में है आनन्द-उजाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कहीं श्याम चट्टान, कहीं दर्पण-सा उज्वल सर है,
कहीं हरे तृण खेत, कहीं गिरि-स्रोत-प्रवाह प्रखर है,
कहीं गगन के खम्भ, नारियल, तार भार सिर धारे,
रस-रसिकों के लिए खड़े ज्यों सुप्त नकार इशारे।

घेर रही हैं जिसे पल्लवित लता सुगन्धित झाड़ी,
छाया शयित सघन आच्छादित कुंचित पन्थ पहाड़ी,
सर्वोपरि उन्नत मन की-सी लक्षित अचल-ऊँचाई,
एक घड़ी को भी न किसी के लिए हुई सुखदाई।

ऊँचे से झरने झरते हैं, शीतल धार धवल है,
यहाँ परमसुख शान्ति समन्वित नित आनन्द अटल है;
कहीं धार के पास शिला पर बैठ लोग क्षण भर को,
पा सकते हैं शान्ति, मिटा सकते हैं जी के ज्वर को।

बार-बार बक-पंक्ति-गमन से उज्वल फूलों वाली,
मेघ-पुष्प-वर्षा से धूमिल घटा क्षितिज पर काली,
लहराती दृग की सीमा तक धानों की हरियाली,
वारिज-नयन-गगन-छवि दर्शक सर की छटा निराली।

कदली वन से हरी धरा को देख न आँख अघाती,
क्यों यह नहीं गाँव वालों के जी की जलन मिटाती ?
गेहूँ-चने-मटर-जौ के हैं खेत खड़े लहराते,
क्या कारण है जो ये मन का कुछ न विषाद मिटाते !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

निम्ब, कदम्ब, अम्ब इमली की श्याम निरातप छाया,
सेवन कर फिर लोक-शोक की याद न रखती काया ;
बैठ बाग की विशाद मेंड़ पर कोमल, अमल पवन में,
आँख मूँद करता किसान है श्रम का अनुभव मन में ।

कोकिल का आलाप, पपीहे की बिरहाकुल बानी,
तोता मैना का विवाद, बुलबुल की प्रेम-कहानी,
मधुर प्रेम के गीत तरुनियाँ गातीं खेत निरातीं,
क्या ये क्षण भर को न किसी के मन का कष्ट भुलातीं ?

विमलोदक पुष्कर में विकसे चित्र-विचित्र कुसुम हैं,
खड़े चतुर्दिक शान्त भाव से लतिकालिंगित द्रुम हैं,
देख सलिल-दर्पण में शोभा वे फूले न समाते,
दे प्रसून उपहार सरोवर को निज हर्ष जनाते ।

सुन्दर सर है, लहर मनोरथ सी उठ कर मिट जाती,
तट पर है कदम्ब की विस्तृत छाया सुखद सुहाती,
लटक रहे हैं धवल सुगन्धित कन्दुक-से फल फूले,
गूँज रहे हैं अलि पीकर मकरन्द मोद में भूले ।

वंजुल, मंजुल सदा सुसज्जित मज्जित छदन-विसर से,
अलि-कुल आकुल बकुल मुकुल, संकुल व्याकुल, नभचर से;
आसपास का पथ सुरभित है, महक रही फुलवारी,
बिछी फूल की सेज, बाजती वीणा है सुखकारी !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नालों का संयोग, साँझ का समय, घना जङ्गल है,
ऊँचे-नीचे खोह कगारे, निर्जन बीहड़ थल है।
रह रह कर सौरभ समीर में हैं बन-पुष्प उड़ाते,
ताप-तप्त जन यहाँ क्यों न आकर क्षण एक जुड़ाते?

सन्ध्या समय चतुर्दिक से बहु हर्ष-निनाद सुनाते,
विविध रूप-रंगों के पक्षी झुंड-झुंड मिल आते;
बैठ पल्लवों पर सब मिल कर गान मनोहर गाते,
अद्भुत वाद्य-यन्त्र पादप को हैं प्रति दिवस बनाते।

प्रातःकाल ममत्वहीन वे कहाँ-कहाँ उड़ जाते,
जग को हैं अनित्य मेले का रोचक पाठ पढ़ाते;
यह सब देख नहीं क्यों मन में उत्तम भाव समाते?
लोग यहाँ पर बैठ घड़ी भर क्यों न सीख कुल जाते?

अति निस्तब्ध निशीथ, तमावृत मौन प्रकृति-कुल सारा,
शान्त गगन में झिलमिल करते हैं नित नीरव तारा,
निद्रित दिशा, समीर, सुकोमल, उदयोन्मुख हिमकर है,
क्या सब शोक भुलाने का यह नहीं एक अवसर है?

चारों ओर तुषार-धवल पर्वत चुपचाप खड़ा है,
प्रकृति-मुकुर सा एक सरोवर उसके मध्य जड़ा है;
तट पर एक शिला सुन्दर है, बैठ यहाँ यदि जाते—
तो क्या एक घड़ी न किसी के दृग, मन, प्राण जुड़ाते?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लीची, श्रीफल, सेब, आम, बादाम, दाख, बेदाना,
रस से भरे विविध मेवों की रुचि-आकृति है नाना;
सब प्रभु की अद्भुत रचना का दृश्य विचित्र दिखाते,
दिव्य अयाचित दया प्राप्त कर क्यों न लोग सुख पाते ?

गिरि, मैदान, नगर, निर्जन में एक भाव में मातीं,
सरल कुटिल अति तरल मृदुल गति से बहु रूप दिखातीं;
अस्थिर समय समान प्रवाहित ये नदियाँ कुछ गातीं,
चलीं कहाँ से, कहाँ जा रहीं, क्यों आयीं, क्यों जातीं ?

[पथिक से]

स्वगत

अतिशय चपल रजत सम उज्ज्वल
निर्झर-तनया के तट-पथ पर,
युवक बसन्त भाव भारान्वित,
दृग के अर्द्ध कपाट बन्द कर,
विचरण में था निरत एक दिन,
मन्द-मन्द धर चरण-कोकनद,
मानो द्रुम-दल-लसित शैल पर,
क्षीर कान्तिमय नूतन नीरद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सोच रहा था भूतल पर यह,
किसकी प्रेम-कथा है चित्रित ?
अम्बर के उर में किस कवि के,
हैं गम्भीर भाव एकत्रित ?
किसकी सुख-निद्रा का मधुमय,
स्वप्न-खंड है विशद विश्व यह ?
जग कितना सुन्दर लगता है,
ललित खिलौनों का सा संग्रह !

बार-बार अंकित करता है,
ऋतुओं में सविता किसकी छवि ?
मोहित होता है मन ही मन,
देख-देख किसकी क्रीड़ा कवि ?
वह कौन रूप का आकर,
जिसके मुख की कान्ति मनोहर,
देखा करती हैं सागर की
व्यग्र तरंगें उचक-उचक कर ?

घन में किस प्रियतम से चपला
करती है विनोद हँस-हँस कर
किसके लिए उषा उठती है
प्रति दिन कर शृंगार मनोहर ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मंजु मोतियों से प्रभात में,
तृण का मरकत सा सुन्दर कर;
भर कर कौन खड़ा करता है,
जिसके स्वागत को प्रतिवासर ?

प्रातःकाल समीर कहाँ से,
उपवन में चुपचाप पहुँच कर,
क्या सन्देश सुना जाता है.
घूम-घूम प्रत्येक द्वार पर ?
फूलों के आनन अचरज से,
खुल पड़ते हैं जिसे श्रवण कर,
थामे नहीं हँसी थमती है,
मुँह-मुँदते ही नहीं जन्म भर ?

मारुत जिसके पास राज-कर
फूलों से परिमल का, लेकर
जाता है प्रति दिवस कहाँ वह
करता है निवास ? राजेश्वर ?
किसके गान-यन्त्र हैं पक्षी,
नभ, निकुंज, सर में, पर्वत पर,
मधुर गीत गाते रहते हैं,
इधर-उधर विचरण कर दिन भर ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैदानों की ओर, घाटियों
के पथ से, अविराम चपल गति
पवन घनों को हाँक रहा है,
पाकर के किस प्रभु की अनुमति ?
ढके हुए हैं गिरि-शिखरों को,
प्रचुर तुहिन पय-फेन-राशि सम,
शैल देख खिलखिला रहा है,
मानो कोई दृश्य मनोरम।

अति उत्त ंग, उर्मिमय फेनिल,
सिन्धु शापवश मानो जम कर,
हिम-पर्वत बन गया यकायक
तृण तरु गुल्म लता हैं जलचर !
किसके चिन्ता-शमन अलौकिक
मधुर गान से कान लगा कर,
ज्ञान भूल कर निज तन का क्यों,
है नीरव निस्तब्ध महीधर ?

सत्पुरुषों के मनोभाव-सा
सरल, विमल. निरलस, कलरवमय,
अपनी ही गति में निमग्न है,
धारागत, उज्ज्वल, फेनिल पय।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पुष्प - भार से अवनत पौदों
से सुखप्रद सुवास संचय कर,
आती हैं मारुत की लहरें,
मन्थर गति से मनोव्यथा हर।

ये अति सघन सुपल्लव-शोभित
तरुवर, शीतल छाँह बिछाकर;
सद्गृहस्थ सम अतिथि के लिए,
रहते हैं प्रस्तुत निशि - वासर;
खेतों में, वन में, प्रान्तर में,
इतने लाल फूल हैं पुष्पित,
नार लगा करके बन-बन में,
मानों है अनार आनन्दित।

इन्द्र - धनुष खेला करता है,
झरनों से हिल-मिल कर दिन भर,
तृप्त नहीं होते हैं दृग यह
दृश्य देख अनिमेष अवनि पर,
होता है इस नील झील में,
श्यामा का आगमन सुखद अति,
जल-क्रीड़ा करते हैं तारे,
लहरें लेता है रजनीपति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हरियाली में भाँति भाँति के
राशि-राशि हैं फूल विमिश्रित ;
गिरि समूह के अन्तराल में
विस्तृत वनस्थली है चित्रित ,
भ्रम होता है रंग-बिरंगी
हरित धरा को देख यकायक ,
पुरुष-प्रिया की सूख रही हैं
ये मानों साड़ियाँ असंख्यक ।

मैदानों में दूर-दूर तक
कितना आकर्षण है संचित !
नहीं दृष्टि में भर सकता है
इतना है सौन्दर्य संकुलित ;
सन्ध्या आने ही वाली है
कैसा है यह समय मनोहर !
हिम-शिखरों को सजा रहे हैं
सविता स्वर्ण-मुकुट पहना कर ।

इस विशाल तरुवर चिनार की
अति शीतल छाया सुखदायक ,
चरण चूमने को आतुर-सी
पहुँची है गिरि की काया तक ;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हिम शृंगों को छोड़ रही हैं
दिनकर की किरनें क्षण-क्षण पर ;
तिरती हैं वे घन-नौका पर
नभ-सागर में विविध रूप धर।

मुदित, सहस्र-रश्मि ने पकड़ा
चिर-सुहागिनी सन्ध्या का कर
लौट रहा है मानो चेतन
जगत अंशुधर को पहुँचा कर ;
बच्चों के अनुराग - डोर से
आकर्षित हो खग पतंग - चय,
वेगवन्त हैं नीड़ - दिशा में
विविध रूप - ध्वनि रंग-ढंग-मय।

ढोरों के पीछे चरवाहे
घर की ओर विपिन के पथ पर,
देते हैं सूचना साँझ की
मुरली के मधुमय स्वर में भर ;
वरह-भार से नत मलाह-गण
चले गुणवती नौका लेकर,
कोई गुणवन्ती इनको भी
खींच रही है क्या पद-पद पर ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ये अनुराग भरे धरणीधर,
ग्राम-निकर, ये शान्ति-समन्वित ;
प्रिय की सुधि सी ये सरिताएँ,
ये कानन कान्तार, सुसज्जित,
हरित भूमि के मध्य विमल पथ,
पुष्पित लता, प्रसून मनोरम,
बाट जोहते हैं, सुख लेकर
घर के बाहर, मूक मित्र सम।

यहाँ नहीं हैं राग-द्वेष से
हृदय तरंगित होने का भय,
यहाँ कपट-व्यवहार नहीं है
और नहीं जन-जन पर संशय ;
यहाँ नहीं मन में जगती है
प्रतिहिंसा की वृत्ति भयावह ;
केवल है सौन्दर्य, शान्ति सुख !
कैसी है रमणीय जगह यह !

जग को आँखों से ओझल कर,
बरबस मेरी दृष्टि उठा कर,
झिलमिल करते हुए गगन में
तारों के पथ पर पहुँचा कर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

करता है संकेत देखने
को किस का सौन्दर्य मनोरम,
आकर के चुपचाप कहीं से
यह संध्या का तम, अति प्रिय तन ?

हा ! यह फूल किसी दिन अपनी
अनुपम सुन्दरता से गर्वित,
आया था जग में उमंग से
किसी वासना से आकर्षित ;
पर देखा क्या ? क्षण भंगुर सुख
आशा और मृत्यु का संगर,
मुरझ गया होकर हताश अति
सौरभ का निःश्वास छोड़कर ।

जग क्या है ? किसलिए बना है ?
क्यों है यह इतना आकर्षक ?
कब से हूँ सचेत, पर फिर भी
इसका खुला रहस्य न अब तक,
मैं जिसके निर्मल प्रकाश में
करता हूँ दिन-रात अतिक्रम,
ज्योति-मूल वह कहाँ प्रकट है ?
बाहर है किसका छाया-तम ?

[स्वप्न से]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पश्चात्ताप

सरके कपोल के उजाले में दिवस, रात
केशों के अँधेरे में निकल भागी पास से ;
सन्ध्या वालपन की, युवापन की आधी रात
मैंने काट डाली क्षण भंगुर विलास से ;
श्वेत केश झलके प्रभात की किरन से तो,
आँखें खुलीं काल के कुटिल मन्द हास से ;
मेरे करुणानिधि का आसन गरम होगा,
कौन जाने कब मेरे शीतल उसास से ?

पुष्प-विकाश

एक दिन मोहन प्रभात ही पधारे, उन्हें
देख फूल उठे हाथ पाँव उपवन के ;
खोल-खोल द्वार फूल घर से निकल आये ,
देख के लुटाये निज कोष सुवरन के ,
वैसी छवि और कहीं, ढूँढ़ने सुगन्ध उड़ी ;
पायी न, लजा के रही बाहर भवन के ,
मारे अचरज के खुले थे सो खुले ही रहे,
तब से मुँदे न मुख चकित सुमन के ।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आकांक्षा

होते हम हृदय किसी के विरहाकुल जो,
होते हम आँसू किसी प्रेमी के नयन के,
पूरे पतझड़ में बसन्त की बयार होते,
होते हम जो कहीं मनोरथ सुजन के;
दुख-दलितों में हम आशा की किरन होते,
होते पछतावा अविवेकियों के मन के;
मानते विधाता का बड़ा ही उपकार हम,
होते गाँठ के धन, कहीं जो दीन जन के।

[मानसी से]

अन्वेषण

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुञ्ज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में;
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था!
मैं था तुझे बुलाता संगीत में, भजन में।
मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू,
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बन कर किसी के आँसू मेरे लिए बहा तू,
मैं देखता तुझे था माशूक के बदन में।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दुख से रुला-रुलाकर तूने मुझे चिताया,
मैं मस्त हो रहा था तब हाय! अंजुमन में।
बाजे बजा-बजाकर मैं था तुझे रिझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितों के संगठन में।

मैं था विरक्त तुझसे जग की अनित्यता पर,
उत्थान भर रहा था तब तू किसी पतन में।
तू बीच में खड़ा था बेबस गिरे हुओं के,
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरन में?

तूने दिये अनेकों अवसर न मिल सका मैं,
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में।
हरिचन्द्र और ध्रुव ने कुछ और ही बताया,
मैं तो समझ रहा था तेरा प्रताप धन में।

तेरा पता सिकन्दर को मैं समझ रहा था,
पर तू बसा हुआ था फ़रहाद कोहकन में।
'क्रीसस की हाय' में था करता विनोद तू ही,
तू ही विहँस रहा था महमूद के रुदन में।

प्रह्लाद जानता था तेरा सही ठिकाना,
तूही मचल रहा था मंसूर की रहन में।
आखिर चमक पड़ा था गान्धी की हड्डियों में,
मैं तो समझ रहा था सुहराब पील-तन में।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कैसे तुझे मिलूँगा, जब भेद इस क़दर है ?
हैरान होके भगवन ! आया हूँ मैं सरन में ।
तू रूप है किरन में, सौन्दर्य है सुमन में;
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में ।

ज्ञान हिन्दुओं में, ईमान मुसलिमों में,
विश्वास क्रिश्चियन में, तू सत्य है सुजन में ।
हे दीनबन्धु ! ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू,
देखूँ तुझे दृगों में, मन में तथा बचन में ।

कठिनाइयों, दुखों का इतिहास ही सुयश है,
मुझको समर्थ कर तू बस कष्ट के सहन में ।
दुख में न हार मानूँ, सुख में तुझे न भूलूँ,
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में ।

[स्फुट]

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्री रामनरेश त्रिपाठी के ग्रन्थ

कविता—पथिक, मिलन, स्वप्न, मानसी।

नाटक—जयन्त, प्रेमलोक।

उपन्यास—लक्ष्मी, सुभद्रा।

कहानी—तरकस, स्वप्नों के चित्र।

अनुवाद—कौन जागता है (नाटक), इतना तो जानो (राजनीति)।

सम्पादन—कविता कौमुदी ६ भाग, रामचरितमानस, हिन्दुस्तानी-कोष, घाघ-भड्डुरी, ग्राम-गीत, भूषण-ग्रन्थावली, हिन्दी-ज्ञानोदय।

संग्रह—सुकवि-कौमुदी, नीति रत्नमाला, चिन्तामणि।

अन्य—तुलसीदास और उनकी कविता, हिन्दी पद्य-रचना, माड़वार के मनोहर गीत।

बाल-साहित्य—बालकथा कहानी, मोहनमाला, बताओ तो जानें, नेता पहेली, गुपचुप कहानियाँ, कविता-विनोद आदि।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री गोपालशरणसिंह

श्री गोपालशरण सिंह द्विवेदी युग के प्रधान कवियों में हैं। उन्होंने उस समय से लिखना आरम्भ किया था, जिस समय खड़ी बोली कविता की रूपरेखा निर्धारित हो रही थी। "सिर ऊँचा कर मुख खोलै है। मीठी सी बानी बोलै है' वाली कोकिल का वर्णन करने में जब ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली अपने पैरों पर खड़ी होने जा रही थी, उस समय श्री गोपाल शरणसिंह ने उसकी उँगली पकड़ कर उसका पथ-प्रदर्शन किया था। द्विवेदी युग में श्री गोपालशरणसिंह ने जिस प्रकार की काव्य-रचना की थी, उसमें यद्यपि भावों की व्यंजना अत्यन्त तीव्र नहीं थी, तथापि भाषा का रूप उन्होंने स्पष्ट रख दिया था। इस क्षेत्र में उनकी समानता बाबू मैथिली शरण गुप्त से ही की जा सकती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सन् १९२९ में इनकी कविताओं का संग्रह 'माधवी' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसमें भावों के शब्द चित्र बड़े ही मनोरम हैं। इसमें कवि अधिकतर भक्त के रुप में है और वह श्रीकृष्ण, ब्रज, यमुना आदि पर अपने सरस-हृदय की भाव-धारा प्रवाहित करता है। ये रचनाएँ घनाक्षरी छन्द में हैं। खड़ी बोली में घनाक्षरी छन्द इतने मनोहर रूप में अभी तक नहीं आया। भावना और कल्पना समान रूप से मिलकर कवि के अन्तर्गत का चित्र खींच देती है :—

जाऊँ मैं कहाँ गोपाल शरण तुम्हारी छोड़ ?
नाम के ही नाते अब मुझे अपनाओ तुम।

कादम्बिनी में कवि प्रकृति-प्रेमी के साथ ही साथ रहस्यवादी भी हो गया है। उसके भावों का प्रदर्शन सांकेतिक भाषा में है। कवि प्रकृति के प्रांगण में विहार कर चाँदनी की छटा देखता है और कभी 'उपवन में पहुँच कर आमोद-प्रमोद करता है। वह भाषा के साथ भावों का भी शासक है और कविता उसकी 'नीति' सी हो गई है, जिसका प्रयोग वह कौशल के साथ करता है।

श्री गोपालशरणसिंह की सामाजिक कविताओं का संग्रह 'मानवी' नाम से प्रकाशित हो गया है। उसका परिचय देते हुए महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंह ने लिखा है :—

"कवि के इस काव्य में नारी-हृदय की चिरकालीन विश्व वेदना का स्वर गूँज रहा है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

स्वयम् कवि ने अपनी मानवी का परिचय इस प्रकार दिया है :—

युग युग के अगणित क्लेशों की
तू है करुण कहानी।

काव्य की अभिव्यंजना के साथ सरलता श्री गोपालशरणसिंह की कविता का विशेष गुण है। प्रोड़स हिन्दी साहित्य सम्मेलन, वृन्दावन के अखिल भारतीय हिन्दी कवि-सम्मेलन के सभापति के पद से उन्होंने जो भाषण दिया था, उसमें उनके विचार कविता के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट हैं :—

"सरस तो कविता को होना ही चाहिये, किन्तु उसे सरल भी होना चाहिये। रस उसका प्राण है तो सरलता उसका सबसे बड़ा गुण। सरलता के अभाव में सरसता भी मुँह छिपा लेती है।"

श्री गोपालशरणसिंह हिन्दी के जागरूक कवि हैं। श्री मैथिलीशरण गुप्त के समान ही उन्होंने समय की गति के साथ काव्यगत दृष्टिकोण में भी परिवर्तन किया है। 'मानवी' के बाद उन्होंने 'ज्योतिष्मती' में समय की रहस्यवादी विचार-धारा के अनुकूल "अज्ञेय, अचिन्त्य और अप्रमेय' का अनुसन्धान किया है। 'ज्योतिष्मती' के प्रारम्भ में उनका निवेदन है कि 'सांसारिक उत्पीड़न और दुःख दैन्य का ध्यान आते ही अदृष्ट करुणामय की ओर चित्त अनायास आकर्षित हो जाता है और कुछ कहने के लिये हृदय आतुर हो उठता है। ऐसी रचनाओं में वे व्यञ्जना का प्रयोगविशेष रूप से करते हैं। सारी कविताएँ 'तुम' 'मैं' और 'संसार' में विभाजित है। इस संग्रह की कुछ रचनाएँ १९२३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

और १६२६ के बीच की हैं, शेष इधर की। पहले काल की रचनाएँ अधिकतर लम्बी हैं, परवर्ती काल की रचनाएँ गीतात्मक और छोटी हैं।

'ज्योतिष्मती' के बाद का संग्रह है 'संचित'। इस संग्रह में सन् १६१४ से लेकर १६३६ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश है। इसमें अनेक कविताएँ 'माधवी' के पहले की भी हैं जो स्वर्गीय पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन से लिखी गई थीं। यह संग्रह ठाकुर साहब की काव्य साधना का इतिहास कहा जा सकता है। इस संग्रह से कवि की कविता की गति-विधि के समझने में पाठकों को सुविधा होगी। आगे चलकर कवि की जो कविताएँ 'आधुनिक कवि (४)' में संग्रहीत हुईं, वे इसी संग्रह में अपनी आधार भूमि खोज सकीं।

'सागरिका' में कवि के एकान्त जीवन की अभिव्यक्ति है। प्रकृति और जीवन का जो सामञ्जस्य ग्रामों में दिखलाई पड़ता है उसका प्रतिविम्ब 'सागरिका' में देखा जा सकता है। काव्य की दृष्टि से ठाकुर गोपालशरणसिंह की सर्वोत्कृष्ट पुस्तक 'ज्योतिष्मती' है। सम्भव है प्रकृति और जीवन का सामञ्जस्य जो आजकल कवि के द्वारा अनुभव किया जा रहा है. किसी खंड काव्य या महाकाव्य को जन्म दे सके।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नन्दलाल

बोलो श्याम ! गोकुल की तंग गलियों में घूम,
रंग था जमाता कौन बालक अहीर का ?
याद क्या नहीं है तुम्हें प्यारे ग्वाल-बाल संग,
नित्य गेंद खेलना कलिन्दजा के तीर का ?
किसके विरह में बताओ बनता था सिन्धु,
व्रज-बनिताओं के विलोचन के नीर का ?
चाहे दधि क्षीर का चुराना तुम्हें भूल जाय,
भूल सकता है क्या चुराना कभी चीर का ?

जाना भी तुम्हें था तो भुलाना था हमें न कभी,
क्या नहीं तुम्हें था फिर लौट कर आना भी ?
तुमने सभी से यहाँ प्रीति थी बढ़ायी खूब,
क्या नहीं तुम्हें था फिर उसको निभाना भी ?
तुम हो निठुर सदा हमको खिझाते रहे,
सीख गये अब तो तुम हमें कलपाना भी।
तोड़ोगे कहो, क्या निज नाता व्रज-वासियों से,
छोड़ोगे भला क्या नन्दलाल कहलाना भी ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कैसे ब्रजवासी भूल जायँ वे तुम्हारे मंजु
मोर-पंख, लकुट, रुचिर बनमाल को ?
जुल मराल का जो मान हरती थी सदा,
कैसे भूल जायँ वे तुम्हारी उस चाल को ?
तुम्हीं बतलाओ करें कौन वे उपाय, हाय !
किस भाँति तोड़ें वे तुम्हारे प्रेम-जाल को ?
ब्रज को भले ही भूल जाओ, ब्रजचन्द तुम,
कैसे ब्रज भूले निज प्यारे नन्दलाल को ?

शिशु

धारा प्रेम सागर की लायी शिशु को है यहाँ
विधि ने बनाया क्या खिलौना एक न्यारा है ?
न्यारा सब जग से है उसका अनूप रूप,
विकसित, कंज के समान अति प्यारा है ;
प्यारा वह मंजुता की मूर्ति-सा किसे है नहीं,
व्योम से गिरा हुआ क्या कोई लघु तारा है ?
तारा लोक-लोचन का, सबका दुलारा मानो,
माता के सनेह ने सगुण रूप धारा है ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

छहर रही है एक सुन्दर नवीन छटा,
सुमन - समान - सुकुमार अंग—अंग में;
आज कुछ और, कल और ही है मंजु छवि,
मानो रँगता है कोई नित्य नये रंग में;
जानें जिन्हें जानने का दावा रहता है सदा,
शिशु है निमग्न किस भाव की तरंग में ?
सोच-सोच हार गया समझ न पाया कभी,
उछल रहा है वह कौन सी उमंग में ?

आया अनजान साथ लाया कुछ भी है नहीं,
नेक भी किसी से नहीं जान पहचान है;
रहता चकित है विलोक यह लोक नया,
उसे यह विश्व इन्द्रजाल के समान है;
भाता है जगत का न कोई भी पदार्थ उसे,
भाता जननी का बस उर-रस-पान है;
सोकर ही समय बिताता अधिकांश शिशु,
करता किसी का मानो दिन-रात ध्यान है!

जिसको विलोक मुग्ध होता है सदैव मन,
मुख पर छाया कैसा विमल प्रकाश है!
मन्द-मन्द मंजुल मधुर मुसकान द्वारा,
करता प्रकट शिशु अतुल हुलास है;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देख-देख चारों ओर खोजता किसे है वह,
मन में छिपाये कौन मंजु अभिलाष है ?
कोमल-कुसुम जैसे नन्हें-नन्हें अंग में ही,
छिपा सब शक्तियों का चरम विकास है।

शिशु के शरीर की परम लघुता को देख,
होता मन में भ्रम, है या नहीं तन है।
मानो रूप-घन से चुआ है सुधा बिन्दु एक,
किम्बा प्रेम-पादप का सुन्दर सुमन है।
धन की उसे हो नेक कामना कभी क्यों भला ?
वह तो स्वयम् ही बड़ा अनमोल धन है;
करता सदैव वह शासन जगत का है,
किन्तु बल क्या है ? अहो, केवल रुदन है।

परम अशक्त असहाय वह ज्ञात हुआ,
किन्तु अब कैसा रंग शिशु ने जमाया है;
परवश होकर भी वश में भी सभी को किया,
मानो वह कोई नया जादू सीख आया है;
अनायास उसने चुराया चित्त जग का है,
प्रेम-वश लाल और हीरा कहलाया है;
माता के उदर से निकल कर आया, पर
उर में उसी के स्नेह-रूप में समाया है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वह है अकाम, दाम से है उसे काम नहीं.
भाता जिसे जो है उसे देता वही नाम है,
उसकी उपासना में लीन रहता है लोक,
किन्तु वह वासना-विहीन अविराम है;
देश-देश ग्राम-ग्राम धाम-धाम में है वह,
उसका प्रभाव सब ठौर "वसु" याम है;
प्रकटे उसी के रूप में थे घनश्याम-राम,
परम ललाम शिशु ईश अभिराम है।

[माधवी से]

चाँदनी

थी खिली पलास द्रुमाली-सी,
सन्ध्या सुहासिनी की लाली;
मिल गयी प्रभाली थी दोनों,
आने वाली जाने वाली,

हो गयीं दिशाएँ रंजित-सी,
इस अरुण मनोज्ञ प्रभाली से;
पर निकल पड़ी काली रजनी,
सन्ध्या की सुन्दर लाली से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिनमणि की जो किरणें दिन में;
थीं फैली जग के कण-कण में;
वे ही जाकर निशि के नभ में,
हँसती-सी थीं तारागण में।

इस निभृत निशा की गोदी में,
सो रहे सृष्टि के कण-कण थे;
बस तारागण ही आपस में,
कर रहे मौन सम्भाषण थे।

खेलने लगा सुन्दर शशि-शिशु,
मणि-जटित गगन के आँगन में;
तारावलि उसकी प्रभा देख,
खिल गयी मुदित होकर मन में।

उसने सारे जगती तल पर,
निज कीर्त्ति-कौमुदी छिटकायी;
चढ़ किरण-जाल के वाहन पर,
वह हंस-वाहिनी-सी आयी।

बसुधा से आकर लिपट गयी,
वह बाल-सखी-सी मन भायी।
मिल कर उससे पुलकित सी हो,
वसुधा मन ही मन मुसकायी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अब प्रकृति नटी की रंग-भूमि,
सज गयी खूब है मन भायी;
है शशि की किरणों ने उस पर,
चाँदनी-चाँदनी फैलायी।

क्या शुभ्र-हासिनी शरद् घटा,
अवनी पर आकर है छायी?
अथवा गिर कर नभ से कोई,
सुर बाला हुई धराशायी?

सोती अबलाओं के समीप,
वह वातायन से जाती है;
प्रिय शशि समान उनके सुन्दर,
मुख चूम-चूम सुख पाती है।

निर्जन-विपिनों में घुस-घुस कर,
किसकी तलाश वह करती है?
वह देश-देश में ग्राम-ग्राम में
किसके लिए विचरती है?

नभ से अवनी पर आने से,
मानो वह भी थक जाती है;
श्रम-स्वेद कणों से ओस-बिन्दु,
धरणी तल पर टपकाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सागर सरिता की लहरों से,
हिल-मिलकर क्रीड़ा करती है,
वन, उपवन और सरोवर में,
वह प्रभा-पुंज सी भरती है।

शैलों के शिखरों पर बैठी,
वह मन्द-मन्द मुसकाती है;
मृदु पवन विकम्पित द्रुमावली,
झुक-झुक कर चँवर चलाती है।

जिसके समीप वह जाती है,
उसका स्वरूप धर लेती है;
है बहुरूपिणी-बाल छवि-सी'
छवि-छवि में छवि भर देती है।

लेटी सुमनों की शय्या पर,
वह है वियोगिनी बाला-सी,
वसुधा के वक्षस्थल पर है,
शुचि, स्वेत सुमन की माला-सी

प्रतिविम्बित चंचल जल में हो,
शशि-प्रभा और भी खिलती है,
सागर की ऊँची लहरों पर,
चाँदनी चाँद से मिलती है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

परबत की चोटी पर चढ़ कर,
वह करती कौन इशारा है ?
सन्देश भेजती क्या कुछ वह,
शशि को किरणों के द्वारा है ?

फूलों के मृदु उर में घुसकर,
निज जीवन भूला करती है ;
हिलते कोमल किसलय-दल पर,
वह भूला, भूला करती है।

नक्षत्रों से ज्योतित नभ की,
वह हैं अति सुन्दर, छाया-सी,
संसार अचेतन है जिसमें,
है परब्रह्म की माया-सी।

[कादम्बिनी से]

परदे में

हैं परदे में बालाएँ,
मृदु, मंजुल मणि-मालाएँ ;
सुरराज - सदन - सी सुन्दर,
हैं सजी रंग - शालाएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ज्योतियाँ रुचिर रत्नों की,
हैं जगमग - जगमग जगती ;
परदे के भीतर प्रति दिन,
हैं इन्द्र - सभाएँ लगती ।

शशि की कल कोमल किरणों,
हैं कभी न बाहर आतीं ।
परदे के भीतर ही वे,
हैं सुधा - वारि बरसातीं ।

परदे में सुख का घर है,
सम्पदा स्वयम् है चेरी ;
पर दुःख शोक भी हर दम,
हैं वहाँ लगाते फेरी ।

जीवन, जीवन के सुख को,
अपने ही से खोता है,
मृदुता का कठोरता से,
दुख मूल मिलन होता है ।

कितनी ही कोमल कलियाँ,
मुँह को भी खोल न पातीं ;
हो दलित कठोर करों से,
मुरझा कर हैं झड़ जातीं ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शुचि ज्ञान - भानु उर में ही,
है सदा छिपा रह जाता;
उसका प्रकाश अवनी में,
है कभी न होने पाता।

गंगा - यमुना की धारा,
बसती सूने सदनों में;
परदे के भीतर सागर
लहराता है नयनों में।

कोयलें कैद पिंजर में,
सिर - धुन धुन कर हैं रोती;
सुमनों की सुख - शय्या पर,
हैं विरह - व्यथाएँ सोती।

परदे के भीतर कोई,
है कभी न जाने पाता;
तो भी ईर्षानल जाकर,
है कोमल हृदय जलाता।

लोनी - लोनी लतिकाएँ,
दुख के तुषार की मारी,
हैं नित्य सूखती जाती,
भोली - भाली बेचारी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हैं गूँज रहीं परदे में
कितनी ही क्लेश - कथाएं ;
महलों के भीतर छिप कर,
रहती हैं विविध व्यथाएँ ।

सब साथ-साथ रहती हैं,
अबलाएँ और बलाएँ ;
शशि की कमनीय कलाएँ ;
घन की घनघोर घटाएँ ।

कहती हैं करुण कहानी,
रोकर आँखें बेचारी ;
उत्तर उनको मिलता है,
लाचारी है लाचारी ।

लज्जा का निठुर करों से,
है गला दबाया जाता ,
सुख से वंचित बेचारा,
है प्यार ठोकरें खाता ।

करुणा की करुण पुकारें,
दीवारों से टकरातीं ;
मन की सब अभिलाषाएँ,
मन में ही हैं रह जातीं ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हैं झूम रहीं मस्ती से,
    मस्ती की ही तसवीरें,
परदे में सिर धुनती हैं,
    कितनी फूटी तक़दीरें।

काजल के काले - काले,
    गिरते हैं आँसू - मोती;
घर के भीतर कानों में,
    हैं दीप - शिखाएँ रोती।

उर - तन्त्री के तारों को,
    हैं बारम्बार बजाती;
अन्तर्वेदना व्यथा के,
    हैं नीरव गाने गाती।

रजनी में दिन रहता है,
    दिन में रजनी है काली;
परदे में छिपी हुई है,
    दुनिया ही एक निराली।

[मानवी से]

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अकेला

मैं हूँ यहाँ अकेला
नाथ ! तुम्हारे आने की ही,
देख रहा बेला।
जहाँ तुम्हारा वास स्थल है
वहीं वास था मेरा,
कितने सुन्दर स्वर्ग धाम से,
नीचे मुझे धकेला ?
किस प्रकार फिर स्वयम् तुम्हारे,
निकट पहुँच मैं पाऊँ ?
लगा तुम्हारे आँगन में है
नक्षत्रों का मेला।
घन की सघन घटा से आवृत
रवि का रूप दिखाया,
खेल चुके बहु बार जिसे तुम,
वही खेल फिर खेला।
अन्धकार में रहते - रहते
ऊब गया मन मेरा,
ज्योतिर्मय ! चिर तममय गृह में,
आकर करो उजेला।

[ज्योतिस्मती से]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जीने की अभिलाषा

यत्न से छिपाये चिरकाल से थे जिसे,
कह दिया उसे मूक वेदना की भाषा ने।
किस भाँति शान्ति हमें मिलती कदापि भला ?
लेने दिया चैन नहीं उर की पिपासा ने।
कुहकिनी आशा ये हमारा साथ छोड़ दिया,
पर अवलम्ब दिया आकर निराशा ने।
कैसा है बनाया हमें अजब तमाशा एक,
जीने की हमारी इस तुच्छ अभिलाषा ने!

[संचिता से]

सागरिका

सागर के उर पर नाच-नाच; करती हैं लहरें मधुर गान!
जगती के मन को खींच खींच,
निज छवि के रस से सींच सींच,
जल-कन्यायें भोली अजान। सागर के० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रातः समीर से हो अधीर.
छू कर पल पल उल्लसित तीर,
कुसुमावलि-सी पुलकित महान। सागर के० ॥
संध्या से पाकर रुचिर रंग,
करती सी शत सुर-चाप भंग,
हिलते तरु-नव-दल के समान। सागर के० ॥
करतल गत कर नभ की बिभूति,
पाकर शशि से सुषमानुभूति,
तारावलि सी मृदु दीप्तिमान। सागर के० ॥
तन पर शोभित नीला दुकूल,
हैं छिपे हृदय में भाव-फूल,
आकर्षित करती हुई ध्यान। सागर के० ॥
हैं कभी मुदित हैं कभी खिन्न,
हैं कभी मिली, हैं कभी भिन्न,
हैं एक सूत्र में बँधे प्राण।
सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान !

[सागरिका से]

श्री गोपालशरणसिंह के ग्रन्थ

काव्य ग्रन्थ—माधवी, कादम्बिनी, मानवी, ज्योतिष्मयी, संचिता, सागरिका, विश्वगीत (अप्रकाशित)।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नवीन धारा (पूर्व)

श्री जयशंकर 'प्रसाद'

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री जयशंकर 'प्रसाद'

श्री जयशंकर 'प्रसाद' अब हमारे साथ नहीं हैं। वे हमारे साहित्य के सब से अधिक गम्भीर कवि थे।

प्रसादजी ने साहित्य के अनेक अंगों की वृद्धि की है। कविता, नाटक, उपन्यास और कहानी उनके प्रिय विषय थे। कविता के क्षेत्र में उन्होंने जीवन के रहस्यपूर्ण तथ्यों को रहस्यपूर्ण भाषा ही में प्रदर्शित किया है। किन्तु कविता से अधिक सफलता उन्हें नाटक क्षेत्र में मिली। वे प्रथमतः ऐतिहासिक नाटक-कार हैं। नाटक में मनोवैज्ञानिक संघर्ष की आवश्यकता होती है, पात्र के चरित्र-दर्शन में भावों की जटिल शृंखला भी स्पष्टता के साथ सामने

आती है प्रसादजी की इसी शैली का प्रभाव उनकी कविता पर भी पड़ा है। वे कहीं-कहीं बहुत मनोवैज्ञानिक हो गये हैं। भावना की चरम अभिव्यक्ति अनेक रूपों में हमारे सामने आती है। जिस प्रकार सूरदास ने अपने भ्रमरगीत में वियोग-शृंगार के प्रत्येक संचारी भाव को गोपिका के उपालम्भ में सजाया है, उसी प्रकार प्रसादजी ने भी हृदय के भावों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

की चित्रावली प्रस्तुत कर दी है। कामायनी में रूपक के आवरण को हटा कर देखिये तो हृदय और मस्तिष्क के सम्बन्ध की अनेक परिस्थितियाँ केवल भावों के विकास में ही समझायी गयी हैं। 'श्रद्धा' और 'इड़ा' तो उनमें मुख्य ही हैं।

प्रसाद का गाम्भीर्य कहीं-कहीं अस्पष्ट है जैसे वह मौन तपस्वी है। प्रसाद का दार्शनिक और कवि अनेक स्थानों पर अलग हो गया है। अतः कहीं-कहीं उनकी पंक्तियाँ कोरी दार्शनिकता से भरी हैं! कामायनी का 'संघर्ष' इसका उदाहरण है।

प्रसादजी ने जहाँ कहीं गीतों की सृष्टि की है, वहाँ वे पूर्ण सफल हैं। एक भावना का संगीतमय आरोह और अवरोह वे भली भाँति जानते हैं और इसीलिये भाव-चित्रण में वे सिद्धहस्त हैं। उनकी भावुकता जब रहस्यवाद से मिलती है तब वह एक सन्देशवाहिनी हो जाती है। वे भावों के जाल में नहीं उलझते, प्रत्युत वे भावना के पीछे संकेत को श्रेष्ठ मानते हैं।

प्रसादजी उपन्यास-लेखक और कहानीकार भी हैं। वहाँ भी वे आध्यात्मिकता को नहीं भूलते और भावना में बहुत गूढ़ हो जाते हैं। कल्पना में उन्हें अधिक क्षमता नहीं। कल्पना-जगत में वे चित्रों की सृष्टि करते हैं, पर उन्हें सजा नहीं सकते। सम्भवतः उनकी दार्शनिकता उन्हें ऐसा करने से रोकती है।

हिन्दी साहित्य का यह महान् दार्शनिक कवि—जिसे जीवन के बाद अपने ग्रन्थ 'कामायनी' पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त करने का गौरव मिला, कार्तिक शुक्ल १२ सम्वत् १९९४ को दिवंगत हो गया।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गीता

बीती विभावरी जाग री !
अम्बर-पनघट में डुबो रही—
तारा-घट ऊषा नागरी।
खग-कुल कुल-कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो, यह लतिका भी भर लायी—
मधु मुकुल नवल रस-गागरी।
अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये—
तू अब तक सोयी है आली !
आँखों में भरे विहाग री !

———

लहर

कितने दिन जीवन जल-निधि में—
विकल अनिल से प्रेरित होकर,
लहरी, कूल चूमने चल कर,
उठती गिरती-सी रुक-रुक कर,
सृजन करेगी छवि गति-विधि में !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

कितनी मधु संगीत-निनादित,
गाथाएँ निज ले चिर-संचित.
तरल तान, गावेगी वंचित !
पागल-सी इस पथ निरवधि में

दिनकर, हिमकर, तारा के दल.
इसके मुकुर-वक्ष में निर्मल,
चित्र बनायेंगे निज चंचल !
आशा की माधुरी अवधि में।

———

वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे ?
जब सावन-घन-सघन बरसते—
इन आँखों की छाया भर थे !

सुर-धनु-रंजित नव-जलधर से
भरे, क्षितिज-व्यापी अम्बर से,
मिले चूमते जब सरिता के
हरित कूल युग मधुर अधर थे।

प्राण पपीहा के स्वर वाली,
बरस रही थी जब हरियाली,
रस-जलकन मालती मुकुल से—
जो मदमाते गन्ध विधुर थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चित्र खींचती थी जब चपला,
नील मेघ-पट पर वह विरला,
मेरी जीवन-स्मृति के जिसमें—
खिल उठते वे रूप मधुर थे।

[लहर से]

स्मृति

किसकी निर्जन रजनी में,
तारों के दीप जलाये,
स्वर्गंगा की धारा में,
मिलने की भेंट चढ़ाये।

शशि-मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाये,
जीवन की गोधूली में,
कौतूहल के तुम आये!

मैं अपलक इन नयनों से
निरखा करता उस छवि को,
प्रतिभा-डाली भर लाता,
कर देता दान सुकवि को।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

घन में सुन्दर बिजली-सी,
बिजली में चपल चमक-सी,
आँखों में काली पुतली,
पुतली में श्याम झलक-सी

प्रतिमा में सजीवता-सी,
बस गयी सुछवि आँखों में,
थी एक लकीर हृदय में,
जो अलग रही लाखों में।

तुम रूप-रूप थे केवल,
या हृदय रहा भी तुमको ?
जड़ता की सब माया थी,
चैतन्य समझकर हमको।

विष-प्याला जो मैं पी लूँ,
वह मदिरा हो जीवन में,
सौन्दर्य्य पलक-प्याले का,
क्यों प्रेम बना है कन में ?

छलना थी फिर भी, मेरा
इसमें विश्वास घना था,
उस माया की छाया में,
कुछ सच्चा स्वयम् बना था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कामना - सिन्धु लहराता
छवि-पूर्ण प्रभा थी छायी;
रत्नाकर बनी चमकती,
मेरे शशि की परछाईं।

लहरों में प्यास भरी थी,
थे भँवर-पात्र भी खाली;
मानस का सब रस पीकर,
लुढ़का दी तुमने प्याली!

सुख-आहत, शान्त - उमंगें
बेगार साँस ढोने में,
यह हृदय समाधि बना है,
रोती करुणा कोने में!

अभिलाषाओं की करवट,
फिर सुप्त व्यथा का जगना,
सुख का सपना हो जाना।
भीगी पलकों का लगना।

इस विकल वेदना को ले,
कितने सुख को ललकारा?
वह एक अबोध अकिंचन,
बेसुध चैतन्य हमारा!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

उस पार कहाँ फिर जाऊँ ?
तन के मलीन अंचल में.
जीवन का लोभ न है वह,
वेदना छद्म के छल में।

वेदना विकल फिर आयी
मेरी, चौदहों भुवन में;
सुख कहीं न दिया: दिखायी,
विश्राम कहाँ जीवन में ?

उच्छ्वास और आँसू में
विश्राम थका सोता है;
रोयी आँखों में निद्रा
बन कर, सपना सोता है।

[आँसू से]

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शिल्प सौन्दर्य

कोलाहल क्यों मचा हुआ है ? घोर यह
महाकाल का भैरव गर्जन हो रहा;

अथवा तोपों के मिस से हुँकार यह
करता हुआ पयोधि प्रलय का आ रहा।
नहीं; महा संघर्षण से हो कर व्यथित
हरि-चन्दन दावानल फैलाने लगा।
आर्य-मन्दिरों के सब ध्वंस बचे हुए
धूल उड़ाने लगे, पड़ी जो आँख में
उनके—जिनसे वे थे खुदवाये गये—
जिससे देख न सकते वे कर्त्तव्य-पथ।

दुर्दिन जल-धारा न सम्हाल सकी अहो !
बालू की दीवाल मुग़ल साम्राज्य की।

आर्य शिल्प के साथ गिरा वह भी जिसे
अपने कर से खोदा आलमगीर ने;
मुग़ल महीपति के अत्याचारी, अबल
कर कँपने से लगे; अहो। यह क्या हुआ ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुग़ल अदृष्टाकाश-मध्य, अति तेज से,
धूमकेतु-से सूर्यमल्ल प्रमुदित हुए;
सिंह-द्वार है खुला दीन के मुख सदृश ;
प्रतिहिंसा-पूरित वीरों की मंडली
व्याप्त हो रही है दिल्ली के दुर्ग में;
मुग़ल महीपों के आवासादिक बहुत
टूट चुके हैं, आम ख़ास के अंश भी,
किन्तु न कोई सैनिक भी सम्मुख हुआ।

रोषानल से ज्वलित नेत्र भी लाल हैं,
मुख-मंडल भीषण प्रतिहिंसा-पूर्ण है।

सूर्यमल्ल, मध्याह्न सूर्य सम चंड हो,
मोती मस्जिद के प्रांगण में हैं खड़े;
भीम गदा है कर में, मन में वेग है ;
उठा क्रुद्ध हो, सबल हाथ ले कर गदा,
छज्जे पर जा पड़ा, काँप कर रह गयी,
मर्मर की दीवाल, अलग टुकड़ा हुआ;
किन्तु न फिर वह चला चंड कर नाश को।
क्यों जी, यह कैसा निष्क्रिय प्रतिरोध है?

सूर्यमल्ल रुक गये; हृदय भी रुक गया;
भीषणता रुक कर करुणा-सी हो गयी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कहा—नष्ट कर देंगे यदि विद्वेष से—
इसको, तो फिर एक वस्तु संसार की,
सुन्दरता से पूर्ण सदा के लिए ही
हो जायेगी लुप्त, बड़ा आश्चर्य है !
आज काम वह किया शिल्प-सौन्दर्य ने,
जिसे न करती कभी सहस्रों वक्तृता।
अति सर्वत्र अहो, वर्जित है, सत्य ही,
कहीं वीरता बनती इससे क्रूरता।
धर्म जन्य प्रतिहिंसा ने क्या-क्या नहीं
किया, विशेष अनिष्ट शिल्प-साहित्य का ?
लुप्त हो गये कितने ही विज्ञान के
साधन, सुन्दर ग्रन्थ जलाये वे गये ;
तोड़े गये अतीत-कथा-मकरन्द को
रहे छिपाये शिल्प-कुसुम जो शिला हो ;
हे भारत के ध्वंस-शिल्प ! स्मृति से भरे,
कितनी बर्षा शीतातप तुम सह चुके !
तुमको देख करुण इस वेश में,
कौन कहेगा, कब किसने निर्मित किया ?
शिल्पपूर्ण पत्थर कब मिट्टी हो गये ?
किस मिट्टी की ईंटें हैं बिखरी हुई ?

[कानन कुसुम से]

— ——

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

खोलो द्वार

शिशिर-कणों से लदी हुई कमली के भींगे हैं सब तार,
चलता है पश्चिम का मारुत, लेकर शीतलता का भार;

भींग रहा है रजनी का वह, सुन्दर कोमल कवरी-भार,
अरुण किरणसम कर से छू लो, खोलो प्रियतम खोलो द्वार।

धूल लगी है पद काँटों से बिंधा हुआ, है दुःख अपार;
किसी तरह से भूला-भटका आ पहुँचा हूँ तेरे द्वार;

डरो न इतना, धूल धूसरित होगा नहीं तुम्हारा द्वार.
धो डाले हैं इनको प्रियवर, इन आँखों से आँसू ढार।

मेरे धूलि लगे पैरों से, इतना करो न घृणा-प्रकाश.
मेरे ऐसे धूल-कणों से कब, तेरे पद को अवकाश?

पैरों ही से लिपटा-लिपटा कर लूँगा निज पद निर्धार;
अब तो छोड़ नहीं सकता हूँ पाकर प्राप्य तुम्हारा द्वार।

सु-प्रभात मेरा भी होवे, इस रजनी का दुःख अपार—
मिट जावे जो तुमको देखूँ, खोलो प्रियतम! खोलो द्वार।

[झरना से]

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इड़ा

'किस गहन गुहा से अति अधीर'
झंझा प्रवाह से निकला यह जीवन. विक्षुब्ध महा समीर
ले साथ विकल परमाणु-पुंज नभ, अनिल, क्षिति और नीर ?
भयभीत, सभी को भय देता, भय की उपासना में विलीन;
प्राणी कटुता को बाँट रहा, जगती में करता अधिक दीन।
निर्माण और प्रतिपद विनाश में दिखलाता अपनी क्षमता
संघर्ष कर रहा सा जब से, सब से विराग, सब पर ममता।
अस्तित्व चिरन्तन धनु से कब यह छूट पड़ा है विषम तीर
किस लक्ष्य-भेद को शून्य चीर ?

देखे मैंने वे शैल-श्रृंग
जो अचल हिमानी से रंजित, उन्मुक्त, उपेक्षा भरे तुंग
अपने जड़ गौरव के प्रतीक, वसुधा का कर अभिमान भंग।
अपनी समाधि में रहे सुखी बह जाती हैं नदियाँ अबोध
कुछ स्वेद-बिन्दु उसके लेकर, वह स्तिमित-नयन गत शोक,क्रोध।
स्थिर मुक्ति, प्रतिष्ठा गति मैं वैसी चाहता नहीं इस जीवन की;
मैं तो अबाध गति मरुत सदृश, हूँ चाह रहा अपने मन की
जो चूम चला जाता अग-जग, प्रति पग में कम्पन की तरंग
वह ज्वलनशील गतिमय पतंग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जीवन निशीथ के अन्धकार !

तू नील तुहिन जल-निधि बनकर, फैला है कितना वारपार ?
कितनी चेतनता की किरनें, हैं डूब रहीं ये निर्विकार ?
कितना मादक तम, निखिल भुवन, भर रहा भूमिका में अभंग ?
तू मूर्तिमान हो छिप जाता, प्रतिपल के परिवर्त्तन अनङ्ग ।
ममता की क्षीण अरुण रेखा, खिलती है तुझमें ज्योति-कला,
जैसे सुहागिनी की उर्मिल अलकों में कुंकुम चूर्ण भला ।
रे चिर-निवास-विश्राम, प्राण के मोह-जलद-छाया उदार
माया-रानी के केश-भार ।

जीवन निशीथ के अन्धकार ।

तू घूम रहा अभिलाषा के नव ज्वलन - धूम - सा दुर्निवार,
जिसमें अपूर्ण लालसा, कसक, चिनगारी-सी उठती पुकार ।
यौवन - मधुबन की कालिन्दी, बह रही चूम कर सब दिगन्त,
मन-शिशु की क्रीड़ा-नौकाएँ, बस, दौड़ लगाती हैं अनन्त ।
कुहुकिनि अपलक-दृग के अंजन ! हँसती तुझमें सुन्दर छलना,
धूमिल रेखाओं से सजीव, चंचल चित्रों की नव-कलना ।
इस चिर प्रवास श्यामल पथ में, छायी पिक-प्राणों की पुकार
बन नील प्रतिध्वनि नभ अपार ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नीरव की प्राणों की पुकार
मूर्छित जीवन-सर निस्तरंग, नीहार घिर रहा था अपार;
निस्तब्ध अलस बन कर सोयी, चलती न रही चंचल बयार।
पीता मन मुकुलित कंज आप, अपनी मधु बूँदें मधुर मौन;
निस्वन दिगन्त में रहे रुद्ध; सहसा बोले मनु, "अरे कौन?
आलोकमयी स्मिति चेतनता आयी यह हेमवती छाया?"
तन्द्रा के स्वप्न तिरोहित थे, बिखरी केवल उजली माया।
वह स्पर्श दुलार-पुलक से भर, बीते युग को उठता पुकार
वीचियाँ नाचतीं बार बार।

प्रतिभा प्रसन्न मुख सहज खोल
वह बोली, "मैं हूँ इड़ा, कहो तुम कौन यहाँ पर रहे डोल?"
नासिका नुकीली के पतले पुट फरक रहे कर स्मित अमोल।
"मनु मेरा नाम सुनो बाले! मैं विश्व-पथिक सह रहा क्लेश।"
"स्वागत! पर देख रहे हो तुम, यह उजड़ा सारस्वत प्रदेश?
भौतिक हलचल से यह चंचल हो उठा देश ही था मेरा;
इसमें अब तक हूँ पड़ी इसी आशा से आये दिन मेरा।"

× × ×

"मैं तो आया हूँ देवि, बता दो जीवन का क्या सहज मोल,
भय के भविष्य का द्वार खोल।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हँस पड़ा गगन वह शून्य लोक

जिसके भीतर बस कर उजड़े, कितने ही जीवन मरण शोक;
कितने हृदयों के मधुर मिलन, क्रन्दन करते वन बिरह-कोक।
ले लिया भार अपने सिर पर, मनु ने यह अपना राज काज;
हँस पड़ी उषा प्राची नभ में, देखे नर अपना राज-काज।
चल पड़ी देखने वह कौतुक, चंचल मलयाचल की बाला,
लख लाली प्रकृति कपोलों में, गिरता तारा दल मतवाला।
उन्निद्र कमल-कानन में होती थी मधुपों की नोक-झोंक;
वसुधा विस्मृत थी सकल शोक।

"जीवन निशीथ का अन्धकार

भग रहा क्षितिज के अंचल में, मुख आवृत कर तुमको निहार;
तुम इड़े! उषा सी आज यहाँ, आयी हो बन कितनी उदार!
कलरव कर जाग पड़े मेरे, ये मनोभाव सोये बिहंग,
हँसती प्रसन्नता चाव भरी, बनकर किरनों की सी तरंग।
अवलम्ब छोड़ कर औरों का, जब बुद्धिवाद को अपनाया
मैं बढ़ा सहज, तो स्वयम् बुद्धि को मानो आज यहाँ पाया।
मेरे विकल्प संकल्प बनें जीवन हो कर्मों की पुकार
सुख-साधन का हो खुला द्वार।"

[कामायनी से]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री जयशंकर 'प्रसाद' के ग्रन्थ

नाटक—सज्जन, प्रायश्चित्त कल्याणी-परिणय, एक घूँट, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, राज्यश्री।

काव्य—कामायनी, आँसू, लहर, कानन-कुसुम, महाराणा का महत्व, प्रेम-पथिक, चित्राधार, करुणालय, झरना।

उपन्यास—कंकाल, तितली, इरावती।

कहानी-संग्रह—छाया, आकाशदीप, इन्द्रजाल, प्रतिध्वनि, आँधी।

आलोचना—काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध।

————

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

श्री 'निराला' दार्शनिक कलाकार हैं। अद्वैतवाद की कठिन और सुसंस्कृत विचार-धारा का प्रकाशन 'निराला' की कविता में बड़ी सफलता पूर्वक हुआ है। विचार-धारा की जटिलता के कारण इनकी कविता अनेक स्थानों पर जटिल और अस्पष्ट हो गयी है। कहीं-कहीं विचार-तारतम्य का पता भी नहीं चलता, पर जिस भाव की व्यंजना 'निराला' की कविता में होती है, वह भाव बड़ा ही विशद और महत्व-पूर्ण होता है।

'निराला' का पोषण वंग-संस्कृति में हुआ है, अतः वहाँ की कला का प्रभाव पूर्ण रूप से कवि पर है। कवि ने अपने भावों की विरलता के कारण छन्द को भी विरल और मुक्त बना दिया है। पुराने कवि और आचार्यों के काव्य में यह परिवर्तन असह्य-सा हो गया है, पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कवि के विचार स्वातन्त्र्य और भाव की उत्कृष्टता ने कवि को पराजित नहीं होने दिया। माइकेल मधुसूदनदत्त ने 'मेघनाद वध' लिखकर जिस प्रकार बंग साहित्य को आन्दोलित कर दिया था उसी प्रकार 'निराला' का मुक्तवृत इस समय हिन्दी साहित्यिकों को अस्थिर बना रहा है।

'निराला' के सौन्दर्य दर्शन की दृष्टि बहुत दूर तक जाती है। वह केवल प्रकृति के क्षेत्र में ही सीमित नहीं हैं, वह मानव जगत में भी सौन्दर्य देखती है। जहाँ वह मानव जगत में सौन्दर्य खोजती है, वहां वह शरीर सौन्दर्य को स्पष्ट करती है। कहीं कहीं वह सौन्दर्य नग्न भी हो जाता है पर उसमें अश्लीलता की भावना नहीं आती। ऐसे पार्थिव सौन्दर्य से केवल कवि की भावना की तृप्ति हो जाती है उसके पीछे कोई संकेत नहीं है। उसने वर्णनात्मक शैली में भी काव्य सौन्दर्य और ओज प्रदर्शित किया है। इस प्रकार की शैली में तुलसीदास और 'राम की शक्ति पूजा' का नाम लिया जा सकता है।

'निराला' उपन्यासकार और कहानी लेखक भी हैं। इस कला का प्रभाव उनकी कविता पर पड़ा है। उन्होंने कुछ घटनाओं को लेकर भी काव्य रचना की है। वहाँ वर्णनात्मकता इतिवृत्तात्मक ही होकर रह गयी है।

'निराला' के गीत अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। वे भावना में ही गीतिमय नहीं हैं, पर शब्दावली में भी गीतात्मक हैं। 'निराला' की बहुव्यापी कला हिन्दी में वांछनीय है, यद्यपि उनका मुक्त वृत्त-अभी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तक आलोचकों को सन्तुष्ट और शान्त नहीं कर सका। उनकी दार्शनिकता मुक्त-वृत्त के दोष को बहुत कम कर देती है।

इधर 'निराला' जी ने अपने चारों ओर की परिस्थितियों पर भी दृष्टिपात करते हुए वस्तुवाद पर पूर्णरूप से अपना ध्यान दे दिया है। सम्भवतः वे मार्क्सवाद से भी बहुत प्रभावित हुए हैं। इस प्रकार की रचनाओं में काव्य के आदर्श बहुत पीछे छूट गये हैं। अब केवल सिद्धान्तवाद और वस्तुओं का वास्तविक चित्रण ही 'निराला' जी की कविता का विशेष गुण रह गया है। उनके नवीन काव्य-संग्रह 'अणिमा' और 'कुकुरमुत्ता' इसी दृष्टिकोण से लिखे गये हैं। हिन्दी के अधिकांश आलोचकों को निराला जी का यह परिवर्तन मान्य नहीं है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बादल राग

झूम झूम मृदु गरज गरज घन घोर
राग अमर ! अम्बर में भर निज रोर !

झर झर झर निर्झर गिरि सर में,
घर मरु, तरु मर्मर सागर में,
सरित—तड़ित् गति चकित पवन में
मन में. विजय गहन कानन में,
आनन आनन में रव घोर कठोर
राग अमर ; अम्बर में, भर निज रोर

अरे वर्ष के हर्ष
बरस तू बरस बरस रस धार !
पार ले चल तू मुझको,
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन भैरव संसार !
उथल पुथल कर हृदय—
मचा हलचल—
चल रे चल—
मेरे पागल बादल !

धँसता दलदल,
हँसता है नद खल् खल्
बहता कहता कुलकुल कलकल कलकल !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

देख दूख नाचता हृदय
बहने को महा विकल - बेकल
इस मरोर से — इसी शोर से—
सघन, घोर, गुरु, गहन रोर से
मुझे गगन का दिखा सघन वह छोर !
राग अमर ! अम्बर में भर निज रोर !

———

जागो फिर एक बार

जागो फिर एक बार !
प्यारे, जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें
अरुण पंख तरुण किरण
खड़ी खोल रही द्वार—
जागो फिर एक बार !
आँखें अलियों सी
किस मधु की गलियों में फँसी,
बन्द कर पाँखें
पी रही हैं मधु मौन
अथवा सोयी कमल कोरकों में ?
बन्द हो रहा गुंजार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जागो फिर एक बार !
अस्ताचल ढले रवि,
शशि छवि विभावरी में
चित्रित हुई है देख
यामिनी-गन्धा जगी,
एक टक चकोर-कोर दर्शन प्रिय,
आशाओं भरी मौन भाषा बहुभावमयी
घेर रही चन्द्र को चाव से,
शिशिर भार व्याकुल कुल
खुले फूल झुके हुए,
आयी कलियों में मधुर
मद उर यौवन उभार—
जागो फिर एक बार !
पिउ रव पपीहे प्रिय बोल रहे
सेज पर विरह विदग्धा वधू
याद कर बीती बातें, रातें मन मिलन की
मूँद रहीं पलकें चारु,
नयन जल ढल गये,
लघुतर कर व्यथा भार—
जागो फिर एक बार !
सहृदय समीर जैसे
पोंछो प्रिय नयन नीर,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शयन शिथिल बाहें
भर स्वप्निल आवेश में,
आतुर उर-वसन मुक्त कर दो,
सब सुप्ति सुखोन्माद हो,
छूट छूट अलस
फैल जाने दो पीठ पर
कल्पना से कोमल
ऋजु कुटिल प्रसार कामी केश गुच्छ।
तन मन थक जायँ,
मृदु सुरभि सी समीर में,
बुद्धि बुद्धि में हो लीन,
मन में मन, जी जी में,
एक अनुभव बहता रहे
उभय आत्माओं,
कब से मैं रही पुकार—
जागो फिर एक बार !
उगे अरुणाचल में रवि
आयी भारती रति कवि कंठ में,
क्षण क्षण में परिवर्तित
आयी रात,होते रहे प्रकृति पट,
गया दिन, आयी रात,
गयी रात, खुला दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ऐसे ही संसार के बीते दिन, पक्ष, मास
वर्ष कितने ही हज़ार—
जागो फिर एक बार !

———

तुम और मैं

तुम तुंग हिमालय शृंग, और मैं चंचल-गति सुर-सरिता।
तुम विमल हृदय उच्छ्वास, और मैं कान्त-कामिनी कविता।
तुम प्रेम—और मैं शान्ति
तुम सुरापान-घन-अन्धकार, मैं हूँ मतवाली भ्रान्ति।
तुम दिनकर के खर-किरण-जाल, मैं सरसिज की मुसकान।
तुम वर्षों के बीते वियोग, मैं हूँ पिछली पहचान।
तुम योग—और मैं सिद्धि
तुम हो रागानुग निश्छल तप, मैं शुचिता सरल समृद्धि।
तुम मृदु मानव के भाव, और मैं मनोरंजिनी भाषा।
तुम नन्दन वन-घन-विटप, और मैं सुख-शीतल-तल शाखा।
तुम प्राण—और मैं काया
तुम शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म, मैं मनोमोहिनी माया।
तुम प्रेममयी के कंठहार, मैं वेणी काल नागिनी।
तुम कर-पल्लव झंकृत सितार, मैं व्याकुल विरह रागिनी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुम पथ हो, मैं हूँ रेणु
तुम हो राधा के मनमोहन, हैं उन अधरों की वेणु।
तुम पथिक दूर के श्रान्त, और मैं बाट जोहती आशा।
तुम भवसागर दुस्तार, पार जाने की मैं अभिलाषा।
तुम नभ हो, मैं नीलिमा
तुम शरद सुधाकर कला हास, मैं हूँ निशीथ मधुरिमा।
तुम गन्ध कुसुम कोमल पराग मैं मृदुगति मलय-समीर।
तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष, मैं प्रकृति - प्रेम - जंजीर।
तुम शिव हो, मैं हूँ शक्ति
तुम रघुकुल - गौरव रामचन्द्र, मैं सीता अचला भक्ति।
तुम हो प्रियतम मधुमास, और मैं पिक कल कूजन तान।
तुम मदन - पंचशर हस्त, और मैं हूँ मुग्धा अनजान।
तुम अम्बर, मैं दिग्वसना
तुम चित्रकार घन - पटल श्याम, मैं तड़ित्तूलिका रचना।
तुम रण ताण्डव उन्माद-नृत्य, मैं युवति मधुर नूपुर ध्वनि।
तुम नाद-वेद ओंकार-सार, मैं कवि श्रृंगार-शिरोमणि।
तुम यश हो, मैं हूँ प्राप्ति
तुम कुन्द, इन्दु, अरविन्द शुभ्र, तो मैं हूँ निर्मल व्याप्ति।

[परिमल से]

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गीति

सखि वसन्त आया।
भरा हर्ष बन के मन
नवोत्कर्ष छाया।

किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द वन्दी—
पिक-स्वर नभ सरसाया।

लता मुकुल हार गन्ध भार भर
बही पवन बन्द मन्द मन्दतर
जागी नयनों में वन—
यौवन की माया।

आवृत सरसी उर सरसिज उठे,
केशर के केश कली के छुटे,
स्वर्ण शस्य अंचल
पृथ्वी का लहराया।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भारति, जय, विजय करे !
कनक—शस्य—कमलधरे

लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु अर्थ-भरे।
तरु-तृण-वन-लता वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल - कण
धवल - धार हार गले।
मुकुट शुभ्र हिम - तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख - शतरव - मुखरे।

———

टूटे सकल बन्ध
कलि के, दिशा-ज्ञान-गत हो बहे गन्ध।
रुद्ध जो धार रे
शिखर-निर्झर झरे,
मधुर कलरव भरे
शून्य शतशत रन्ध्र;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रश्मि ऋजु खींच दे
चित्र शत रंग के,
वर्ण - जीवन फले,
जागे तिमिर अन्ध।

———

कैसी बजी बीन ?
सजी मैं दिन-दिन !
हृदय में कौन जो छेड़ता बाँसुरी ?
हुई ज्योत्स्नामयी अखिल माया पुरी,
लीन स्वर-सलिल में मैं बन रही मीन।
स्पष्ट ध्वनि—'आ, धनि, सजी यामिनी भली,
मन्द पद आ बन्द कुंज उर की गली;
मंजु, मधु-गुंजरित कलि दल-समासीन !
देख, आरक्त पाटल-पटल खुल गये,
माधवी के नये खुले गुच्छे नये,
मलिन मन, दिवस-निशि, तू क्यों रही क्षीण ?

[गीतिका से]

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राम की शक्ति-पूजा

निशि हुई विगत, नभ के ललाट पर प्रथम किरण
फूटी रघुनन्द के दृग महिमा - ज्योति - हिरण ;
है नहीं शरासन आज हस्त—तूणीर स्कन्द,
वह नहीं सोहता निविड़ - जटा - दृढ़ मुकुट - बन्ध ;

सुन पड़ता सिंहनाद—रण - कोलाहल अपार,
उमड़ता नहीं मन, स्तब्ध सुधी मैं ध्यान धार ;
पूजोपरान्त जपते दुर्गा, दशभुजा नाम,
मन करते हुए मनन नामों के गुण ग्राम,

बीता वह दिवस, हुआ मन स्थिर इष्ट के चरण,
गहन से गहनतर होने लगा समाराधन।
क्रम क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन चढ़ता गया अर्द्ध निरलस ;

कर - जप पूरा कर एक चढ़ाते इन्दीवर,
निज पुरश्चरण इस भाँति रहे हैं पूरा कर।
चढ़ षष्ट दिवस आज्ञा पर हुआ समाहित मन,
प्रति जय से खिंच खिंच होने लगा महाकर्षण,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

संचित त्रिकुटी पर ध्यान द्विदल देवी-पद पर,
जय के स्वर लगा काँपने थर-थर-थर अम्बर,
दो दिन निष्पन्द एक आसन पर रहे राम,
अर्पित करते इन्दीवर, जपते हुए नाम;

आठवाँ दिवस, मन ध्यान-युक्त चढ़ता ऊपर
कर गया अतिक्रम ब्रह्मा-हरि-शङ्कर का स्तर,
हो गया विजित ब्रह्माण्ड पूर्ण, देवता स्तब्ध;
हो गये दग्ध जीवन तप के समारब्ध;

रह गया एक इन्दीवर, मन देखता—पार
प्रायः करने को हुआ दुर्ग जो सहस्रार,
द्विप्रहर रात्रि, साकार हुई दुर्गा छिपकर,
हँस उठा ले गई पूजा का प्रिय इन्दीवर।

यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नील कमल;
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल,

देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय;
आसन छोड़ना असिद्धि भर गये नयनद्वय :—
"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जानकी ! आह, उद्धार, दुःख, जो न हो सका !"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,

बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युत-गति हतचेतन
राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।
"यह है उपाय "कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन—
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीव नयन।

दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"
कह कर देखा तूणीर ब्रह्म-शर रहा झलक;
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक,

ले अस्त्र वामकर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गये सुमन।
जिस क्षण बँध गया वेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय :—

"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म धन धन्य राम !"
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम!
देखा राम ने—"सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वाम पद असुर-स्कन्ध पर रहा दक्षिण हरि पर;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ज्योतिर्म्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्दस्मित मुख लख हुई विस्व की श्री लज्जित,
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बाँयें, रण - रङ्ग - राग,

मस्तक पर शङ्कर। पद पद्मों पर श्रद्धा भर
श्रीराघव हुत प्रणत मन्द स्वर वन्दन कर।
"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुईं लीन!

[राम की शक्ति पूजा से अनामिका]

———

आत्म-बोध

[१]

जागा, जागा संस्कार प्रबल,
रे गया काम तत्क्षण वह जल,
देखा, वामा वह न थी, अनल प्रतिमा वह;
इस ओर ज्ञान, उस ओर ज्ञान,
हो गया भस्म वह प्रथम भान,
छूटा जग का जो रहा ध्यान, जड़िमा वह।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

[२]

देखा, शारदा नील बसना,
हैं सम्मुख स्वयं श्रृष्टि रशना,
जीवन - समीर - शुचि निःश्वसना, बरदात्री,
वीणा वह स्वयं सुवादित स्वर,
फूटीं तर अमृताक्षर - निर्झर,
यह विश्व हंस, हैं चरण सुघर जिस पर श्री।

[३]

दृष्टि से भारती से बँध कर,
कवि उठता हुआ चला ऊपर;
केवल अंबर—केवल अंबर फिर देखा;
धूमायमान वह घूर्ण्य प्रसर,
धूसर समुद्र शशि - ताराहर,
सूझता नहीं क्या ऊर्ध्व, अधर, क्षर रेखा।

[४]

चमकी तब तक तारा नवीन,
द्युति नील-नील, जिसमें विलीन
हो गईं भारती, रूप - क्षीण महिमा अब,
आभा भी क्रमशः हुई मंद,
निस्तब्ध व्योम - गति रहित छंद;
आनंद रहा, मिट गए द्वंद्व, बंधन सब।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

[५]

थे मुँदे नयन, ज्ञानोन्मीलित,
कलि में सौरभ ज्यों, चित में स्थित;
अपनी असीमता में अवसित प्राणाशय;
जिस कलिका में कवि रहा बंद,
वह आज उसी में खुली मंद,
भारती - रूप में सुरभि - छंद निष्प्रश्रय।

[६]

जब आया फिर देहात्म बोध,
बाहर चलने का हुआ शोध,
रह निर्विरोध गति हुई रोध - प्रतिकूला,
खोलती मृदुल दल बंद सकल
गुदगुदा विपुल धारा अविचल
बह चली सुरभि की ज्यों उत्कल, निःशूला—

[७]

बाजीं बहती लहरें कल कल,
जागे भावाकुल शब्दोच्छल,
गूँजा जग का कानन - मंडल, पर्वत तल;
सूना उर ऋषियों का ऊना
सुनता स्वर, हो हर्षित दूना,
आसुर भावों से जो भूना, था निश्चल।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

[८]

"जागो, जागो, आया प्रभात,
बीती वह, बीती अन्ध रात,
झरता भर ज्योतिर्मय प्रपात पूर्वाचल;
बांधो बांधो किरणें चेतन,
तेजस्वी, हे तमजिज्जीवन,
आती भारत की ज्योतिर्धन महिमाबल।

[तुलसीदास से]

तुम्हें चाहता वह भी सुन्दर

तुम्हें चाहता वह भी सुन्दर !
जो द्वार द्वार फिर कर
भीख माँगता कर फैला कर।
भूख अगर रोटी की ही मिटी,
भूख की जमीन न चौरस पिटी,
और चाहता है वह कौर उठाना कोई,
देखो, उसमें उसकी इच्छा कैसे रोई,
द्वार द्वार फिर कर
भीख मांगता कर फैला कर—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुम्हें चाहता वह भी सुन्दर !
देश का समाज का
कर्णधार हो किसी जहाज़ का
पार करे कैसा भी सागर,
फिर भी रहता है चलना उसे,
फिर भी रहता है पीछे डर,
चाहता वहाँ जाना वह भी
नहीं चलाना जहाज़, नहीं सागर,
नहीं डूबने का भी जहाँ डर।
तुम्हें चाहता है वह, सुन्दर !
जो द्वार द्वार फिर कर
भीख माँगता कर फैला कर।

[अणिमा से]

कुकुरमुत्ता

आया मौसिम खिला फ़ारिस का गुलाब,
बाग़ पर उसका जमा था रोबोदाब,
वहीं गन्दे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से उठा सर ऐंठ कर बोला कुकुरमुत्ता—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"अबे सुन वे, गुलाब,
भूल मत, गर पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैंपीटलिस्ट,

कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम,
हाथ जिसके तू लगा
पैर सर पर रख वह; पीछे को भगा;

जानिब औरत की, मैदाने जंग छोड़,
तबेले को टट्टू जैसे तंग तोड़;
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा,
इसलिए साधारणों से रहा न्यारा;

वरना क्या हस्ती है तेरी, पोच तू,
काँटों से ही है भरा, यह सोच तू;
कली जो चटकी अभी,
सूख कर काँटा हुई होती कभी;

रोज़ पड़ता रहा पानी,
तू हरामी ख़ानदानी,
चाहिए तुझको सदा मेहरुन्निसा,
जो निकाले इत्र-रू ऐसी दिशा;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बहाकर ले चले लोगों को, नहीं कोई किनारा,
जहाँ अपना नहीं कोई भी सहारा;
ख्वाब में डूबा चमकता हो सितारा,
पेट में डँड़ पेलते चूहे, ज़बाँ हर लफ़्ज़ प्यारा;

"देख मुझको, मैं बढ़ा,
डेढ़ बालिश्त और ऊँचा हूँ चढ़ा;
और अपने से उगा मैं,
बिना दाने का चुगा मैं;

क़लम मेरा नहीं लगता,
मेरा जीवन आप जगता;
तू है नक़ली मैं हूँ मौलिक,
तू है बकरा मैं हूँ कौलिक,

तू रँगा और मैं धुला,
पानी मैं तू बुलबुला;
तूने दुनियाँ को बिगाड़ा,
मैंने गिरते से उभाड़ा

तूने रोटी छीन ली, ज़नख़ा बना,
एक की हैं तीन दी मैंने, सुना?
काम मुझ से ही सधा है,
शेर भी मुझ से गधा है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चीन में मेरी नक़ल, छाता बना,
छत्र भारत का वहीं, कैसा तना।
सब जगह, तू देख ले,
आज फिर रूप, पैराशूट ले।

विष्णु का मैं ही सुदर्शन चक्र हूँ—
काम दुनियाँ में पड़ा ज्यों वक्र हूँ—
उलट दे; मैं ही जसोदा की मथानी,
और भी लम्बी कहानी।

सामने जा, कर मुझे बेंड़ा,
देख कैंड़ा—
तीर से खींचा धनुष मैं राम का,
काम का—
पड़ा कंधे पर हूँ हल बलराम का।

सुबह का सूरज हूँ मैं ही,
चाँद मैं ही शाम का।
कलजुगी मैं ढाल,
नाव का मैं तला नीचे और ऊपर पाल।

मैं ही डाँड़ी से लगा पल्ला,
सारी दुनिया तोलती ग़ल्ला
मुझ से मूँछें, मुझ से कल्ला।
मेरे लल्लू, मेरे लल्ला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कहे रुपया या अधन्ना,
हो बनारस या न्यवन्ना,
रूप मेरा मैं चमकता,
गोला मेरा ही बमकता।

लगाता हूँ पार मैं ही,
डुबाता मँझधार मैं ही;
छवे का मैं ही नमूना,
पान हो, मैं ही चूना।

———

गर्म पकौड़ी

गर्म पकौड़ी—
ऐ गर्म पकौड़ी!

तेल की भुनी,
नमक मिर्च की मिली,
ऐ गर्म पकौड़ी!

मेरी जीभ जल गई,
सिसकियाँ निकल रहीं,
लार की बूँदें कितनी टपकीं;
पर दाढ़ तले तुझे दबा ही रक्खा मैंने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कंजूस ने ज्यों कौड़ी—
ऐ गर्म पकौड़ी !

तूने पहले मुझको खींचा,
दिल लेकर फिर कपड़े सा फींचा
तेरे लिए छोड़ी बह्मन की पकाई
मैंने घी कचौड़ी—
ऐ गर्म पकौड़ी !

[कुकुरमुत्ता से]

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के ग्रन्थ

काव्य—अनामिक, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अणिमा, कुकुरमुत्ता ।

उपन्यास—अप्सरा, अलका, निरुपमा, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा ।

कहानी—लिली, सखी ।

निबन्ध—प्रबन्ध पद्म ।

आलोचना - रवीन्द्र कविता कानन, चाबुक ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

श्री सुमित्रानन्दन पन्त प्रकृति के सब से सुकुमार कवि हैं। कविता जैसे इनके हृदय से निर्झरिणी के समान फूट निकली है। इनकी चित्रावली इतनी कोमल और मधुर है कि उस पर हृदय एक बार ही मुग्ध हो जाता है। ऐसा ज्ञात होता है कि कवि की लेखनी राजपूत चित्रकला के चित्रकार की बारीक तूलिका है, जिससे वह भाव के बड़े हृदयग्राही चित्रों में रंग भरता है। खड़ी बोली के परुष रूप को कोमलतम पदावली देने का श्रेय एकमात्र पन्त को है। शब्द-चयन इतना उपयुक्त और भावानुकूल है कि शब्द की ध्वनि में चित्र साकार हो जाता है।

कवि में अनुभूति बहुत ऊँचे दरजे की है। भावों के रूप पर कवि शब्दों का नृत्य उपस्थित करता है। अनन्त सन्देश की व्यञ्जना पन्त की कविता में पद-पद पर लक्षित होती है। प्रकृति का कवि पूर्ण उपासक है। प्रकृति जैसे साकार होकर कविता में बैठ जाती है। दार्शनिक गम्भीरता भावों की सरसता में उपदेश का रूप नहीं लेने पाती। इनका 'मौन निमंत्रण' हिन्दी कविता का अमर वरदान है। इनकी उपमाएँ नवीन और भाव-व्यंजक हैं और वे इनकी शैली में रत्नों की भाँति जड़ी हुई हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पन्त ने इधर जीवन की वास्तविकता की ओर भी ध्यान दिया है। अपनी कल्पना के क्षेत्र से निकल कर उन्होंने संघर्षमय जीवन का स्थूल रूप देखने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार की कविताओं में यद्यपि भाव व्यंजना तो है, पर पदावली का रूप वैसा कोमल नहीं जैसा पहले की कवितात्रों में है। इन्होंने अपने नवीन कविता-संग्रह 'ग्राम्या' में ग्रामीण परिस्थितियों के चित्रण प्रस्तुत किये हैं। कवि ने अपनी अत्यन्त सूक्ष्म और व्यापक दृष्टि से ग्रामीणों के मनोवेगों में प्रवेश करने की चेष्टा की है। उसने उनके बाह्य रूपों का एवम् उनकी गति-विधियों का तो अत्यन्त सजीव भाषा में चित्रण किया है, किन्तु वह उनकी स्वाभाविकता और हृदय-स्पंदन की ध्वनि को आत्मसात् नहीं कर सका। कवि यहाँ चारण हो गया है, द्रष्टा नहीं। वह ग्रामीण घर में मेहमान बन कर गया है, वहाँ का वह परिजन नहीं बन सका। 'ग्राम्या' में कहीं-कहीं मातृभूमि के प्रति भक्ति-भावना भी दृष्टिगत होती है। कवि का यह संकेत आह्लादकारक है।

रोग-शैया छोड़ कर पंत जी आजकल प्रवास-पथ पर हैं। वे दीर्घायु हों, यही हमारी कामना है।

पन्त एक युगान्तकारी कवि हैं और किसी भी साहित्य को उन पर गर्व हो सकता है।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मौन निमन्त्रण

स्तब्ध ज्योत्स्ना में जब संसार
चकित रहता शिशु-सा नादान;
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अजान,
न जाने, नक्षत्रों से कौन,
निमन्त्रण देता मुझको मौन ?

सघन मेघों का भीमाकाश
गरजता है जब तमसाकार;
दीर्घ भरता समीर निःश्वास,
प्रखर झरती जब पावस-धार;
न जाने, तपक तड़ित् में कौन,
मुझे इंगित करता तब मौन ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देख वसुधा का यौवन-भार
गूँज उठता है जब मधु मास;
विधुर-उर के-से मृदु उद्गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्वास;
न जाने, सौरभ के मिस कौन
सँदेशा मुझे भेजता मौन,

क्षुब्ध जल-शिखरों को जब वात
सिन्धु में मथ कर फेनाकार,
बुलबुलों का व्याकुल संसार
बना बिथुरा देती अज्ञात;
उठा तब लहरों से कर, कौन,
न जाने, मुझे बुलाता मौन?

स्वर्ण; सुख, श्री, सौरभ में भोर
विश्व को देती है जब बोर;
विहग-कुल की कल कंठ-हिलोर
मिला देती भू-नभ के छोर;
न जाने, अलस-पलक-दल कौन,
खोल देता तब मेरे मौन?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुमुल-तम में जब एकाकार
ऊँघता एक साथ संसार,
भीरु झींगुर-कुल की झंकार
कँपा देती तन्द्रा के तार;
न जाने, खद्योतों से कौन।
मुझे पथ दिखलाता है मौन ?

कनक-छाया में जब कि सकाल
खोलती कलिका उर के द्वार,
सुरभि-पीड़ित मधुपों के बाल
तड़प बन जाते हैं गुंजार,
न जाने, ढुलक ओस में कौन,
खींच लेता मेरे दृग मौन ?

बिछा कार्यों का गुरुतर भार;
दिवस को दे सुवर्ण-अवसान,
शून्य शैय्या में श्रमित अपार,
जुड़ाती जब मैं आकुल प्राण,
न जाने, मुझे स्वप्न में कौन,
फिराता छाया-जग में कौन ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

न जाने कौन, अये द्युतिमान !
जान मुझको अबोध, अज्ञान ,
सुझाते हो तुम पथ अनजान
फूँक देते छिद्रों में गान ;
अहे, सुख-दुख के सहचर मौन !
नहीं कह सकती तुम हो कौन ?

[पल्लव से]

गुंजन

तुम्हारी आँखों का आकाश ,
सरल आँखों का नीलाकाश
खो गया मेरा खग अनजान ,
मृगेक्षिणि ! इनमें खग अज्ञान ।
देख इनका चिर करुण प्रकाश,
अरुण कोरों में उषा-विलास,
खोजने निकला निभृत निवास,
प्रिये पल्लव-प्रच्छाय-निवास,
न जाने ले क्या-क्या अभिलाष,
खो गया बाल विहग नादान ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुम्हारे नयनों का आकाश,
सजल, श्यामल, अकूल आकाश,
गूढ़, नीरव गम्भीर प्रसार
न गहने का तृण का आधार;
बसायेगा कैसे संसार!
प्राण! इसमें अपना संसार!
न इनका ओर-छोर रे पार,
खो गया वह नव-पथिक अजान!

———

मधुवन

आज नव मधु की प्रात,
झलकती नभ पलकों में प्राण!
मुग्ध यौवन के स्वप्न समान,
झलकती, मेरी जीवन-स्वप्न-प्रभात!
तुम्हारी मुख-छवि सी रुचिमान;
आज लोहित मधु प्रात,
व्योम-लतिका में छायाकार
खिल रही नव-पल्लव-सी लाल,
तुम्हारे मधुर कपोलों पर सुकुमार
लाज का ज्यों मृदु किसलय-जाल!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

न जाने कौन, अये द्युतिमान !
जान मुझको अबोध, अज्ञान,
सुझाते हो तुम पथ अनजान
फूँक देते छिद्रों में गान;
अहे, सुख-दुख के सहचर मौन !
नहीं कह सकती तुम हो कौन ?

[पल्लव से]

गुंजन

तुम्हारी आँखों का आकाश,
सरल आँखों का नीलाकाश
खो गया मेरा खग अनजान,
मृगेक्षिणि ! इनमें खग अज्ञान ।
देख इनका चिर करुण प्रकाश,
अरुण कोरों में उषा-विलास,
खोजने निकला निभृत निवास,
प्रिये पल्लव-प्रच्छाय-निवास,
न जाने ले क्या-क्या अभिलाष,
खो गया बाल विहग नादान ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुम्हारे नयनों का आकाश,
सजल, श्यामल, अकूल आकाश,
गूढ़, नीरव गम्भीर प्रसार
न गहने का तृण का आधार ;
बसायेगा कैसे संसार !
प्राण ! इसमें अपना संसार !
न इनका ओर-छोर रे पार,
खो गया वह नव-पथिक अजान !

———

मधुवन

आज नव मधु की प्रात,
झलकती नभ पलकों में प्राण !
मुग्ध यौवन के स्वप्न समान,
झलकती, मेरी जीवन-स्वप्न-प्रभात !
तुम्हारी मुख-छवि सी रुचिमान ;
आज लोहित मधु प्रात,
व्योम-लतिका में छायाकार
खिल रही नव-पल्लव-सी लाल,
तुम्हारे मधुर कपोलों पर सुकुमार
लाज का ज्यों मृदु किसलय-जाल !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आज उन्मद मधु प्रात,
गगन के इन्दीवर से नील
झर रही स्वर्ण-मरंद समान,
तुम्हारे शयन-शिथिल सरसिज उन्मील
छलकता ज्यों मदिरालस, प्राण !
आज स्वर्णिम मधु प्रात,
व्योम के विजन कुंज में प्राण !
खुल रही नवल गुलाब समान,
लाज के विनत वृन्त पर ज्यों अभिराम
तुम्हारा मुख – अरविन्द सकाम।
प्रिये मुकुलित मधु प्रात,
मुक्त नभ-वेणी में सोभार
सुहाती रक्त-पलाश समान;
आज मधुवन मुकुलों में झुक साभार
तुम्हें करता निज विभव प्रदान।

— ——

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक तारा

नीरव सन्ध्या में प्रशान्त
डूबा है सारा ग्राम-प्रान्त ;
पत्रों के आनत अधरों पर, सो गया निखिल वन का मर्मर,
ज्यों वीणा के तारों में स्वर ;
खग-कूजन भी हो रहा लीन, निर्जन गो-पथ अब धूलि-हीन ;
धूसर भुजंग-सा जिह्म, क्षीण।
झींगुर के स्वर का प्रखर तीर, केवल प्रशान्ति को रहा चीर,
सन्ध्या-प्रशान्ति को कर गँभीर ;
इस महाशान्ति का उर उदार, चिर आकांक्षा की तीक्ष्ण धार,
ज्यों वेध रही हो आर-पार।
अब हुआ सान्ध्य-स्वर्णाभलीन,
सब वर्ण वस्तु से विश्व हीन ;
गंगा के चल जल में निर्मल, कुम्हला किरणों का रक्तोत्पल,
है मूँद चुका अपने मृदु दल ;
लहरों पर स्वर्ण-रेख सुन्दर, पड़ गयी नील, ज्यों अधरों पर,
अरुणाई प्रखर शिशिर से डर ;
तरु-शिखरों से वह स्वर्ण-विहग, उड़ गया, खोल निज पंख सुभग,
किस गुहा-नीड़ में रे किस मग ?
मृदु-मृदु स्वप्नों से भर अंचल, नव नील नील, कोमल-कोमल,
छाया तरु-वन में तम श्यामल !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पश्चिम नभ में हूँ रहा देख
उज्वल, अमन्द नक्षत्र एक—
अकलुष, अनिन्द्य नक्षत्र एक, ज्यों मूर्तिमान ज्योतित विवेक,
उर में हो दीपित अमर टेक;
किस स्वर्णाकांक्षा का प्रदीप, वह लिये हुए, किसके समीप?
मुक्तालोकित ज्यों रजत-सीप!
क्या उसकी आत्मा का चिर-धन, स्थिर, अपलक-नयनों का चिन्तन
क्या खोज रहा वह अपनापन?
दुर्लभ रे, दुर्लभ अपनापन, लगता यह निखिल विश्व निर्जन,
वह निष्फल-इच्छा से निर्धन।

आकांक्षा का उच्छ्वसित वेग
मानता नहीं बन्धन-विवेक।
चिर आकांक्षा से थर्-थर्, उद्वेलित रे, अहरह सागर,
नाचती लहर पर हहर लहर;
अविरत-इच्छा में ही नर्तन, करते अबाध रवि, शशि उडुगण,
दुस्तर आकांक्षा का बन्धन;
उडु, क्या जलते प्राण विकल? क्या नीरव नीरव नयन सजल?
जीवन निसंग रे व्यर्थ-विफल!
एकाकीपन का अन्धकार, दुस्सह है इसका मूक-भार,
इसके विषाद का रे, न पार!

× × × ×

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चिर अविचल पर तारक अमन्द !
जानता नहीं वह छन्द-बन्ध ;
वाह रे ! अनन्त का मुक्त-मीन, अपने असंग-सुख में विलीन,
स्थित निज स्वरूप में चिर नवीन ;
निष्कम्प शिखा सा वह निरुपम, भेदता जगत-जीवन का तम,
वह शुद्ध, प्रबुद्ध, शुक्र, वह सम !
गुंजित अलि-सा निर्जन अपार, मधुमय लगता घन-अन्धकार,
हलका एकाकी व्यथा-भार !
जगमग-जगमग नभ का आँगन, लद गया कुन्द कलियों से घन,
वह आत्म और यह जग-दर्शन।

[गुंजन से]

बापू के प्रति

तुम मांस-हीन, तुम रक्त-हीन,
हे अस्थि शेष ! तुम अस्थि-हीन,
तुम शुद्ध-बुद्ध आत्मा केवल,
हे चिर पुराण ! हे चिर नवीन !
तुम पूर्ण इकाई जीवन की,
जिसमें असार भव-शून्य लीन;
आधार अमर, होगी जिस पर
भावी की संस्कृति समासीन !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुम मांस तुम्हीं हो रक्त-अस्थि—
निर्मित जिनसे नवयुग का तन,
तुम धन्य ! तुम्हारा निःस्व-त्याग
है विश्व-भोग का वर साधन।
इस भस्म-काम तन की रज से
जग पूर्ण-काम नव जग-जीवन,
बीनेगा सत्य-अहिंसा के
ताने-बानों से मानवपन !

सदियों का दैन्य-तमिस्र तूम,
धुन तुमने कात प्रकाश-सूत,
हे नग्न ! नग्न-पशुता ढंक दी
बुन नव संस्कृत मनुजत्व पूत;
जग पीड़ित छूतों से प्रभूत,
छू अमृत स्पर्श से, हे अछूत !
तुमने पावन कर, मुक्त किये
मृत संस्कृतियों के विकृत भूत !

सुख-भोग खोजने आते सब,
आये तुम करने सत्य - खोज,
जग की मिट्टी के पुतले जन,
तुम आत्मा के, मन के मनोज !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर
चेतना, अहिंसा नम्र ओज,
पशुता का पंकज बना दिया
तुमने मानवता का सरोज!

पशु-बल की कारा से जग को
दिखलायी आत्मा की विमुक्ति,
विद्वेष, घृणा से लड़ने को
सिखलाई दुर्जय प्रेम युक्ति;
वर श्रम-प्रसूति से की कृतार्थ
तुमने विचार-परिणीत उक्ति,
विश्वानुरक्त हे अनासक्त!
सर्वस्व-त्याग को बना भुक्ति!

सहयोग सिखा शासित-जन को
शासन का दुर्वह हरा भार,
होकर निरस्त्र, सत्याग्रह से
रोका मिथ्या का बल-प्रहार;
बहु भेद-विग्रहों में खोयी
ली जीर्ण जाति क्षय से उबार;
तुमने प्रकाश को कह प्रकाश,
औ' अन्धकार को अन्धकार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उर के चरखे में कात सूक्ष्म
युग-युग का विषय-जनित विषाद.
गुंजित कर दिया गगन जग का
भर तुमने आत्मा का निनाद;
रँग-रँग खद्दर के सूत्रों में,
नव जीवन आशा, स्पृहा, ह्लाद,
मानवी-कला के सूत्रधार !
हर, दिया यन्त्र-कौशल-प्रवाद ।

जड़वाद जर्जरित जग में तुम
अवतरित हुए आत्मा महान
यन्त्राभिभूत युग में करने
मानव-जीवन का परित्राण;
बहु छाया-बिम्बों में खोया
पाने व्यक्तित्व प्रकाशवान,
फिर रक्त-मांस प्रतिमाओं में
फूँकने सत्य से अमर प्राण !

संसार छोड़ कर ग्रहण किया
नर-जीवन का परमार्थ-सार,
अपवाद बने, मानवता के
ध्रुव नियमों का करने प्रचार;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हो सार्वजनिकता जयी, अजित !
तुमने निजत्व निज दिया हार,
लौकिकता को जीवित रखने
तुम हुए अलौकिक, हे उदार !

मंगल-शशि-लोलुप मानव थे
विस्मित, ब्रह्मांड-परिधि विलोक;
तुम केन्द्र खोजने आये तब
सब में व्यापक, गत राग-शोक;
पशु पक्षी पुष्पों से प्रेरित
उद्दाम-काम जन - क्रान्ति रोक,
जीवन-इच्छा को आत्मा के
वश में रख, शासित किये लोक !

था व्याप्त दिशावधि ध्वान्त भ्रान्त,
इतिहास विश्व-उद्भव प्रमाण,
बहु हेतु, बुद्धि जड़ वस्तु वाद,
मानव-संस्कृति के बने प्राण;
थे राष्ट्र, अर्थ, जन साम्य-वाद
छल सभ्य-जगत के शिष्ट-मान,
भू पर रहते थे मनुज नहीं,
बहु रूढ़ि-रीति प्रेतों-समान—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुम विश्व-मंच पर हुए उदित,
बन जग-जीवन के सूत्रधार,
पट पर पट उठा दिये मन से,
कर नर-चरित्र का नवोद्धार;
आत्मा को विषयाधार बना,
दिशि-पल के दृश्यों को सँवार,
गा-गा एकोहं बहुस्याम,
हर लिये भेद, भव-भीति-भार।

एकता इष्ट निर्देश किया,
जग खोज रहा था जब समता,
अन्तर-शासन चिर राम-राज्य,
औ' वाह्य आत्महन-अक्षमता;
हों कर्म-निरत जन, राग-विरत,
रति-विरति-व्यतिक्रम भ्रम-ममता,
प्रतिक्रिया-क्रिया साधन-अवयव,
है सत्य सिद्ध, गति-यति क्षमता।

ये राज्य; प्रजा, जन साम्य-तन्त्र
शासन-चालन के कृतक यान,
मानस, मानुषी, विकास-शास्त्र
हैं तुलनात्मक, सापेक्ष ज्ञान;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भौतिक विज्ञानों की प्रसूति
जीवन - उपकरण - चयन - प्रधान,
मथ सूक्ष्म-स्थूल जग, बोले तुम—
मानव मानवता का विधान !

साम्राज्यवाद था कंस, बन्दिनी
मानवता, पशु - बलाक्रान्त,
शृंखला - दासता, प्रहरी बहु
निर्मम शासन-पद शक्ति-भ्रान्त;
कारागृह में दे दिव्य जन्म
मानव-आत्मा को मुक्त-कान्त,
जन-शोषण की बढ़ती यमुना
तुमने की नत-पद-प्रणत, शान्त !

कारा की संस्कृति विगति, भित्ति
बहु धर्म-जाति-गत रूप-नाम,
बन्दी जग-जीवन, भू-विभक्त,
विज्ञान-बूढ़ जन प्रकृति-काम;
आये तुम मुक्त पुरुष, कहने—
मिथ्या जड़ बन्धन, सत्य राम;
नानृतं जयति सत्यं, मा भैः;
जय ज्ञान-ज्योति, तुमको प्रणाम !

[युगान्त से]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भारत माता

भारत माता
ग्राम वासिनी ।
खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी ।

दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में
प्रवासिनी ।

तीस कोटि संतान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित निरस्त्र जन
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित निर्धन,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नत मस्तक
तरुतल निवासिनी !
स्वर्ण शस्य पर पद तल लुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित
शरदेन्दु हासिनी।
चिन्तित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित;
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया-शशि उपमित,
ज्ञान मूढ़
गीता प्रकाशिनी !
सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन मन भय, भव तम भ्रम,
जग जननी
जीवन विकासिनी।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चमारों का नाच

अ र र र.......... ....
मचा ख़ूब हुल्लड़ हुड़दंग ;
घमक घमाघम रहा मृदंग ,
उछल कूद, बकवाद, झड़प में
खेल रही खुल हृदय उमंग
यह चमार चौदस का ढंग ।
ठनक कसावर रहा ठनाठन ,
थिरक चमारिन रही छनाछन,
झूम झूम बाँसुरी करिंगा
बजा रहा बेसुध सब हरिजन,
गीत नृत्य के सँग है प्रहसन !
मजलिस का मसख़रा करिंगा
बना हुआ है रंग विरंगा,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अरे चिरकुटों से वह सारी
देह, हँसाता खूब लफंगा,
स्वाँग युद्ध का रच बेढंगा !
बँधा चाम का तवा पीठ पर,
पहुँचे पर बद्धी का हंटर,
लिए हाथ में ढाल, टेढ़ही
दुमुहा सी बलखाई सुन्दर—
इतराता वह बन मुरलीधर !
ज़मींदार पर फबती कसता,
बाह्मन ठाकुर पर है हँसता,

बातों में वक्रोक्ति काकु औ,
श्लेष बोल जाता वह सस्ता,
कल काँटा को कह कलकत्ता।
घमासान हो रहा है समर,
उसे बुलाने आये अफ़सर,

गोला फट कर आँख उड़ा दे
छिपा हुआ वह, उसे यही डर,
ख़ौफ़ न मरने का रत्ती भर।
'काका' उसका है साथी नट,
गदके उस पर जमा पटापट,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उसे टोकता—गोली खाकर
आँख जायगी, क्यों वे नटखट ?
भुन न जायगा भुनगे सा झट ?
'गोली खाई ही हैं !' 'चल हट !'
'कई भाँग की !' 'वाः मेरे भट'

'सच काका' भगवान राम
सीसे की गोली 'रामधे ?' विकट !
गदका उस पर पड़ता चटपट।
वह भी फ़ौरन बद्धी कस कर
काका को देता प्रत्युत्तर,

खेत रह गये जब सब रण में
तब वह निधड़क गुस्से में भर,
लड़ने को निकला था बाहर !
लट्टू उसके गुन पर हरिजन,
छेड़ रहा वंशी फिर मोहन,

तिरछी चितवन से जन-मन हर
इठला रही चमारिन छन् छन्
ठनक कसावर बजता ठन ठन !
ये समाज के नीच अधम जन,
नाच कूद कर बहलाते मन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वर्णों के पद दलित चरण ये
मिटा रहे निज कसक औ कुढ़न,
कर उच्छृंखलता, उद्धतपन।
अर र र... ... ...
शोर हँसी हुल्लड़, हुड़दंग,
धमक रहा धाग्ड़ांग मृदंग,
मार पीट, बकवास, झड़प में
रंग दिखाती महुआ - भंग,
यह चमार चौदस का ढंग!

[ग्राम्या से]

श्री सुमित्रानन्दन पन्त के ग्रन्थ

काव्य—पल्लव, वीणा, ग्रन्थि, गुंजन, युगान्त, पल्लविनी, युगवाणी, ग्राम्या।

नाटक—ज्योत्स्ना।

कहानी—पाँच कहानियाँ

—:o:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नवीन धारा (उत्तर)

श्रीमती महादेवी वर्मा

श्री रामकुमार वर्मा

श्री भगवतीचरन वर्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्रीमती महादेवी वर्मा

हिन्दी साहित्य के करुण रस की सब से अधिक सफल कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा हैं। उन्होंने जीवन के सम्पूर्ण करुण चित्रों को देखा है और उन्हें अपने आँसुओं से लिखा है। जिस प्रकार मीरा ने 'गिरिधर गोपाल' के सभी मोहक चित्रों को देख कर, उनसे अपने नेत्रों में बसने की प्रार्थना की थी, उसी प्रकार महादेवी ने भी आध्यात्मिक विरह में 'नभ की दीपावलियों' को बुझने का आदेश देकर अपने 'देव' से 'तम के परदे' में आने की याचना की है।

महादेवी की प्रकृति भी वियोगिनी है और वह कवयित्री के भावजगत में सम्पूर्ण रूप से व्यापक है। महादेवी करुण विचारों की पीठिका पर अपना जीवन मुरझाये हुए फूल की भाँति रख देती हैं। उसी में उनके काव्य का समस्त सौन्दर्य है। विरह के संकेत में जीवन की बड़ी करुण अभिव्यक्ति है। उनके जीवन में यदि सुख है तो यही विरह का सन्तोष। [इस सरस अनुभूति ने उनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कविता को बहुत सजीव बना दिया है। भावना के उत्कर्ष में उनकी कल्पना गौण हो जाती है और वे पार्थिव जगत से उठ कर एक भावात्मक जगत की निवासिनी बन जाती हैं।

इनकी कविता में रहस्यवाद का भी संकेत है जो 'सान्ध्य गीत' में स्पष्ट है, पर उस रहस्यवाद की अभिव्यक्ति व्यापक नहीं है। अतः भावना में जहाँ महादेवी रामकुमार से ऊपर उठ जाती हैं, वहाँ आध्यात्मिक संकेत में संकुचित हो जाती हैं। महादेवी चित्रकार भी हैं। उनका नवीनतम कविता-संग्रह 'दीपशिखा' उनके कवि और चित्रकार का अनोखा सम्मिलन है।

करुण की इस कवयित्री की अनुभूति में संसार का दुख भी सुख में परिणत हो जाता है। महादेवी भाव-संपन्न हैं। बंगाल के अकाल पर लिखी गई इनकी कविता अनुपम है।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मेरा राज्य

रजनी ओढ़े जाती थी
झिलमिल तारों की जाली,
उसके बिखरे वैभव पर
जब रोती थी उजियाली;

शशि को छूने मचली सी
लहरों का कर-कर चुम्बन,
बेसुध तम की छाया का
तटनी करती आलिंगन।

अपनी जब करुण कहानी
कह जाता है मलयानिल,
आँसू से भर जाता जब
सूखा अवनी का अंचल,

पल्लव के डाल हिँडोले
सौरभ सोता कलियों में,
छिप-छिप किरणें आतीं जब
मधु से सींची गलियों में।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आँखों में रात बिता जब
विधु ने पीला मुख फेरा
आया फिर चित्र बनाने
प्राची में प्रात चितेरा;

कन-कन में जब छायी थी
वह नव यौवन की लाली,
मैं निरधन तब आयी ले
सपनों से भर कर डाली।

जिन चरणों की नख-ज्योती
ने, हीरकजाल लजाये,
उन पर मैंने धुँधले-से
आँसू दो चार चढ़ाये!

इन ललचाई पलकों पर
पहरा जब था व्रीड़ा का,
साम्राज्य मुझे दे डाला
उस चितवन ने पीड़ा का!

उस सोने के सपने को
देखे कितने युग बीते!
आँखों के कोष हुये हैं
मोती बरसा कर रीते;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अपने इस सूनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली !
प्राणों का दीप जला कर
करती रहती दीवाली !

मेरी आहें सोती हैं
इन ओठों की ओटों में,
मेरा सर्वस्व छिपा है
इन दीवानी चोटों में !

चिन्ता क्या है, हे निर्मम !
बुझ जाये दीपक मेरा;
हो जायेगा तेरा ही
पीड़ा का राज्य अँधेरा !

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रतीक्षा

जिस दिन नीरव तारों से
बोलीं किरणों की अलकें,
सो जाओ अलसाई हैं
सुकुमार तुम्हारी पलकें;'

जब इन फूलों पर मधु की
पहली बूँदें बिखरी थीं;
आँखें पंकज की देखीं,
रवि ने नुहार भरी सी;

दीपकमय कर डाला जब
जल कर पतंग ने जीवन,
सीखा बालक मेघों ने
नभ के आँगन में रोदन;

उजियारी अवगुंठन में
विधु ने रजनी को देखा;
तब से मैं ढूँढ़ रही हूँ
उनके चरणों की रेखा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैं फूलों में रोती, वे
बालारुण में मुस्काते,
मैं पथ में बिछ जाती हूँ,
सौरभ में वे उड़ जाते।

वे कहते हैं, 'उनको मैं
अपनी पुतली में देखूँ।'
यह कौन बता जायेगा,
'किसमें पुतली को देखूँ?'

मेरी पलकों पर रातें
बरसा कर मोती सारे,
कहतीं, 'क्या देख रहे हैं,
अविराम तुम्हारे तारे?'

तम ने इन पर अंजन से
बुन-बुन कर चादर तानी,
इन पर प्रभात ने फेरा,
आकर सोने का पानी।

इन पर सौरभ की साँसें
लुट-लुट जातीं दीवानी;
यह पानी में बैठी है,
बन स्वप्न-लोक की रानी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कितनी बीतीं पतझारें !
कितने मधु के दिन आये !
मेरी मधुमय पीड़ा को,
कोई पर ढूँढ़ न पाये !

झिप-झिप आँखें कहती हैं,
'यह कैसी है अनहोनी ?
हम और नहीं खेलेंगी
उनसे यह आँख-मिचौनी ।'

अपने जर्जर अंचल में
भर कर सपनों की माया,
इन थके हुए प्राणों पर
छायी विस्मृति की छाया ।

\+ \+ \+

मेरे जीवन की जागृति !
देखो फिर भूल न जाना—
जो वे सपना बन आवें,
तुम चिरनिद्रा बन जाना !

[नीहार से]

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रश्मि

चुभते ही तेरा अरुण बान,
बहते कन-कन से फूट-फूट,
मधु के निर्झर-से सजल गान।

इन कनक रश्मियों में अथाह,
लेता हिलोर तम - सिन्धु जाग,
बुद्बुद् से बह चलते अपार,
उसमें विहगों के मधुर राग;

बनती प्रवाल का मृदुल कूल,
जो क्षितिज रेख थी कुहर म्लान।

नव कुन्द-कुसुम-से मेघ-पुँज,
बन गये इन्द्र - धनुषी वितान;
दे मृदु कलियों की चटक, ताल,
हिम-विन्दु नचाती तरल प्राण;

धो स्वर्णप्रात में तिमिर-गात,
दुहराते अलि निशि मूक तान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सौरभ का फैला केश-जाल,
करतीं समीर परियाँ विहार;
गीली केसर, मद झूम-झूम,
पीते तितली के नव कुमार;

मर्मर का मधुसंगीत, छेड़
देते हैं, हिल पल्लव अजान!

फैला अपने मृदु स्वप्न-पंख,
उड़ गई नींद निशि-क्षितिज पार;
अधखुले दृगों के कंज-कोष
पर, छाया विस्मृति का खुमार,

रँग रहा हृदय ले अश्रु हास,
यह चतुर चितेरा सुधि-विहान!

————

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उलझन

अलि ! कैसे उनको पाऊँ ?

वे आँसू बन कर मेरे,
इस कारण ढुल-ढुल जाते,
इन पलकों के बन्धन में,
मैं बाँध-बाँध पछताऊँ ।

मेघों में विद्युत्-सी छवि
इनकी, बनकर मिट जाती
आँखों की चित्र-पटी में,
जिसमें मैं आँक न पाऊँ ।

वे आभा बन खो जाते,
शशि-किरणों की उलझन में,
जिसमें उनको कण-कण में,
ढूँढूँ, पहिचान न पाऊँ ।

सोते सागर की धड़कन,
बन लहरों की थपकी से;
अपनी यह करुण कहानी,
जिनमें उनको न सुनाऊँ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वे तारक - बालाओं की,
अपलक चितवन बन आते;
जिसमें उनकी छाया भी,
मैं छू न सकूँ, अकुलाऊँ।

वे चुपके से मानव में,
आ छिपते उच्छ्‌वासें बन;
जिसमें उनको साँसों में,
देखूँ पर रोक न पाऊँ।

वे स्मृति बन कर मानस में;
खटका करते हैं निशि दिन;
उनकी इस निष्ठुरता को,
जिसमें मैं भूल न जाऊँ।

[रश्मि से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गीत

प्रथम

आज क्यों तेरी वीणा मौन ?
शिथिल, शिथिल तन, थकित हुए कर
स्पन्दन भी भूला जाता उर;
मधुर कसक सा आज हृदय में
आन समाया कौन
आज क्यों तेरी वीणा मौन ?
झुकती आतीं पलकें निश्चल,
चित्रित, निद्रित - से तारक चल,
सोता पारावार दृगों में
भर - भर लाया कौन ?
आज क्यों तेरी वीणा मौन ?
बाहर घन - तम, भीतर दुख - तम.
नभ में विद्युत, तुझ में प्रियतम;
जीवन पावस - रात बनाने
सुधि बन छाया कौन ?
आज क्यों तेरी वीणा मौन ?

—-—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द्वितीय

बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ!
नींद थी मेरी अचल निस्पन्द कण-कण में,
प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पन्दन में,
प्रलय में मेरा पता, पद-चिह्न जीवन में,
शाप हूँ जो बन गया वरदान बन्धन में,
कूल भी हूँ, कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ!
नयन में जिसके जलद, वह तृषित चातक हूँ,
शलभ जिसके प्राण में वह निठुर दीपक हूँ
फूल को उर में छिपाये, विकल बुलबुल हूँ
एक होकर दूर तन से छाँह वह चल हूँ
दूर तुम से हूँ, अखंड सुहागिनी भी हूँ!
आग हूँ जिससे ढुलकते बिन्दु हिम-जल के,
शून्य हूँ जिसको बिछे हैं पाँवड़े पल के,
पुलक हूँ वह जो पला है कठिन प्रस्तर में,
हूँ वही प्रतिबिम्ब जो आधार के उर में;
नील घन भी हूँ, सुनहली दामिनी भी हूँ!
नाश भी हूँ मैं, अनन्त विकास का क्रम भी,
त्याग का दिन भी, चरम आसक्ति का तम भी,
तार भी आघात भी झङ्कार की गति भी,
पात्र भी, मधु भी, मधुप भी, मधुर विस्मृति भी,
अधर भी हूँ, और स्मिति की चाँदनी भी हूँ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तृतीय

तुम मुझ में प्रिय ! फिर परिचय क्या ?
तारक में छवि, प्राणों में स्मृति,
पलकों में नीरव पद की गति,
लघु उर में पुलकों की संसृति;
भर लायी हूँ तेरी चंचल
और करूँ जग में संचय क्या ?

तेरा मुख सहास अरुणोदय,
परछाईं, रजनी विषादमय,
यह जागृति, वह नींद स्वप्नमय,
खेल-खेल, थक-थक सोने दो
मैं समझूँगी सृष्टि प्रलय क्या ?

तेरा अधर-विचुम्बित प्याला
तेरी ही स्मिति मिश्रित हाला,
तेरा ही मानस मधुशाला;
फिर पूछूँ क्यों मेरे साक़ी !
देते हो मधुमय विषमय क्या ?

रोम-रोम में नन्दन पुलकित,
साँस साँस में जीवन शत शत,
स्वप्न स्वप्न में विश्व अपरिचित;
मुझमें नित बनते मिटते प्रिय !
स्वर्ग मुझे क्या, निष्क्रिय लय क्या ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हारूँ तो खोऊँ अपनापन,
पाऊँ प्रियतम में निर्वासन;
जीत बनूँ तेरा ही बन्धन,
भर लाऊँ सीपो में सागर,
प्रिय ! मेरी अब हार विजय क्या ?

चित्रित तू, मैं हूँ रेखा-क्रम,
मधुर राग तू, मैं स्वर-संगम,
तू असीम, मैं सीमा का भ्रम;
काया छाया में रहस्यमय !
प्रेयसि प्रियतम का अभिनय क्या ?

चतुर्थ

मैं बनी मधुमास आली !
आज मधर विषाद की चिर करुण आयी यामिनी,
बरस सुधि के इन्दु से छिटकी पुलक की चाँदनी,
उड़ आयी री दृगों में
सजनि कालिन्दी निराली !
रजत स्वप्नों में उदित अपलक विरल तारावली,
सुख-पिक ने अचानक मदिर पंचम तनल
बह चली निश्वास की मृदु,
वात, मलय निकुंज-पाली !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सजल रोमों में बिछे हैं पाँवड़े मधुस्नात से,
आज जीवन के निमिष भी दूत हैं अज्ञात से;
क्या न अब प्रिय की बजेगी,
मुरलिका मधु राग वाली?
मैं बनी मधुमास आली।

[नीरजा से]

———

सान्ध्य गीत

प्रथम

प्रिय! सान्ध्य गगन,
मेरा जीवन

यह क्षितिज बना धुँधला विराग,
नव अरुण अरुण मेरा सुहाग,
छाया सी काया वीतराग;
सुख भीने स्वप्न रँगीले घन,
साधों का आज सुनहलापन,
घिरता विषाद का तिमिर सघन,
सन्ध्या का नभ से मूक मिलन—
यह अश्रुमती हँसती चितवन!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लाता भर श्वासों का समीर,
जग से स्मृतियों का गन्ध धीर,
सुरभित हैं जीवन-मृत्यु-तीर,
रोमों में पुलकित कैरव वन

———

द्वितीय

शलभ मैं शापमय वर हूँ!
किसी का दीप निष्ठुर हूँ!

ताज है जलती शिखा
चिनगारियाँ शृंगार माला,
ज्वाल अक्षय कोष-सी
अंगार मेरी रंगशाला;
नाश में जीवित किसी की साध सुन्दर हूँ!

नयन में रह किन्तु जलती
पुतलियाँ आगार होंगी,
प्राण में कैसे बसाऊँ?
कठिन अग्नि-समाधि होगी;
फिर कहाँ पालूँ तुझे मैं मृत्यु-मन्दिर हूँ!

हो रहे झर कर दृगों से
अग्नि-कण भी क्षार शीतल,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पिघलते उर से निकल
निश्वास बनते धूम श्यामल;
एक ज्वाला के बिना मैं राख का घर हूँ !
कौन आया था न जाना
स्वप्न में तुमको जगाने,
याद में उन अँगुलियों के
हैं मुझे पर युग बिताने,
रात के उर में दिवस की चाह का शर हूँ !
शून्य मेरा जन्म था
अवसान है मुझको सवेरा,
प्राण आकुल के लिए
संगी मिला केवल अँधेरा ;
मिलन का मत नाम ले, मैं विरह में चिर हूँ !

[सान्ध्यगीत से]

— —

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दीप-शिखा

प्रथम

प्राण हँस कर ले चला

प्राण हँस कर ले चला जब
चिर व्यथा का भार।
उभर आये सिंधु - उर में
बीचियों के लेख,
गिरि कपोलों पर न सूखी
आँसुओं की रेख।
धूलि का तब से न रुक पाया कसक-व्यापार!
सान्त दीपों में जगी नभ—
की समाधि अनन्त,
बन गये प्रहरी, पहन
आलोक तिमिर, दिगन्त।
किरण-तारों पर हुए हिम-विन्दु बन्दनवार।
स्वर्ण शर से साध के
घन ने लिया उर वेध,

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

स्वप्न विहगों को हुआ
यह क्षितिज मूक निषेध।

क्षण चले करने क्षणों का पुलक से शृंगार।
शून्य के निश्वास ने दी
तूलिका सी फेर,
ज्वार शत शत रंग के
फैले धरा को घेर।

बात अणु अणु में समा रचने लगी विस्तार।
अब न लौटाने कहो
अभिशाप की वह पीर,
बन चुकी स्पन्दन हृदय में
वह नयन में नीर।

अमरता उसमें मनाती है मरण-त्यौहार।
छाँह में उसकी गये आ;
शूल फूल समीप,
ज्वाल का मोती सँभाले
मोम की यह सीप।

सृजन के शत दीप थामें, प्रलय-दीपाधार।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द्वितीय

सब बुझे दीपक जला लूँ

सब बुझे दीपक जला लूँ।
घिर रहा तम आज दीपक-रागिनी अपनी जगा लूँ !
क्षितिज कारा तोड़ कर अब
गा उठी उन्मत्त आँधी,
अब घटाओं में न रुकती
लास तन्मय तड़ित् बाँधी,
धूलि की इस वीण पर मैं तार हर तृण का मिला लूँ !
भीत तारक मूँदते दृग
भ्रान्त मारुत पथ न पाता,
छोड़ उल्का अंक नभ में
ध्वंस आता हरहराता,
उँगलियों की ओट में सुकुमार सब सपने बचा लूँ !
लय बनी मृदु वर्त्तिका
हर स्वर जला बन लौ सजीली,
फैलती आलोक सी
झंकार मेरी स्नेह गीली,
इस मरण के पर्व को मैं आज दीपाली बना लूँ !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

देख कर कोमल व्यथा को
आँसुओं के सजल रथ में,
मोम सी साधें बिछा दीं,
थीं इसी अंगार पथ में
स्वर्ण हैं वे मत कहो अब क्षार में उनको सुला लूँ !
अब तरी पतवार लाकर
तुम दिखा मत पार देना ;
आज गर्जन में मुझे बस
एक बार पुकार लेना !
ज्वार को तरणी बना मैं इस प्रलय का पार पा लूँ !
आज दीपक राग गा लूँ ।

तृतीय

आसुओं के देश में

आँसुओं के देश में !
जो कहा रुक-रुक पवन ने
जो सुना झुक झुक गगन ने
साँझ जो लिखती अधूरा,
प्रात रँग पाता न पूरा
आँक डाला वह दृगों ने एक सजल निमेष में !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अतल सागर में जली जो,
मुक्त झंझा पर चली जो,
जो गरजती मेघ-स्वर में,
जो कसकती तड़ित-उर में,
प्यास वह पानी हुई इस पुलक के उन्मेष में !
दिश नहीं प्राचीर जिसको,
पथ नहीं ज़ञ्जीर जिसको,
द्वार हर क्षण को बनाता,
सिहर आता; बिखर जाता,
स्वप्न वह हठ कर बसा इस साँस के परदेश में !
मरण का उत्सव अजर है,
गीत जीवन का अमर है,
मुखर कण का संग मेला,
पर चला पथी अकेला,
मिल गया गन्तव्य पग को कण्टकों के वेष में !
वह बताया झर सुमन ने,
वह सुनाया मूक तृण ने,
वह कहा बेसुध पिकी ने,
चिर पिपासित चातकी ने,
सत्य को दिव कह न पाया था अमिट सन्देश में !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

खोज ही चिर प्राप्ति का वर,
साधना ही सिद्धि सुन्दर,
रुदन में सुख की कथा है,
विरह मिलने की प्रथा है,
शलभ जलकर दीप बन जाता निशा के शेष में!
आँसुओं के देश में!

———

चतुर्थ

मोम सा तन घुल चुका

मोम सा मन घुल चुका अब दीप सा मन जल चुका है।
विरह के रंगीन क्षण ले,
अश्रु के कुछ शेष कण ले,
बरुनियों में उलझ बिखरे स्वप्न के सूखे सुमन ले,
खोजने फिर शिथिल पग
निश्वास दूत निकल चुका है!
चल पलक है निर्निमेषी,
कल्प पल सब तिमिरि वेषी,
आज स्पन्दन भी हुई उर के लिए अज्ञात देशी!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चेतना का स्वर्ण जलती
वेदना में गल चुका है!
झर चुके तारक-कुसुम जब
रश्मियों के रजत-पल्लव,
सन्धि में आलोक-तम की क्या नहीं नभ जानता तब
पार से, अज्ञात बासन्ती
दिवस-रथ चल चुका है!
खोल कर जो दीप के दृग
कह गया "तम में बढ़ा पग।"
देख श्रम-धूमिल उसे करते निशा की साँस जगमग,
क्या न आ कहता वही
'सो, याम अन्तिम ढल चुका है।'
अन्तहीन विभावरी है,
पास अंगारक-तरी है,
तिमिर की तटिनी क्षितिज की कूल रेख डुबा भरी है।
शिथिल कर से सुभग
सुधि पतवार आज बिछल चुका है!
अब कहो सन्देश है क्या ?
और ज्वाल विशेष है क्या ?
अग्नि-पथ के पार चन्दन चाँदनी का देश है क्या ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

एक इंगित के लिये
शत बार प्राण मचल चुका है !

[दीपशिखा से]

श्रीमती महादेवी वर्मा के ग्रन्थ

काव्य—नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य गीत, यामा, दीपशिखा।

गद्य—अतीत के चल-चित्र, स्मृति की रेखाएँ, शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी का विवेचनात्मक गद्य।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

श्री रामकुमार वर्मा

ये हिन्दी के अध्ययनशील कवि हैं। इन्होंने कबीर के रहस्यवाद का विस्तृत अध्ययन किया है और रहस्यवाद का सिद्धान्त अंगरेजी और फ़ारसी साहित्य के आधार पर भी हृदयंगम किया है। इनके इस

अध्ययन का परिणाम इनकी कविता पर इतना अधिक पड़ा है कि ये विशुद्ध रहस्यवाद के एक सफल कलाकार हो गये हैं। रहस्यवाद की सूक्ष्म और विविध प्रवृत्तियों का परिचय श्री रामकुमार की 'चित्ररेखा' और 'चन्द्रकिरण' से पाया जा सकता है।

इनका शैशव बुन्देलखंड के पार्वतीय प्रदेश में व्यतीत हुआ था। अतः इनकी कविता में प्रकृति का नैसर्गिक जो चित्र है, उसकी वास्तविकता का महत्व बहुत अधिक है। इनकी काश्मीरी-यात्रा से प्रकृति का चित्र इनकी कविता में निखर आया है। अतः रसस्यवाद के क्षेत्र में ये अपनी भावना की अभि-व्यक्ति का प्रधान आधार प्रकृति के दैवी चित्र को ही मानते हैं। रूप-रेखाएँ और 'चन्द्रकिरण' में प्रकृति जैसे सजीव हो उठी है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रामकुमार एकांकी नाटककार भी हैं। इनके इन नाटकों में पात्रों का आन्तरिक संघर्ष विशेष कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। इस संघर्ष के साथ इनकी कविता प्रसादजी की कविता के समान कुछ जटिल अवश्य हो गई है, पर कुमार की कविता में अभिनयात्मक शैली होने के कारण वह अधिक रोचक हो गई है। 'शुजा' नामक कविता में यही सौन्दर्य है। कल्पना के क्षेत्र में कुमार की कुशलता में दो निर्णय हो ही नहीं सकते।

कल्पना और अनुभूति का यह कवि हमारे यहाँ विशुद्ध रहस्यवाद का कवि है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ये गजरे तारों वाले

इस सोते संसार बीच
जग कर, सज कर, रजनी-बाले !
कहाँ बेचने ले जाती हो,
ये गजरे तारों वाले ?

मोल करेगा कौन !
सो रही हैं उत्सुक आँखें सारी;
मत कुम्हलाने दो,
सूनेपन में अपनी निधियाँ न्यारी।

निर्झर के निर्मल जल में
ये गजरे हिला हिला धोना;
लहर लहर कर यदि चूमे तो,
किंचित बिचलित मत होना।

होने दो प्रतिविम्ब विचुम्बित,
लहरों ही में लहराना;
'लो मेरे तारों के गजरे'
निर्झर-स्वर में यह गाना।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यदि प्रभात तक कोई आकर
तुमसे हाय ! न मोल करे,
तो फूलों पर ओस रूप में,
बिखरा देना सब गजरे।

———

समय शान्त है

समय शान्त है, मौन तपस्वी-सा तप में लवलीन,
रात्रि मुझे तो दिन ही है, केवल दिनकर से हीन,
नभ के पद पर धरा पड़ी है, यह है चिर अभिशाप,
तारे अपना हृदय खोल दिखलाते हैं सन्ताप।
प्रेयसि ! जग है एक
भटकता शून्य स-तम अज्ञात
एक ज्योति-सी उठो,
गिरो पथ-पथ पर बनकर प्रात।
मैं तुमसे मिल सकूँ, यथा उर से सुकुमार दुकूल,
समय-लता में खिले मिलन के दिन का उत्सुक फूल;
मेरे बाहु-पाश से वेष्टित हो यह मृदुल शरीर।
चारों ओर स्वर्ग के होगा पृथ्वी का प्राचीर।
नभ के उर में विमल नीलिमा
शयित हुई सकुमार;
उसी भाँति तुमसे निर्मित हो,
मेरा उर-विस्तार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यात्रा का अन्त

मैं तुम से मिल गया प्रिये !
यह है जीवन का अन्त ;
इसी मिलन का गीत कोकिले ।
गा जीवन - पर्यन्त ;

सुमन मधुप को बुला-बुला कर,
देंगे यह सम्वाद—
'कलियाँ कल जायेंगी लेकर,
इसी मिलन की याद ।'

प्राची के बिखरे सब बादल ,
बदल - बदल कर रूप ,
किरण - साँस में बतला देंगे ,
मेरा मिलन अनूप ।

इस संसार - विविर में है
अति लघु प्राणों का वास ;
सुख - दुख के दो कोण ,
उन्हीं में रुदन और है हास ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इसके परिमित पल में है—
इस जीवन का उपहास;
एक दृष्टि में जन्म दूसरी—
में है करुण प्रवास।
यह संसार शिशिर है—
तुम हो विश्वाकार वसन्त,
मैं तुमसे मिल गया प्रिये
यह है यात्रा का अन्त।

[रूप राशि से]

अशान्त

नश्वर स्वर से कैसे गाऊँ,
आज अनश्वर गीत ?
जीवन की इस प्रथम हार में,
कैसे देखूँ जीत ?
उषा अभी सुकुमार, क्षणों में—
होगी वही स-तेज;
लता बनेगी ओस-विन्दु की
सरल मृत्यु की सेज;
कह सकता है कौन, देखता हूँ मैं भी चुपचाप।
किसका गायन बने, न जाने मेरे प्रति अभिशाप ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्या है अन्तिम लक्ष्य—
निराशा के पथ का ?—अज्ञात।
दिन को क्यों लपेट देती है
श्याम वस्त्र में रात ?

और काँच के टुकड़े बिखरा
कर, क्यों पथ के बीच,
भूले हुए पथिक-शशि को, दुख
देता है नभ नीच ?

यही निराशामय उलझन है, क्या माया का जाल ?
यहाँ लता में लिपटा रहता, छिपकर भीषण व्याल !

देख रहा हूँ बहुत दूर पर
शान्ति रश्मि की रेख,
उस प्रकाश से मैं अशान्त-तम
ही सकता हूँ देख;

काँप रही स्वर अनिल-लहर
रह रह कर अधिक सरोष;
डर कर निरपराध मन अपने—
ही को देता दोष।

कैसा है अन्याय ? न्याय का स्वप्न देखना पाप;
मेरा ही आनन्द बन रहा, मेरा ही सन्ताप !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हास्य कहाँ है ? उसमें भी है
रोदन का परिणाम;
प्रेम कहाँ है ? घृणा उसी में
करती है विश्राम;

दया कहाँ है ? दूषित उसको
करता रहता रोष;
पुण्य कहाँ है ? उसमें भी तो
छिपा हुआ है दोष;

धूल हाय ! बनने ही को खिलता है फूल अनूप;
वह विकास है मुरझा जाने ही का पहला रूप !

मेरे दुख में प्रकृति न देती
क्षण भर मेरा साथ,
उठा शून्य में रह जाता है,
मेरा भिक्षुक हाथ;
मेरे निकट शिलाएँ पाकर
मेरा श्वास प्रवाह,
बड़ी देर तक गुंजित करतीं
रहतीं मेरी आह;

'मर ! मर ' शब्दों में हँस कर, पत्ते हो जाते मौन;
भूल रहा हूँ स्वयम्, इस समय मैं हूँ जग में कौन ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह सरिता है चली जा रही—
है चंचल अविराम,
थकी हुई लहरों को देते,
दोनों तट विश्राम;
मैं भी तो चलता रहता हूँ
निशिदिन आठों याम,
नहीं सुना मेरे भावों ने,
'शान्ति शान्ति' का नाम।
लहरों को अपने अंगों में तट कर लेता लीन;
लीन करेगा कौन ? अरे, यह मेरा हृदय मलीन

कंकाल

क्या शरीर है ? शुष्क धूल का–
थोड़ा सा छवि - जाल,
इस छवि में ही छिपा हुआ है,
वह भीषण कंकाल
उस पर इतना गर्व ? अरे,
इतने गौरव का गान,
थोड़ी-सी मदिरा है, उस पर,
सीखा है बलिदान

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मदमाती आँखों वाले, ओ ! ठहर अरे नादान !
एक फूल की माला है, उस पर इतना अभिमान !
इस यौवन के इन्द्र-धनुष में
भरा वासना रंग,
काले बादल की छाया में.
सजता है यह ढंग;
और उमंगों में भूला है,
बन कर एक उमंग,
एक टूटता-स्वप्न आँख में
कहता उसे 'अनंग'—
वह 'अनंग' जो धूल-कणों में भरता है उन्माद,
जर्जरपन में ले आता है नव यौवन की याद।
और (याद आया अब)—
मृगनयनी का नयन-विलास;
हँसती और लजाती थी—
चितवन कानों के पास;
कलित कपोलों की कोरों में—
भर ऊषा का रंग,
चंचल तीर चला चितवन का,
करती थी भ्रू-भंग,
मैंने देखा था उसमें, गिरते-फूलों का हास,
सन्ध्या के काले अम्बर में मिटता अरुण विकास !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दूर ! दूर !! मत भरो कान में
वह मतवाला राग,
यही चाहते हो, मैं कर लूँ
इस जग से अनुराग ?
गिरते हुए फूल से कर लूँ
क्या अपना शृंगार ?
करने को कहते हो मुझसे,
निश्चल शव से प्यार ?
गिन डालूँ कितनी आहों में अपने मन के भाव ?
पथराई आँखों से कैसे देखूँ विष का स्राव ?
अरे पुण्य की भाषा में तुम
क्यों कहते हो पाप ?
क्षणिक सुखों की नीवों पर
क्यों उठा रहे सन्ताप ?
सुमन-रंग से किस आशा पर
करते अमर विहार ?
ओस-कणों में देख रहे—
सारे नभ का शृंङ्गार ?
प्यार-प्यार क्यों प्यार कर रहे नश्वरता से प्यार ?
यहाँ जीत में छिपी हुई है इस जीवन की हार।
मृत्यु वही है, जिसमें होती
जीवित क्षण की हार ;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वे ही क्षण क्यों भाग रहे हैं;
वर्तमान के पार ?
मेरे आगे ही, मेरे
जीवन का नाश विलास,
झाँक शुष्कता रही चोर-सी,
हृदय-सुमन के पास;
जीवन-आभा बनती जाती दिन-दिन अधिक मलीन,
अन्धकार में भी बनता हूँ मैं लोचन से हीन।
भूल रहा हूँ पाकर स्मृति की
चंचल एक हिलोर,
देख रहा हूँ मैं जीवन के
किसी दूसरी ओर;
हाँ, वह यौवन-लाली करती
जीवन - सुमन - विहार,
मादकता में धूल कणों से—
भी करती थी प्यार;
शुष्क पत्तियों से करती थी आलिंगन का हाव;
मतवाले बन कर आते थे, मन के नीरस भाव।
काले भावों की रजनी में
आशा का अभिसार,
मैंने छिप कर देखा था,
देखा था कितनी बार !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उनका आना और समुत्सुक—
मेरे मन का प्यार,
दोनों भाव बना देते थे
लज्जित लोचन चार,
किन्तु, मुझे क्या मिलता था ? क्या बतला दूँ उपहार ?
शीतल ओठों का मुरझाया-सा चुम्बन उस बार।
उत्सुकता के बदले में यह
भीषण अत्याचार।
घृणा, घृणा शत जिह्वा से
डसती थी बारम्बार;
आँखों की मदिरा का बन जाना
आँसू की धार,
बाहु-पाश का शक्ति-हीन हो
गिरना धनुषाकार ;
यह था क्या उपहार, अरे इस जीवन का उपहार !
फूल-रूप क्यों रखता है यह धूल-रूप संसार ?
छविमय कहते हो जिसको
जिसमें है रूप अपार,
अरे ! भरा है उसमें कितने,
पापों का संसार !
पहिन रहे हो हार;
उसी में मूल रही है हार ;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पुण्य मान कर क्यों करते हो
इन पापों से प्यार ?
मुझे न छूना, जतलाओ मत अपना झूठा प्यार,
धूल समझ कर छोड़ चुका हूँ यह कलुषित संसार ।
[अभिशाप से]

———

गीत

प्रथम

देव, मैं अब भी हूँ अज्ञात ?
एक स्वप्न बन गई तुम्हारे प्रेम-मिलन की बात ।
तुमसे परिचित होकर भी मैं
तुमसे इतन दूर ।
बढ़ना सीख सीख कर मेरी
आयु बन गयी क्रूर ।
मेरी साँस कर रही मेरे जीवन पर आघात । देव मैं...
यह ज्योत्स्ना तो देखो,नभ की
बरसी हुई उमंग,
आत्मा-सी बन कर छूती है
मेरे व्याकुल अंग ;
आओ, चुम्बन-सी छोटी है यह जीवन की रात ।
देव, मैं अब भी हूँ अज्ञात ?

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द्वितीय

फैला है नीला आकाश।
सुरभि, तुम्हें उर में भरने को
फैला है इतना आकाश !
तुम हो एक साँस सी सुखकर,
नभमंडल है एक शरीर;
यह पृथ्वी मधुमय यौवन है,
तुम हो उस यौवन की पीर !
पथ बतला देना तारक—
दीपक का दिखला नवल प्रकाश,
सुरभि, तुम्हें उर में भरने को
मैं फैलूँगा बन आकाश।

———

तृतीय

आज केतकी फूली;
नभ के उज्वल तारों से हो
निर्मित जग में भूली।
आज केतकी फूली।
अन्तरिक्ष का बिखरा वैभव पृथ्वी में संचित है;
इसीलिए यह कलिका नभ-छबि से भू पर कुसुमित है;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पवन चूम जाता है, मेरी इच्छा से परिचित है,
इस मिलाप में ही सारे जीवन का सुख अंकित है।
मैंने आज प्रेम की उँगली से
वह चिर छवि छू ली।
आज केतकी फूली।

चतुर्थ

......पर तुम मेरे पास न आये।
देखो, वह खिल उठी जुही
यौवन के विकसित अंग छिपाये;
निराकार प्रेमी समीर
आया है सौरभ-साज सजाये;
मैंने कितनी बार साँस के
शत सन्देश स्वयम् दुहराये;
तारे हैं अपने दृग-तारों
की धाराओं पर तैराये;
......पर तुम मेरे पास न आये।
कोकिल की कोमल पुकार ने
पुष्प-शरीर वसन्त बुलाये,
उषा-बाल की प्रभा देख
बादल ने कितने वेष बनाये?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैंने कितने रूप रखे, पर
क्या न तुम्हें वे कुछ भी भाये ?
जीवन में साँसों की गति से
कितनी हूँ मैं व्यथा छिपाये !

......पर तुम मेरे पास न आये।

पंचम

इस भाँति न छिप कर आओ।
अन्तिम यही प्रतीक्षा मेरी,
इसे भूल मत जाओ। इस भाँति...

रजनी के विस्तृत नभ को जब मैं दृग में भर लेता,
एक एक तारे को कितने भावयुक्त कर देता !
उसी समय खद्योत एक आता वातायन द्वारा
मैं क्या समझूँ, मुझे मिला उज्ज्वल संकेत तुम्हारा !
प्रियतम ! मेरी स-तम निशा ही को
शशि-किरण बनाओ। इस भाँति...

वह उपवन फूला, पर उसमें बोलो-शान्ति कहाँ है ?
सुमन खिले, मुरझाये, सूखे, गिरे, वसन्त यहाँ है ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं मृत्यु ने यहाँ परिधि में बाँधा है जीवन को,
सुख तो सेवक बन रक्षित रखता है दुख के धन को।

प्रियतम ! शाश्वत जीवन बन
मन में आज समाओ। इस भाँति...

यह तुम्हारा हास आया

यह तुम्हारा हास आया।

इन फटे से बादलों में
कौन सा मधुमास आया ?
आँख से विचलित व्यथा के
दो बड़े आँसू बहे हैं,
सिसकियों में वेदना के व्यूह—
ये कैसे रहे हैं ?
एक उज्ज्वल तीर सा रवि—
रश्मि का उल्लास आया। यह...

आह ! वह कोकिल न जाने—
क्यों हृदय को चीर रोयी ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक प्रतिध्वनि सी हृदय में,
क्षीण हो हो हाय! सोयी!
किन्तु, इससे आज मैं—
कितने तुम्हारे पास आया!
यह तुम्हारा हास आया।

[चित्ररेखा से]

परिचय

मैं तुम्हारे नूपुरों का हास।
चरण में लिपटा हुआ,
करता रहूँ चिर वास।
मैं तुम्हारी मौन गति में,
भर रहा हूँ राग;
बोलता हूँ यह जताने,
हूँ तुम्हारे पास।
चरण-कम्पन का तुम्हारे
हृदय में मृदु भाव—
कर रहा हूँ मैं तुम्हारे
कंठ का अभ्यास।
हूँ तुम्हारे आगमन का
पूर्व लघु सन्देश;

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गति रुकी, तो मौन हूँ,
गति में अखिल उल्लास।
मैं चरण ही में रहूँ,
स्वर के सहित सविलास,
गति तुम्हारी ही बने,
मेरा अटल विश्वास!

———

किरण-कण

एक दीपक-किरण-कण हूँ।

धूम्र जिसके क्रोड़ में है, उस अनल का हाथ हूँ मैं
नव-प्रभा लेकर चला हूँ, पर जलन के साथ हूँ मैं;
सिद्धि पाकर भी तपस्या-साधना का ज्वलित क्षण हूँ।
एक दीपक-किरण-कण हूँ।

व्योम के उर में अगाध भरा हुआ है जो अँधेरा
और जिसने विश्व को दो बार क्या, सौ बार घेरा,
उस तिमिर का नाश करने के लिए मैं अखिल प्रण हूँ।
एक दीपक-किरण-कण हूँ।

शलभ को अमरत्व देकर, प्रेम पर मरना सिखाया,
सूर्य का सन्देश लेकर, रात्रि के उर में समाया,
पर तुम्हारा स्नेह खोकर भी तुम्हारी ही शरण हूँ।
एक दीपक-किरण-कण हूँ।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जिज्ञासा

नीरव निशा, हो श्रान्त तुम ?
तिमिर चारों ओर है ? ना
भाग्य है मेरा यही ;
क्योंकि तुम चुप हो, यही
विचलित व्यथा मैंने सही।
वह उड़ा खद्योत आशा के
प्रकाशित विन्दु-सा,
और शीतल साँस-सी
यह वायु चुप होकर बही;
मैं तुम्हारे पास हूँ,
फिर भी बनी हो क्लान्त तुम,
नीरव निशा, हो श्रान्त तुम।
क्या विरह की अवधि मानूँ
यह समस्त विभावरी ?
यह गगन-गंगा समझ लूँ
आँसुओं से है भरीं ?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ये निशा के प्रहर मानो
वेदना के बन्धु हैं;
हो रहे प्रति क्षण भयानक
और भीषण सुन्दरी !
मौन होता हूँ, कहो,
अब भी रहोगी शान्त तुम ?
नीरव निशा, हो श्रान्त तुम।

———

प्रार्थना

मेरे जीवन में एक बार
तुम देखो तो अनुपम स्वरूप,
मैं तुम में प्रतिबिम्बित होऊँ,
तुम मुझ में होना ओ अनूप !
राका-शशि अपनी रश्मि-माल
जब रजनी को पहनाता हो,
अथवा जब फूलों के तन से
प्रेयसि सुगन्धि का नाता हो,
जब विमल ऊर्मि में लघु बुद्बुद
उल्लास-पीन लहराता हो,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जब तरु से लतिका का अन्तर
मधु-ऋतु में कम हो जाता हो,
उस समय हँसो तो बरस पड़े
ओसों में विश्वों का स्वरूप;
मैं तुम में प्रतिविम्बित होऊँ,
तुम मुझ में होना ओ अनूप !

[चन्द्र किरण से]

———

चट्टान

दृढ़ खड़ी, कड़ी, टेढ़ी अखण्ड,
चट्टान अटल जड़-सी विषण्ण ।

भू-मण्डल में निर्भीक वायु-मण्डल का शून्यान्तर बिगाड़,
झाड़ों के झुण्ड चपेट भूमि पर बैठी है बन कर पहाड़,
चुपचाप, हज़ारों लाखों मन का पिण्ड बनी भू-खंड फाड़,
भू-खंडों की दुर्द्धर्ष शक्तियाँ उसको क्या पाईं उखाड़ ?

ना, परिवर्तन को रोक—
अमर जीवन का लेकर स-बल मंत्र,
चट्टान खड़ी है—आदि सृष्टि—
निर्माण देख, भीषण, स्वतंत्र ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वर्षाओं का आघात—बीच में खड़ी हुई निर्भीक भ्रान्त
जैसे चामुण्डा—और प्रहारों को करते-से चर-ध्वान्त।
सब थके-एक चट्टान विश्व को सुदृढ़ शक्ति संपूर्ण नान्त,
केन्द्रित दिग्कोण चतुर्भुज सी, शासन करती-सी अखिल प्रान्त !
यह महाशक्ति सौन्दर्य,-विजय-सौदर्न्य —
अटलता का विधान।
मैं था मुरझाया फूल—आज,
बन गया शक्ति का बीज ज्ञान ॥

———

तेरी अटूट कोरों में मेरे उलझ गये हैं नयन-कोर।
तेरी उदारता पर चढ़कर नभ तक फैले ये नयन-छोर ॥
तेरी दृढ़ता में आज सुदृढ़ बन गई भावना की हिलोर।
तेरी अखंडता देख, देखता हूँ उर में दृढ़ता विभोर ॥
अब कहाँ पराजय, कहाँ हीनता,
कहाँ क्लैव्य है, कहाँ हार।
ओ शिलाखंड ! मैं कठिन भाग्य की—
तरह बन गया दुर्निवार ॥

———

हाँ, एक बात ! क्या तुझ में कोई सिसक रही अभिशाप-शप्त
वह कौन ? अहल्या ! ओ नारी ! तू कहाँ रही यों सिक्त तप्त !!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्या वीतराग की एक किरण, खा गई प्रेम की किरण-सप्त !
क्या इस कठोरता के विराग में आन्दोलित है उर विलप्त ?

किसका विराग ? किसका क्रन्दन ?
ओ ठहर, विश्व के व्यथित पाप !
तू आज शिला बन कर नारी के—
आँसू भी पी गया आप ?

प्रातः वेला का भ्रम, मुनि का नियमित क्रम, नारी तन अनुपम ।
ये तीनों जैसे एक दूसरे के वद्रोही क्रूर विषम !!

यह विधि का गुरु षड्यन्त्र, और निर्जन, निद्रित एकाकी तम ।
फिर एक अधम का अन्ध मदन, सरला नारी का यौवन-भ्रम ?

किसका है यह अपराध ! अरे गोतम !
चुप, अपना हृदय थाम !
यह नारी है वंचिता, दया की पात्री
निश्चय ही अकाम !!

पर टेढ़ा सा पाषाण-रूप में आह ! निकल ही गया शाप ।
यह शिला-आज अपराधी की केवल बन कर रह गई माप ।

केवल कठोरता ! मौन रुदन ! पत्थर के भीतर चिर विलाप ।
फिर विधि-विधान यह रहा कि रवि का वह झेले प्रतिदिन प्रताप ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वर्षा भी निज आघातों से दे,
इसी शिला को तोड़-फोड़ ।
हिम कुंठित कर दे उस नारी के
कंकालों के जोड़-जोड़ ॥

———

कोमलता की प्रतिहिंसा ! यह है मेरे सम्मुख शिला-खंड !
निर्बलता अपनी निष्ठुरता में बनी आज अतिशय प्रचंड !!
उस पर अब वर्षा के प्रचंड अभिशाप हिमोपल-खंड-खंड—
बन कर गल जाते हैं, अपने ही दंडों से पा रहे दंड ।
ऐसी यह है चट्टान आज ।
अपने कण-कण में रही जाग,
इसमें न एक भी अंश रुदन है,
इसमें है परिव्याप्त आग !!
क्या इसमें है परिव्याप्त आग ? तुझमें भी जागी यही आग !!
मैं दृढ़ हूँ—सागर उठे, देखना निकल न आए कहीं झाग ?
मैं हूँ अखंड, कायरता का मुझमें न कहीं भी लगा दाग़ ।
आकर चाहे मुझको देखो, भू मण्डल का प्रत्येक भाग !!
मैं अपने प्रण को प्रकट शक्ति से—
चिर वर्षों तक हूँ प्रचन्ड !
दृढ़ खड़ी, कड़ी, टेढ़ी अखण्ड,
चट्टान अटल जड़ सी विषण्ण !!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

साधना-संगीत

आज मेरी गति, तुम्हारी आरती बन जाय!

आरती चूमे कि खिंचता जाय रंजित क्षितिज-घेरा,
धूम-सा जलकर भटकता उड़ चले सारा अँधेरा,
हो शिखा स्थिर प्राण के प्रण की अचल निष्कंप रेखा,
हृदय में ज्वाला, हँसी में दीप्ति की हो चित्र-लेखा,

श्वास ही मेरी विनय की भारती बन जाय!
आज मेरी गति, तुम्हारी आरती बन जाय!

यह हँसी मन्दिर बने मुस्कान-क्षण हों द्वार मेरे,
मैं मिलूँ या तुम मिलो, ये मिलन-पूजा-हार मेरे!
आज बन्धन ही बनेंगे, मुक्ति के अधिकार मेरे,
क्यों न मुझमें अवतरित होकर रहो अवतार! मेरे?

प्राण-वंशी बार-बार पुकारती बन जाय!
आज मेरी गति, तुम्हारी आरती बन जाय!

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विरह

जो विरह में मिट चुका,
उससे मिलन की बात क्या हो !
एक तृण के सूखते उर की न कोई प्यास पूछे,
फाँस सी पल पल कसकती कौन उर की साँस पूछे।
जब कि हलकी फूँक से ही,
बुझ गई दीपक-शिखा वह !
जो रही जीवित जलन में कौन उसका हास पूछे ?
रात के हाथों में पली फिर—
प्राण-घातक प्रात क्या हो ! जो विरह में०—
एक क्षण चितवन न पायी, फिर मधुर मुस्कान कैसी ?
मुख उठाया ही नहीं इस ओर, तब पहचान कैसी ?
मैं तुम्हारे द्वार पर—
गिनता रहा अपनी उसाँसें—
देख कर मुझको न देखा, यह तुम्हारी बान कैसी ?
जो स्वयं निश्शेष हो—
उस पर कहो आघात क्या हो ! जो विरह में०—
विकल हो लहरें गुथीं तुमने न सुलझाया उन्हें क्यों ?
फूल मुरझाए, अधिक जीवन नहीं भाया उन्हें क्यों ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रीझ में भी रीझ का—
अभिनय कहो क्यों कर रहे हो ?
भूल सब बातें गया था, छेड़ कर गाया उन्हें क्यों ?
जब कि तुम आये नहीं तब
प्रिय मिलन की रात क्या हो ?
जो विरह में मिट चुका,
उससे मिलन की बात क्या हो ?

[संकेत से]

विश्ववंद्य बापू

क्रियाशील दृढ़ हाथ और,
मुख पर मृदुतम मुस्कान।
कठिन साधना से निकली हो,
जैसे सिद्धि महान !
एक तेज - जिसमें कितने
सूर्यों का अभ्युत्थान।
एक मंत्र-जिससे अभिशापों—
से निकले वरदान।
स्वर जो विश्व-ताप की सब अनुभूति लिए है साथ।
है स्वतन्त्रता के प्रदीप सा पराधीन के हाथ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ये सब जैसे हैं विभूतियाँ,
जो लेकर अनुराग।
बापू! सज्जित करने आईं,
आज तुम्हारा त्याग॥
वही त्याग जो वैभव के
स्वप्नावसान का ज्ञान—
बन कर जागृत है जीवन के—
क्षण क्षण में सुख मान।

विश्व-संपदा छोटी है, इतना महान है त्याग।
पद-वंदन के लिए तुच्छ लगता है स्वर्ण-पराग॥

कर्मयोग के साधन तुम हो,
निर्बल के बल राम।
कितने कंठों में गूँजा है,
आज तुम्हारा नाम?
विश्ववंद्य तुमने खोजे हैं,
निष्प्राणों में प्राण।
किया तुम्हीं ने जीवन में,
जीवन का नव निर्माण।

छिद्रों में संगीत भरा, कर दिया उन्हें स्वर-द्वार।
तुमने लघु संकेत किया, गूँजा सारा संसार॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बापू! तुमको पाकर युग का,
धन्य हुआ इतिहास।
आज तुम्हारा वर्तमान ही
है भविष्य की साँस।
जिस पथ पर गति शील—
तुम्हारी छाया का आकार।
है उस पथ पर ही स्वतन्त्रता,
का मंगल - मय द्वार।
सुन पड़ता है वीर गीत सुन पड़ता है जय-नाद।
विजय सामने ही है बापू दो तुम आशीर्वाद॥

[स्फुट]

श्री रामकुमार वर्मा के ग्रन्थ

काव्य— चित्तौड़ की चिता, अंजलि, रूपराशि, चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, निशीथ, संकेत (अप्रकाशित)

नाटक— पृथ्वी की आँखें, रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, पुरस्कार।

संग्रह— कबीर पदावली, हिन्दी गीतिकाव्य।

गद्य-काव्य — हिम-हास।

आलोचना— साहित्य समालोचना, कबीर का रहस्यवाद, हिन्दी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, संत कबीर।

————

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री भगवती चरण वर्मा

ये छायावाद के अधिक स्पष्ट कवि हैं। यद्यपि इनकी कविता में आध्यात्मिक संकेत नहीं है, तथापि उसमें जीवन के रहस्य बहुत व्यापकता के साथ स्पष्ट किये गये हैं। जीवन का जितना भी उन्मेष, जितना भी वेग और आतंककारी जितना भी रौद्र रूप है, वह सभी अपने भीषण और नग्न रूप में भगवतीचरण की कविता में सजीव हो उठा है। जीवन में आग लगाने की प्रवृत्ति संसार को प्रलय-धार से बहा देने की भावना इनकी कविता में अनेक बार मिलती है, क्योंकि जीवन और संसार दोनों ही छल और प्रवंचना हैं। 'मानव' और 'बादल' कविताएँ इस भाव को स्पष्टता के साथ चित्रित करती हैं। अतः संसार को मज़बूती के साथ पकड़नेवाले, कवि भगवतीचरण आध्यात्मिक कवि हैं ही नहीं।

भगवतीचरण गीति-काव्य में भी सफल हुए हैं! 'प्रेम संगीत' में प्रेम की अभिव्यक्ति बड़ी हृदय-ग्राही है। संसार को सारी पहेली इसी 'प्रेम-संगीत' में सुलझी हुई है। प्रेमी अपनी प्रेमाभिव्यक्ति में इस संसार की कोमल और परुष भावनाओं को एक साथ स्पर्श कर हमें प्रेम से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आन्दोलित कर देता है। इनकी 'प्रिये' भौतिक संसार की स्त्री है वह इनकी प्रेमिका है। उनमें कोई आध्यात्मिक संकेत खोजना व्यर्थ है। इन्होंने अपने दूसरे काव्य संग्रह 'मानव' में जीवन के वस्तुवाद की व्याख्या की है तथा जनवाद की ओर अभिरुचि दिखलायी है।

भगवतीचरण जी सफल कहानी-लेखक भी हैं। किसी घटना को किस प्रकार हृदयग्राही बनाना चाहिये, इस बात को ये खूब जानते हैं। 'नूरजहाँ की क़ब्र' कविता में नूरजहाँ का पिछला जीवन एक कहानी की तरह स्पष्ट हो आता हैं। प्रबन्धात्मक में वर्मा जी सफल हैं, किन्तु एक बात है—उस प्रबन्धात्मकता में वर्मा जी दार्शनिकता का पुट देने का प्रयत्न करते हैं। जहाँ यह दार्शनिकता कुछ अधिक हुई कि कवि उपदेशक बन जाता है और उसकी कृति का सारा महत्व खो जाता है। वह दार्शनिकता 'ख़ैयाम' से मिलती जुलती है।

जहाँ वे 'दर्शन' का दर्शनमात्र कराते हैं, वहाँ वे सफल कवि हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मेरी आग

निज उर की वेदी पर मैंने महा यज्ञ का किया विधान,
समिधि बना कर ला रक्खे हैं चुन-चुन कर अपने अरमान,
अभिलाषाओं की आहुतियाँ ले आया हूँ आज महान,
और चढ़ाने को आया हूँ अपनी आशा का बलिदान,

अभिमन्त्रित करता है उसको इन आहों का भैरव राग ;
जल उठ ! जल उठ ! अरी धधक उठ ! महानाश से मेरी आग ।

आमन्त्रित हैं यहाँ कसक से क्रीड़ाएँ करने वाले,
हृदय - रक्त से निज वैभव से प्यालों को भरने वाले,
जीवन की अतृप्त तृष्णा से तड़प - तड़प मरने वाले,
अन्धकार के महा उदधि में अन्धों से तरने वाले,

फूल चढ़ाने वे आये हैं जिनमें मिलता नहीं पराग ;
जल उठ ! जल उठ ! अरी धधक उठ ! महानाश सी मेरी आग ।

इस उत्सव में आन जुड़े हैं हँस - हँस बलि होने वाले,
निज अस्तित्व मिटा कर पल में तन-मन-धन खोने वाले,
उर की लाली से इस जग की कालिख को धोने वाले,
हँसने वालों के विषाद पर जी भर कर रोने वाले,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आज आँसुओं का घृत लेकर आया है मेरा अनुराग ;
जल उठ ! जल उठ ! अरी धधक उठ । महानाश सी मेरी आग ।

यहाँ हृदय वालों का जमघट पीड़ाओं का मेला है,
अर्घ्यदान है अपनेपन का, यह पूजा की बेला है,
आज विस्मरण के प्रांगण में जीवन की अवहेला है,
जो आया है यहाँ प्राण पर वह अपने ही खेला है,

फिर न मिलेंगे ये दीवाने, फिर न मिलेगा इनका त्याग ,
जल उठ ! जल उठ ! अरी धधक उठ ! महानाश सी मेरी आग !

लपटें हों विनाश की जिनमें, जलता हो ममत्व का ज्ञान,
अभिशापों के अंगारों में झुलस रहा हो विभव विधान,
अरे क्रान्ति की चिनगारी से तड़प उठे वासना महान,
उच्छ्वासों के धूम्र-पुंज से ढक जावे जग का अभिमान,

आज प्रलय की वह्नि जल उठे, जिसमें शोला बने विराग ;
जल उठ । जल उठ । अरी धधक उठ । महानाश सी मेरी आग !

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नूरजहाँ की क़ब्र पर

तुम रजकण के ढेर, उलूकों के तुम भग्न विहार !
किस आशा से देख रहे हो उस नभ पर प्रतिवार ?
कि जिससे टकराता था कभी
तुम्हारा उन्नत भाल ?
सुनते हैं, तुमने भी देखा था वैभव का काल,
धूल में मिले हुए कंकाल
तुम्हारे संकेतों के साथ
नाचता था साम्राज्य विशाल;
तुम्हारा क्रोध और उल्लास
बिगड़ते बनते थे भूपाल;
किन्तु है आज कहानी शेष,
प्रबल है, प्रबल काल की चाल।
एक समय पर्वत-मालाओं की प्रतिध्वनि के साथ
तुम रोयी थीं प्रथम नमा कर, उस भू पर निज माथ,
कि जिस पर था सगर्व आरूढ़
तुम्हारा गुरुतर भार।
जीवन के पहले ही क्षण में वह जीवन की हार
पतन ही है जीवन का सार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तुम्हारा प्यारा शैशव काल
स्वर्ग की सुषमा का आगार
ज्ञान के धुँधलेपन से शून्य
किलकने हँसने के दिन चार,
भाग्य की देवि भाग्य का तुम्हें
वही तो था सारा उपहार !

देखे थे सुख-मयी कल्पना के शत-शत प्रासाद;
पुलकित नयनों से देखा था तुमने वह आह्लाद
कि जिसको फिर पाने के लिए
रहीं रोती दिन रात
क्षणिक प्रभा थी, था भविष्य का अन्धकार अज्ञात,
आह बचपन के सुखद प्रभात !

दूसरों के हँसने के साथ
पुलक उठता था सारा गात;
छलकता था नयनों में नीर
किसी पर यदि होता आघात;
वासना, तृष्णा, ईर्ष्या, डाह
कहो क्या थे पहले भी ज्ञात ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लाड़-प्यार में तुम बढ़ती थीं—कहाँ ? किधर ? किस ओर ?
अरे, विश्व के उस वैभव का मिलता ओर न छोर
कि जिसके एक अंश तक की
न ले पायीं तुम थाह।
बहता है संसार वासना का है तीव्र प्रवाह,
देवि, यह जीवन ही है चाह।

तुम्हारे आशा के सुख-स्वप्न
तुम्हारे वे उमंग उत्साह
तुम्हारी मधुर मन्द मुसकान,
तुम्हारे भोले भाव अथाह,
हो गये क्षण भर में ही लोप,
हँसी बन गयी पलक में आह।

उस दिन पीले हुए तुम्हारे जब हल्दी से हाथ,
बँधी प्रणय के उस बन्धन में जब तुम पति के साथ
कि जिसमें बँधता है संसार
किस प्रतीक्षा के साथ।
भय, संकोच, प्रेम, लज्जा थे, हँसते थे रतिनाथ,
दृष्टि नीचे, था ऊँचा माथ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रेम का प्रथम प्रणय-चुम्बन
पाश डाले थे कोमल हाथ,
और वह आलिंगन, कम्पन,
कोकिला थी ऋतुपति के साथ।
मन्द स्वर में सगर्व सोल्लास
कहा था तुमने 'जीवन-नाथ।'

प्रेम किया था उस चातक सा; बुझी न जिसकी प्यास।
अरे, सुधा के उन प्यालों का है विचित्र इतिहास
कि जो होठों से लगते ही
छलक जाते हैं हाय।
इच्छाएँ हैं प्रबल, किन्तु हैं असफल सकल उपाय;
भटकते हैं हम सब असहाय।

परिस्थितियों की विस्तृत परिधि,
प्रेरणाओं का है समुदाय,
गिरे नीचे नीचे दिन-रात,
क्षणिक हैं सारे क्षीण उपाय,
सुधा के हैं थोड़े से बूँद
हाथ हैं अस्थिर, चंचल हाय।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अरुण कपोलों में रस था, अधरों में अमृत-बोल !
तुम्हें ज्ञान भी था उन आँखों की मदिरा का मोल ?
कि जिनकी कुछ रेखाएँ लाल
हृदय उठता है काँप !
बना भृकुटियों का बाँकापन यौवन का अभिशाप,
शेष है अब तक वही प्रलाप !

किन्तु वह सौरभ और पराग —
प्रेम का गर्व प्रेम का ताप
और निश्छल निर्मल अनुराग !
किया था तुमने कैसे पाप ?
कि वह सारा पावन वैभव
उड़ गया नभ पर बनकर भाप !

आह ! भाग्य से हुईं तुम्हारी उस दिन आँखें चार,
जिस दिन देखा था सलीम ने वह अपना संसार
कि जिस अज्ञात खंड में उसे
शान्ति थी अथवा भ्रान्ति ?
अनायास तुम काँप उठी थीं, थी वह प्रथम अशान्ति
देवि। यह जीवन ही है क्रान्ति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दास हो अथवा हो सम्राट्
विश्व भर की स्वामिनि है भ्रान्ति,
परिस्थितियों का है यह चक्र
जिसे हम सब कहते हैं क्रान्ति,
भाग्य की देवि। भाग्य की भेंट
सदा से है जीवन की शान्ति।

तृष्णा। तृष्णा। आह रक्त से रंजित तेरे हाथ।
विश्व खेलता है पागल सा उन पापों के साथ
कि जिनके पीछे ही है लगा
विषम रौरव का जाल।
मिटा भाग्य सिन्दूर तुम्हारा, रिक्त हो गया भाल,
प्रेम ही बना प्रेम का काल।

आह अनजान शेर अफ़गन।
तुम्हारा सुख-साम्राज्य विशाल–
कौन सा था वह गुरु-अपराध?
—नष्ट हो समा गया पाताल।
प्रेम का था कैसा उपहार।
मृत्यु बन गयी गले की माल।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुम रोयी थीं. भाग्य हँसा था, था अद्भुत व्यवहार
'आह शेर अफ़गन ।' गूँजी थी वह सकरुण चीत्कार
कि जिससे हृदय रक्त मिलकर
बना नयनों का नीर।
तुम समझी थीं रुक न सकेगी यह सरिता गम्भीर
किन्तु था निर्बल हृदय अधीर।

आह, वह पतिघातक का प्यार।
वासना का उन्माद गँभीर।
कसक का भी होता है अन्त,
क्षणिक है सदा वेदना तीर,
कठिन है कठिन आत्म-बलिदान,
कठिन हैं ये मनसिज के वीर।

एक परिधि है उद्गारों की, परिमित है परिताप।
मिट जाती है हृदय-पटल से वह स्मृति छाया आप
कि जिसका पाँच वर्ष तक देवि
किया तुमने सन्मान।
उस अशान्ति की हलचल को करने को अन्तर्धान
किया आकांक्षा का आह्वान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बनीं उस दिन सम्राज्ञी और
हुआ तुमको तृष्णा का ज्ञान;
आह। वह आत्म-समर्पण, हार।
उसी दिन लोप हो गया मान।
उसी दिन तुमने पल में किया
पतन रूपी मदिरा का पान।

'और। और !' की ध्वनि प्रतिध्वनि है. 'और ! और ! कुछ और !
तृप्ति असम्भव है, चलने दो उन प्यालों के दौर
कि जिनके पीने ही के साथ
धधक उठती है प्यास।
झुक-झुक पड़ते हैं पागल से, आह क्षणिक उल्लास—
आत्म-विस्मृति का यह उपहास।

महत्वाकांक्षा। उफ़ उन्माद।
हुआ जिसको तेरा आभास,
उठा ऊँचे बन कर उत्साह,
गिरा नीचे बन कर निःश्वास।
पराजय की सीढ़ी है विजय
अरे भ्रम है, भ्रम है विश्वास।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

धरा धसकती थी, असह्य था देवि ! तुम्हारा भार,
उन कोमल चरणों के नीचे था समस्त संसार
कि जिनमें चुभते थे तत्काल
फूल भी बन कर शूल !
साम्राज्ञी थीं, किन्तु दैव था क्या तुम पर अनुकूल ?
यह तो थी जीवन की गोंद ।

शक्ति की स्वामिनि ! भोग-विलास
सदा है सुख वैभव का मूल,
किन्तु खुल गयी अचानक आँख,
प्रकृति ही है इसके प्रतिकूल,
आजकल ! आह क्षणिक ऐश्वर्य
हुए सुख-स्वप्न सभी निर्मूल !

उच्च शिखर था आकांक्षा का नीचे था अज्ञात !
खेल रहा था वहाँ परिस्थिति का वह झंझावात
कि जिसके चक्कर में पड़कर
विजय बन जाती व्यंग ।
तुम्हें गर्व था उस यौवन पर, था अनुकूल अनंग,
आह. दीपक पर मुग्ध पतंग !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अचानक पल भर में ही देवि !
लोप हो गया सकल रस-रंग;
झुक गया माथ, गिर पड़ा मुकुट,
व्यर्थ हो गया भृकुटि-सारंग;
गिराया जहाँगीर को किन्तु
गिरीं तुम भी तो उसके संग !

'गिर सकती हो !' क्या इसका भी था तुमको अनुमान ?
एक कल्पना की छाया है यह सारा अभिमान
कि जिससे प्रेरित होकर देवि ।
बनीं तुम निपट निशंक ।
उठते गिरते ही रहते हैं राजा हों या रंक !
अमिट हैं ये विधिना के अंक ।

अरे दो ही हिचकी की बात—
हृदय में समा गया आतंक;
रुक गयी जहाँगीर की श्वास,
झुक गयी मद की चितवन बंक;
बना जीवन का भार
और जीवन ही बना कलंक ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जो कि सिहर उठते थे भय से, देख चढ़े भ्रू-चाप
उनकी ही आँखों में देखा तुमने वह अभिशाप
कि जिसके व्यंग हृदय में हाय।
चुभ गये बन कर तीर।
बदला ही तो था बदला है देवि ! सदा बेपीर !
आग में कब होता है नीर ?

अरी सम्राज्ञी ! वह साम्राज्य
मिट गया बन कर उष्ण समीर,
और उच्छृंखल ऊँचा भाल
झुका नीचे बन कर गम्भीर,
नाश की स्वामिनि ! तुम बन गयीं
नाश के लिए नितान्त अधीर !

ऐ रजकण के ढेर ! तुम्हारा है विचित्र इतिहास !
तुम मनुष्य की उन अभिलाषाओं के हो उपहास
कि जिनका असफलता है अन्त
और आशा जीवन !
वह अजान खंड ही यह लो आज तुम्हारा सदन
कभी उत्थान; कभी है पतन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वासनाओं का यह संसार
भयानक भ्रम का है बन्धन,
और इच्छाओं का मंडल
आदि से अन्त रुदन है रुदन;
एक अनियन्त्रित हाहाकार !
इसी को कहते हैं जीवन।

[मधुकरण से]

गीत

प्रथम

कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें !
जीवन-सरिता की लहर-लहर
मिटने को बनती यहाँ, प्रिये !
संयोग क्षणिक ! फिर क्या जाने
हम कहाँ और तुम कहाँ, प्रिये ?
पल-भर तो साथ-साथ बह लें ;
कुछ सुन लें, कुछ अपनी कह लें !
आओ, कुछ ले लें औ दे लें !
हम हैं अजान पथ के राही,
'चलना' जीवन का सार, प्रिये !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दुःसह है, अति दुःसह—
एकाकीपन का भार, प्रिये !
पल-भर हम-तुम मिल हँस खेलें
आओ कुछ ले लें औ दे लें !

हम तुम अपने में लय कर लें !
उल्लास और सुख की निधियाँ,
बस इतना इनका मोल प्रिये !
करुणा की कुछ नन्हीं बूँदें,
कुछ मृदुल प्यार के बोल, प्रिये !
सौरभ से अपना उर भर लें ,
हम तुम अपने में लय कर लें !

हम-तुम जी भर खुल कर मिल लें !
जग के उपवन की यह मधु-श्री,
सुषमा का सरस वसन्त प्रिये !
दो साँसों में बस जाय और
ये साँसें बनें अनन्त , प्रिये
मुरझाना है, आओ खिल लें ,
हम-तुम जी भर खुलकर मिल लें !

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द्वितीय

मेरे जीवन की रानी !
मेरे जीवन में आओ !
मधु ऋतु की पागल कोकिल !
मधु में पंचम भर जाओ !
ऐ उर के मीठे सपने !
विस्मृति के फूल लुटाओ !
उन्माद भरी तन्मयता !
अपना आसव भर लाओ !

मैं बनूँ प्रेम का कम्पन,
तुम उसकी मधुर कहानी,
मेरे जीवन में आओ
मेरे जीवन की रानी !
कल्पना किया करती है
मेरे मानस में क्रीड़ा,
खेला करती है निशि-दिन
प्राणों से मीठी पीड़ा,
है सिसक रही युग-युग की
प्यासी-सी यह अभिलाषा;
हँसती रहती है उर में
मेरी चिर-संचित आशा !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैं स्वयम् डुबा लूँ जिसमें,
तुम वह प्रवाह बन जाओ!
मेरे सपने की प्रतिमा!
सपना-सी बन कर आओ!

मैं सागर का गर्जन हूँ,
तुम सरिता की रँगरेली,
मैं जीवन का विप्लव हूँ,
तुम उसकी मौन पहेली;
मैं ताप बनूँ पावक का,
तुम हो प्रकाश की माला;
उन्माद बनूँ मैं मधु का,
तुम हो सुरभित मधुशाला;
मैं बनूँ क्रान्ति की हलचल,
तुम करुणा दीवानी सी;
मैं तड़प उठूँ आँधी सा,
तुम बरस पड़ो पानी सी!

मेरी आहों के शोलों
का ज्वालामुखी प्रबल हो,
उच्छ्वास तुम्हारी धूमिल
नभ-मंडल की हलचल हो;
मैं बनूँ नाश विशृंखल,
तुम महा प्रलय अविकल हो;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैं बनूँ नृत्य तांडव का
तुम उसकी गति चंचल हो,

विद्रोह भरे जीवन में,
तुम महाशक्ति बन जाओ !
मेरे पतझड़ की झंझा,
मेरे पतझड़ में आओ।

मेरे सोये से उर में
तुम जागृति की कम्पन-सी,
अलसाई-सी आँखों में
मदिरा के पागलपन-सी;
मेरे सूने-से जग में
तुम वैभव के स्पन्दन-सी,
आओ, जीवन-निधि ! आओ,
जीवन में तुम जीवन-सी।

जीवन-जलनिधि में मेरी
तृष्णा अतृप्त बन जाओ !
मैं भूल गया हूँ निज को,
निज बनकर मुझमें आओ !

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तृतीय

तुम सुधि बन-बन कर बार-बार
क्यों कर जाती हो प्यार मुझे ?
फिर विस्मृति बन तन्मयता का
दे जाती हो उपहार मुझे !
मैं करके पीड़ा को विलीन
पीड़ा में स्वयम् विलीन हुआ,
अब असह बन गया देवि, तुम्हारी अनुकम्पा का भार मुझे !
माना वह केवल सपना था,
पर कितना सुन्दर सपना था !
जब मैं अपना था, और सुमुखि !
तुम अपनी थीं, जग अपना था !
जिसको समझा था प्यार, वही
अधिकार बना पागलपन का,
अब मिटा रहा प्रतिपल, तिल-तिल, मेरा निर्मित संसार मुझे !

चतुर्थ

हम दीवानों की क्या हस्ती ?
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले !
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

आये बन कर उल्लास अभी ,
आँसू बन कर बह चले अभी ;

सब कहते ही रह गये, अरे
तुम कैसे आये, कहाँ चले ?
किस ओर चले ? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले;
जग से उसका कुछ लिये चले
जग को अपना कुछ दिये चले,

दो बात कहीं, दो बात सुनीं !
कुछ हँसे और फिर कुछ रोये

छक कर सुख दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिये चले !
हम भिखमंगों की दुनिया में ,
स्वच्छन्द लुटा कर प्यार चले ;
हम एक निशानी-सी उर पर
ले असफलता का भार चले ;

हम मान रहित, अपमान-रहित
जी भर कर खुल कर खेल चुके;
हम हँसते-हँसते आज यहाँ
प्राणों की बाज़ी हार चले !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हम भला-बुरा सब भूल चुके,
नत मस्तक हो, मुख मोड़ चले;
अभिशाप उठा कर होठों पर
वरदान दृगों से छोड़ चले,
अब अपना और पराया क्या ?
आबाद रहें रुकने वाले !
हम स्वयम् बँधे थे और स्वयम्
हम अपने बन्धन तोड़ चले !

[प्रेम संगीत से]

—: :—

भैंसागाड़ी

चरमर - चरमर-चूँ - चरर - मरर
जा रही चली भैंसागाड़ी !
गति के पागलपन से प्रेरित
चलती रहती संसृति महान,
सागर पर चलते हैं जहाज,
अम्बर पर चलते वायुयान,
भूतल के कोने - कोने में
रेलों - ट्रामों का जाल बिछा,
हैं दौड़ रहीं मोटरें - बसें
लेकर मानव का बृहत ज्ञान !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पर इस प्रदेश में जहाँ नहीं
उच्छ्‌वास; भावनाएँ, चाहें,
वे भूखे, अधखाए किसान
भर रहे जहाँ सूनी आहें,
नंगे बच्चे; चिथड़े पहने
माताएँ जर्जर डोल रहीं,
है जहाँ विवशता नृत्य कर रहीं
धूल उड़ाती हैं राहें,

बीते युग की परछाहीं-सी
बीते युग का इतिहास लिए,
'कल' के उन तन्द्रिल सपनों में
'अब' का निर्दय उपहास लिए,
गति में किन सदियों की जड़ता ?
मन में किस स्थिरता की ममता ?
अपनी जर्जर-सी छाती में
अपना जर्जर विश्वास लिए,

भर-भर कर फिर मिटने का स्वर,
कँप-कँप उठते जिसके स्तर-स्तर,
हिलती - डुलती, हँपती - कँपती,
कुछ रुक-रुक कर कुछ सिहर-सिहर,
चरमर - चरमर - चूँ - चरर-मरर
जा रही चली भैंसागाड़ी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उस ओर क्षितिज के कुछ आगे,
कुछ पाँच कोस की दूरी पर
भू की छाती पर फोड़ों - से
हैं उठे हुए कुछ कच्चे घर!
मैं कहता हूँ खँडहर उसको,
पर वे कहते हैं उसे ग्राम,
जिसमें भर देती निज धुँधलापन
असफलता की सुबह - शाम,
पशु बन कर नर पिस रहे जहाँ
नारियाँ जन रही हैं ग़ुलाम,
पैदा होना, फिर मर जाना,
बस यह लोगों का एक काम,

था वहीं कटा दो दिन पहले
गेहूँ का चोटा एक खेत!

तुम सुख - सुषमा के लाल
तुम्हारा है विशाल वैभव - विवेक,
तुमने देखी हैं मान भरी
उच्छृङ्खल सुन्दरियाँ अनेक,
तुम भरे - पुरे, तुम हृष्ट - पुष्ट
ए तुम समर्थ कर्त्ता - हर्ता,
तुमने देखा है क्या बोलो,
हिलता - डुलता कंकाल एक?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह था उसका ही खेत, जिसे
उसने उन पिछले चार माह,
अपने शोणित को सुखा-सुखा,
भर - भर कर अपनी विवश आह,
तैयार किया था, औ' घर में
थी रही रुग्न पत्नी कराह!
उसके वे बच्चे तीन, जिन्हें
माँ बाप का मिला प्यार न था,
जो थे जीवन के व्यंग, किन्तु
मरने का भी अधिकार न था,
क्षुधा-ग्रस्त बिलबिला रहे
मानो वे मोरी के कीड़े,
वे निपट घिनौने, महा पतित
बौने कुरूप टेढ़े - मेढ़े!

उसका कुटुम्ब था भरा-पुरा
'आहों से, हाहाकारों से'!
फ़ाक़ों से लड़ - लड़ कर प्रतिदिन,
घुट-घुट कर अत्याचारों से
तैयार किया था उसने ही
अपना छोटा - सा एक खेत!

बीबी - बच्चों से छीन, बीन
दाना - दाना, अपने में भर,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भूखे तड़पें या मरें, भरों
का तो भरना है उसको घर!
धन की दानवता से पीड़ित
कुछ फटा हुआ, कुछ कर्कश स्वर,
चरमर - चरमर - चूँ - चरर-मरर
जा रही चली भैंसागाड़ी!
है बीस कोस पर एक नगर,
उस एक नगर में एक हाट,
जिसमें मानव की दानवता
फैलाए है निज राज - पाट,
साहूकारों का भेस धरे
हैं जहाँ चोर औ' गिरहकाट;
है अभिशापों से घिरा जहाँ
पशुता का कलुषित ठाट-बाट!

उसमें चाँदी के टुकड़ों के
बदले में लुटता है अनाज,
उन चाँदी के ही टुकड़ों से
तो चलता है सब राज-काज!

वह राज-काज, जो सधा हुआ
है उन भूखे कंकालों पर,
इन साम्राज्यों की नींव पड़ी
है तिल-तिल मिटने वालों पर!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वे व्यापारी वे ज़मींदार,
वे हैं लक्ष्मी के परम भक्त,
वे निपट निरामिष सूदख़ोर,
पीते मनुष्य का उष्ण रक्त !

इस राज - काज के वही स्तम्भ
उनकी पृथ्वी, उनका ही धन,
ये ऐश और आराम उन्हीं के,
और उन्हीं के स्वर्ग सदन !

उस बड़े नगर का राग - रंग
हँस रहा निरन्तर पागल-सा,

उस पागलपन से ही पीड़ित
कर रहे ग्राम अविकल क्रन्दन !

चाँदी के टुकड़ों में विलास,
चाँदी के टुकड़ों में है बल,
सब धर्म-कर्म, सब चहल-पहल !
इन चाँदी के ही टुकड़ों में
है मानव का अस्तित्व विफल !

चाँदी के टुकड़ों को लेने
प्रतिदिन पिस कर, भूखों मरकर,
भैंसगाड़ी पर लदा हुआ
जा रहा चला मानव जर्जर,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

है उसे चुकाना सूद क़र्ज़,
है उसे चुकाना अपना कर,
जितना ख़ाली है उसका घर
उतना ख़ाली उसका अन्तर !

नीचे जलने वाली पृथ्वी
ऊपर जलने वाला अम्बर,
औ' कठिन भूख की जलन लिए
नर बैठा है बन कर पत्थर !
पीछे है पशुता का खँडहर,
दानवता का सामने नगर,
मानव का कृश कंकाल लिए

चरमर- चरमर-चूँ- चरर-मरर
जा रही चली भैंसागाड़ी !

———

राजा साहब का वायुयान

वह उजड़ा-सा था एक गाँव !

उस कठिन, कँटीली पगडंडी
पर रहे विवश - से थे घसीट
निज निर्बल, सूखे, फटे पाँव,
निष्प्राण, लौटने वाले वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कुछ थके हुए मरियल किसान !
धूमिल - सी सकल दिशाएँ थीं,
धूमिल था सारा आसमान !
उनसे भी धूमिल वे मानव,
मैंने पूछा था तब जिनसे,
'तुम कहाँ छोड़ आये, दिन भर
अपने खेतों में पशु बन कर
काटा था तुमने जो कि धान ?"
कितनी कुरूप वह शुष्क हँसी,
जो उनके सूखे होठों पर
थी भूल पड़ी, जैसे फाँसी
पर लटका भूल रहा हो नर !
फिर कहा एक ने कुछ बढ़ कर,
"क्या नहीं सुना तुमने अब तक,
हैं मोल ले रहे जिलेदार
पौने दामों पर सकल धान,
इस तरह हो रहा है वसूल
इस साल बँधा ड्योढ़ा लगान,
इसलिए, क्यों कि हैं मोल लिया
राजा साहब ने वायुयान !"
था ऊँचा - सा प्रासाद एक !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वैभव पर अकड़े बैठे थे
वे राजा - साहब कुरसी पर,
उनके पैरों पर फ़र्श बिछा था,
जिस पर बैठे थे नौकर,
दरबार जमा था वहाँ और
थे अर्ज़ कर रहे मैनेजर—
'सरकार ! हो गये हैं सरकश,
अब नमक - हरामी करने पर
आमादा हैं ये सब किसान !
कहते हैं सूखे के कारण,
हम देने को तैयार नहीं
ड्यौढ़ा क्या, पूरा तक लगान !'
कह उठा सरवराकार एक:—
'श्रीमान बड़े हैं दयावान,
वरना उनकी थी क्या मजाल
इस तरह लड़ाते जो ज़बान !'

तमतमा उठे राजा साहब,
बोले, 'मैंने कब रोका है ?
मुझको तो रुपयों से मतलब !
दिल्ली जाना है मुझे अभी
है आज शाम को वहाँ डिनर ।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा साहब ने फिर मुझ पर
डाली सगर्व हँस एक नज़र,
'देखा तुमने मिस्टर वर्मा,,
मैं सुबह वहाँ, फिर शाम वहाँ;
होती जब कौंसिल की बैठक
आना होता है मुझे यहाँ—
यह अपनी बड़ी रिआया जो
लेने को उसकी खैर - खबर!
मैं राज्य - काज का एक स्तम्भ,
है यहाँ समय का बड़ा मूल्य!
इसलिए खरीदा है मैंने
सामने आप जो देख रहे
है खड़ा हुआ वह वायुयान!'
राजा साहब हैं देश - भक्त,
राजा साहब हैं बुद्धिमान,
राजा साहब के मित्र सभी
जितने भर नेता हैं महान!
फिर इसमें कुछ आश्चर्य नहीं,
वे बड़े मिनिस्टर सूबे के—
उनके छोटे - छोटे लड़के
थे मचल पड़े सहसा कह कर,
'हम तो घूमेंगे आसमान!'

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जैसे छोटा - क्लर्क एक
साहब की बड़ी .खुशामद में
जाता है उनके बँगले पर,
साहब के छोटे बच्चों को
बिठला कर अपने कंधों पर
है कभी घुमाता, बहलाता,
फिर कभी खिलौना ले देने
ले जाया करता है बजार!
बस उसी तरह राजा - साहब
उन बड़े मिनिस्टर के बँगले पर
ले करके अपनी मोटर
दौड़े, फिर उनके बच्चों को
ले गये घुमाने आसमान!

राजा साहब हैं देश - भक्त
राजा साहब हैं बुद्धिमान
राजा साहब के मित्र सभी
जितने भर नेता हैं महान!

कितनी ही संस्थाओं के हैं
वे प्रेसीडेंट, वे चेयरमैन,
सारे जग को हैं मोह रहे
राजा साहब के मधुर बैन!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा साहब हैं दानशील,
राजा साहब हैं दयावान!

राजा साहब के पैसों से
पलते हैं कितने ही नेता,
पलते हैं कितने कवि-लेखक,
पलते हैं कितने ही गुण्डे,
पलते हैं कितने ही महन्त,
पलते हैं कितने ही नौकर,
पलते हैं कितने ही किसान!

मैं सोच रहा—राजा साहब
करते हैं कोई काम नहीं,
फिर भी उनको जो प्राप्त न हो,
जग में ऐसा आराम नहीं।
इतनों को पाल रहे हैं वे,
पर वे ख़ुद कैसे पलते हैं?
जग रेंग रहा है पृथ्वी पर,
वे आसमान पर चलते हैं!

यह क्या? नयनों के आगे क्यों
वे नाच उठे मरियल किसान
जिनकी पशुओं की-सी मेहनत
बना जाया करती है लगान!

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वे रोएँ, अथवा चिल्लाएँ,
उनको भूखों मरना होगा!
उनको तिल-तिल मिटना होगा!
वे निर्बल हैं, अति निर्बल हैं,
हैं राजा साहेब शक्तिवान।

नेता हैं सब एहसानमन्द,
अफ़सर हैं उनसे दबे हुए;
कितने प्रताप से भरा हुआ—
राजा साहब का वायुयान!

श्री भगवतीचरण वर्मा के ग्रन्थ

काव्य—मधुकण, प्रेमसंगीत, मानव।

उपन्यास—पतन, चित्रलेखा, तीन वर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते (अप्रकाशित)

कहानी—इस्टालमेंट, दो बाँके।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मध्य-धारा

श्री सियारामशरण गुप्त

श्री हरिवंश राय 'बच्चन'

श्री उदय शंकर भट्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री सियारामशरण गुप्त

आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रोत्साहन पाकर श्री सियारामशरण गुप्त ने मध्य युग की सांस्कृतिक विचार-धारा को आधुनिक युग के मनोविज्ञान में प्रतिष्ठित कर ख्याति प्राप्ति की है। वे कथात्मक इतिवृत्त लिखने में पटु हैं। कथा वर्णन के साथ ही साथ वे भावनावों का विस्तार करते हुए अपने वर्ण्य-विषय में रोचकता की सृष्टि करते हैं। करुण रस उनका सबसे अधिक प्रिय रस है। अपने इतिवृत्त में वे अभिनयात्मकता को प्रमुख स्थान देते हैं। इस प्रकार श्री सियारामशरण गुप्त में कहानी-लेखक की कथा-प्रवास शैली है, नाटककार के अभिनय तत्व की कला है और कवि के भाव-चित्रण की निपुणता है। यही उनके काव्य की पवित्र त्रिवेणी है।

कवि होने के साथ ही श्री सियारामशरण गुप्त एक अच्छे उपन्यासकार और कहानी-लेखक भी हैं। 'नारी' उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है जिसमें प्रेमचन्द्र के सदृश उन्होंने ग्रामीण वातावरण में नारी के मनोविज्ञान की अत्यन्त स्वाभाविक झाँकी प्रस्तुत की है।

'झूठ-सच' में उन्होंने हिन्दी साहित्य में कहानी की एक नवीन शैली प्रस्तुत की है। जीवन के चिन्तन-पक्ष में भावना का कौतूहल पक्ष जोड़कर उन्होंने कथा-साहित्य में एक नवीन दिशा की ओर संकेत किया है। वार्तालाप के ढंग में—अपनी डायरी के पृष्ठों में—जैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उन्होंने जीवन की बड़ी गम्भीर समीक्षा की है गद्य और पद्य समान रूप से सफलतापूर्वक लिखने में श्री सियारामशरण गुप्त ने श्रीमती महादेवी वर्मा के समान अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। वे महाकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के अनुज हैं। उन्होंने अपनी साहित्य-साधना से अपने कुल की गौरव-श्री सुरक्षित रक्खी है।

श्री सियारामशरण गुप्त का स्वास्थ्य संतोषप्रद नहीं है। महाकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में, "रोग ज्यों ज्यों उनके शरीर को शिथिल करता है, त्यों-त्यों उनका मन और सक्रिय हो उठता है और तनिक साँस लेते ही वे कुछ लिखने बैठ जाते हैं।" यह उनकी शारीरिक और मानसिक परिस्थिति है। अपने रोग की उपेक्षा करके जिस कवि ने संसार के घोर हिंसा-कांड और पैशाचिक प्रलय के विरुद्ध पाठकों की सहानुभूति प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया है, उसकी दीर्घायु की हम कामना करते हैं।

इस कवि ने आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति की रक्षा की और जीवन के पवित्र आदर्श के प्रति श्रद्धा की जो काव्याञ्जलि प्रस्तुत की है, वह कभी सौरभ-रहित न होगी।

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

घट

जतिल कंकड़ों की कर्कश रज
मल-मल कर सारे तन में,
किस निर्मम निर्दय ने मुझको
बाँधा है इस बन्धन में ?

फाँसी-सी है पड़ी गले में
नीचे गिरता जाता हूँ;
बार-बार इस अन्ध-कूप में
इधर-उधर टकराता हूँ !

ऊपर-नीचे तम ही तम है
बन्धन है अवलम्ब यहाँ !
यह भी नहीं समझ में आता ! !
गिर कर मैं जा रहा कहाँ ! !

काँप रहा हूँ; भय के मारे
हुआ जा रहा हूँ म्रियमाण;
ऐसे दुखमय जीवन से हा !
किस प्रकार पाऊँ मैं त्राण ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सभी तरह हूँ विवश, करूँ क्या
नहीं दीखता एक उपाय ;
यह क्या ? यह तो अगम नीर है,
डूबा ! अब डूब', मैं हाय !!

भगवन् । हाय । बचालो अब तो
तुम्हें पुकारूँ मैं जब तक,
हुआ तुरन्त निमग्न नीर में
आर्त्तनाद करके तब तक।

अरे, कहाँ वह गई रिक्तता,
भय का भी अब पता नहीं,
गौरववान हुआ हूँ सहसा,
बना रहूँ तो क्यों न यहीं ?

पर मैं ऊपर चढ़ा जा रहा
उज्ज्वलतर जीवन लेकर;
तुमसे उऋण नहीं हो सकता
यह नवजीवन भी देकर।

[दूर्वा दल से]

———

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ग्वालिनें

एक ग्वालिन वह जमुना तट की।
लौटी भटकी-भटकी।
प्रात प्रात ही उठ आई थी;
गोरस बेच लाभ लाई थी,
मन भाई थी पर वह जो निधि
निरख नहीं पाई थी।
लौटा सूनी-सी गलियों में,
सिर पर रीती मटकी।
एक ग्वालिन वह जमुना तट की।
फूलों पर भौंरों का गुंजन,
इधर-उधर विहगों का कुंजन,
किन्तु श्रवण-धन मिला न उसको
बदन खिन्न, मन उन्मन।
प्यासी-सी उस सीरे में भी
दूर किसी आहट की।
एक ग्वालिन वह जमुना तट की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दूसरी, वह भी गोरस वाली!
लिये न थी घट खाली।
बिका न था उसका दधि-माखन,
अंचल-बद्ध न था विक्रय-धन;
पर हलके तन लौट रही थी,
यह अच्छा भोलापन!
जाती थी, पर ठिठकी-ठिठकी
गति में मंजु मराली।
नवेली ग्वालिन, गोरस वाली।
बेचेगी क्या इन कुंजों में,
कुटिल करीलों के पुंजों में?
खिला रही है अपना मन तू
वन के इन गुंजों में।
देख रही इनमें फिर फिर क्या,
अपने उर की लाली?
भली री ग्वालिन, गोरस वाली!
चौंक पड़ी आहा, किस स्वर से!
बरसा सहसा सुरस किधर से?
ग्रीवा मोड़ मुड़ी, थामे थी
दधि-घट कम्पित कर से
तू आगे आगे थी, पीछे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तेरा यह वनमाली !
अरी ओ ग्वालिन, गोरस वाली !

चल-तनु में शुचि-मधु-रस छूटा ,
गिर कर वह कच्चा घट फूटा ,
दधि-माखन का मिस, अवनी ने
हर्ष-हास वह लूटा ।
यह नट-नागर नाच उठा है
बजा बजा कर ताली ।
धन्य री, ग्वालिन गोरस वाली ।

क्या पहली का वह विक्रय-धन ?—
तुझ पर न्योछावर दधि-माखन !
निखर गया मृदु मोदामृत में
तेरा तन-मन जीवन
प्रिय की स्मिति-निधि अहा, न-कुछ में
पा ली, तूने पा ली !
सफल री, ग्वालिन गोरस वाली !

[मृणमयी से]

– —– –

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पूजन

पद-पूजन का भी क्या उपाय ?
तू गौरव-गिरि. उत्तुङ्गकाय !
तू अमल-धवल है, मैं श्यामल,
ऊँचे पर हैं तेरे पद-तल,
यह हूँ मैं नीचे का तृण-दल,
पहुँचूँ उन तक किस भाँति, हाय !
तू गौरव-गिरि, उत्तुङ्गकाय !
हो शत-शत झंझावात प्रबल,
फिर भी स्वभावतः तू अविचल।
मैं तनिक-तनिक में चिर चञ्चल,
मेटूँ कैसे यह अन्तराय ?
तू गौरव-गिरि, उत्तुङ्गकाय !
अविरत तेरा करुणा-निर्झर,
अगणित धाराओं से झर झर,
जीवित रखता है जीवन भर,
मेरा यह जीवन जड़ित्प्राय ;
तू गौरव-गिरि उत्तुङ्गकाय !

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हैं जहाँ अगम्य दिवाकर-कर,
तेरे गह्वर भी आकर-वर,
हैं ऊँचे से भी ऊँचे पर;
मन उन तक भी किस भाँति जाय ?
तू गौरव-गिरि, उत्तुङ्गकाय !

[पाथेय से]

एक फूल की चाह

[१]

उद्वेलित कर अश्रु-राशियाँ,
हृदय-चिताएँ धधकाकर,
महा महामारी प्रचण्ड हो
फैल रही थी इधर उधर।
क्षीण-कण्ठ मृत वत्साओं का
करुण रुदन दुर्दान्त नितान्त,
भरे हुए था निज कृश रव में
हाहाकार अपार अशान्त।
बहुत रोकता था सुखिया को,
'न जा खेलने को बाहर',
नहीं खेलना रुकता उसका
नहीं ठहरती वह पल भर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मेरा हृदय कांप उठता था,
बाहर गई निहार उसे;
यही मनाता था कि बचा लूँ
किसी भांति इस बार उसे।

भीतर जो डर रहा छिपाये,
हाय! वही बाहर आया।
एक दिवस सुखिया के तनु को
ताप - तप्त मैंने पाया।

ज्वर में विह्वल हो बोली वह
क्या जानूँ किस डर से डर —
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर!

[२]

बेटी, बतला तो तू मुझको
किसने तुझे बताया यह;
किसके द्वारा कैसे तूने
भाव अचानक पाया यह?

मैं अछूत हूँ, मुझे कौन हा!
मन्दिर में जाने देगा;
देवी का प्रसाद ही मुझको
कौन यहाँ लाने देगा?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बार बार, फिर फिर, तेरा हठ !
पूरा इसे करूँ कैसे;
किससे कहूँ, कौन बतलावे,
धीरज हाय ! धरूँ कैसे ?

कोमल कुसुम-समान देह हा !
हुई तप्त अंगार - मयी;
प्रति पल बढ़ती ही जाती है
विपुल वेदना, व्यथा नई।

मैंने कई फूल ला लाकर
रक्खे उसकी खटिया पर;
सोचा-शान्त करूँ मैं उसको,
किसी तरह तो बहला कर;

तोड़-मोड़ वे फूल फेंक सब
बोल उठी वह चिल्ला कर—
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर !

[३]

क्रमशः कण्ठ क्षीण हो आया,
शिथिल हुए अवयव सारे,
बैठा था नव-नव उपाय की
चिन्ता में मैं मनमारे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जान सका न प्रभात सजग से
हुई अलस कब दोपहरी
स्वर्ण-घनों में कब रवि डूबा
कब आई सन्ध्या गहरी।

सभी ओर दिखलाई दी बस,
अन्धकार की ही छाया,
छोटी-सी बच्ची को ग्रसने
कितना बड़ा तिमिर आया।

ऊपर विस्तृत महाकाश में
जलते - से अंगारों से,
झुलसी - सी जाती थीं आँखें
जगमग जगते तारों से।

देख रहा था—जो सुस्थिर हो
नहीं बैठती थी क्षण भर,
हाय! वही चुपचाप पड़ी थी
अटल शान्ति-सी धारण कर।

सुनना नहीं चाहता था मैं
उसे स्वयं ही उकसा कर—
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर!

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

[४]

हे मातः, हे शिवे, अम्बिके,
तप्त ताप यह शान्त करो;
निरपराध छोटी बच्ची यह,
हाय! न मुझसे इसे हरो!

काली कान्ति पड़ गई इसकी,
हँसी न जाने गई कहाँ,
अटक रहे हैं प्राण क्षीण तर
साँसों में ही हाय, यहाँ!

अरी निष्ठुरे, बढ़ी हुई ही
है यदि तेरी तृषा नितान्त,
तो कर ले तू उसे इसी क्षण
मेरे इस जीवन से शान्त!

मैं अछूत हूँ तो क्या मेरी
विनती भी है हाय! अछूत,
उससे भी क्या लग जावेगी
तेरे श्री-मन्दिर को छूत?

किसे ज्ञात, मेरी विनती वह
पहुँची अथवा नहीं वहाँ,
उस अपार सागर का दीखा
पार न मुझको कहीं वहाँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अरी रात, क्या अक्षयता का
पट्टा लेकर आई तू!
आकर अखिल विश्व के ऊपर
प्रलय-घटा-सी छाई तू!
पग भर भी न बढ़ी आगे तू
डट कर बैठ गई ऐसी,
क्या न अरुण-आभा जागेगी,
सहसा आज विकृत कैसी!
युग के युग-से बीत गये हैं,
तू ज्यों की त्यों है लेटी,
पड़ी एक करवट कब से तू,
बोल, बोल, कुछ तो बेटी!
वह चुप थी, पर गूंज रही थी
उसकी गिरा गगन-भर भर—
'मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल दो तुम लाकर'

[५]

"कुछ हो देवी के प्रसाद का
एक फूल तो लाऊँगा;
हो तो प्रातःकाल, शीघ्र ही
मन्दिर को मैं जाऊँगा।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुझ पर देवी की छाया है
और इष्ट है यही तुझे;
देखूँ देवी के मन्दिर में
रोक सकेगा कौन तुझे।"

मेरे इस निश्चल निश्चय ने
झट-से हृदय किया हलका;
ऊपर देखा—करुण राग से
रञ्जित भाल नभस्थल का!

झड़ सी गई तारका वलि थी
म्लान और निष्प्रभ होकर;
निकल पड़े थे खग नीड़ों से
मानों सुध-बुध-सी खोकर।

रस्सी डोल हाथ में लेकर
निकट कुएँ पर जा जल खींच,
मैंने स्नान किया शीतल हो,
सलिल-सुधा से तनु को सींच,

उज्ज्वल वस्त्र पहन घर आकर
अशुचि ग्लानि, सब धो डाली।
चन्दन-पुष्प-कपूर-धूप से
सजा ली पूजा की थाली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दुखिया के सिरहाने जाकर
मैं धीरे से खड़ा हुआ।
आँखें झपी हुई थीं, मुख भी
मुरझा-सा था पड़ा हुआ।

मैंने चाहा,—उसे चूम लूँ
किन्तु अशुचिता से डर कर
अपने वस्त्र सँभाल, सिकुड़ कर
खड़ा रहा कुछ दूरी पर।

वह कुछ कुछ मुस्काई सहसा,
जानें किन स्वप्नों में लग्न,
उसकी वह मुस्काहट भी हा!
कर न सकी मुझको मुद-मग्न।

अक्षम मुझे समझ कर क्या तू
हसी कर रही है मेरी?
बेटी, जाता हूँ मन्दिर मैं
आज्ञा यही समझ तेरी।

उसने नहीं कहा कुछ, मैं ही
बोल उठा तब धीरज धर—
तुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल तो दूँ लाकर!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

[६]

ऊँचे शैल-शिखर के ऊपर
मन्दिर था विस्तीर्ण विशाल,
स्वर्ण-कलशसरसिज विहसित थे
पाकर समुदित रवि-कर-जाल।

परिक्रमा-सी कर मन्दिर की,
ऊपर से आकर झर झर,
वहाँ एक झरना झरता था
कल कल मधुर गान कर कर।

पुष्प - हार- सा जँचता था वह
मन्दिर के श्री चरणों में,
त्रुटि न दीखतीं थी भीतर भी
पूजा के उपकरणों में।

दीप-दूध से आमोदित था
मन्दिर का आँगन सारा;
गूँज रही थी भीतर बाहर
मुखरित उत्सव की धारा।

भक्त-वृन्द मृदु मधुर कण्ठ से
गाते थे सभक्ति मुद-मय—
'पतित-तारिणी पाप-हारिणी,
माता, तेरी जय जय-जय !'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

'पतित तारिणी, तेरी जयजय'—
मेरे मुख से भी निकला,
बिना बढ़े ही मैं आगे को
जानें किस बल से ढिकला!

माता, तू इतनी सुन्दर है,
नहीं जानता था मैं यह;
माँ के पास रोक बच्चों की,
कैसी विधि यह तू ही कह?

आज स्वयं अपने निदेश से
तूने मुझे बुलाया है,
अभी आज पापी अछूत यह
श्री-चरणों तक आया है!

मेरे दीप-फूल लेकर वे
अम्बा को अर्पित करके
दिया पुजारी ने प्रसाद जब
आगे को अञ्जलि भरके,

भूल गया उसका लेना झट,
परम लाभ-सा पाकर मैं।
सोचा,—बेटी को माँ के ये
पुण्य-पुष्प दूँ जाकर मैं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

[७]

सिंह पौर तक भी आँगन से
नहीं पहुँचने मैं पाया,
सहसा यह सुन पड़ा कि—'कैसे
यह अछूत भीतर आया ?

पकड़ो, देखो भाग न जावे,
बना धूर्त यह है कैसा;
साफ-स्वच्छ परिधान किये है,
भले मानुषों के जैसा !

पापी ने मन्दिर में घुस कर
किया अनर्थ बड़ा भारी;
कलुषित कर दी है मन्दिर की
चिरकालिक शुचिता सारी।"

ऐं, क्या मेरा कलुष बड़ा है
देवी की गरिमा से भी;
किसी बात में हूँ मैं आगे
माता की महिमा के भी ?

माँ के भक्त हुए तुम कैसे,
करके यह विचार खोटा ?
माँ के सम्मुख ही माँ का तुम
गौरव करते हो छोटा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कुछ न सुना भक्तों ने, झट से
मुझे घेर कर पकड़ लिया;
मार मार कर मुक्के-घूँसे
धम-से नीचे गिरा दिया।

मेरे हाथों से प्रसाद भी
बिखर गया हा। सब का सब,
हाय! अभागी बेटी तुझ तक
कैसे पहुँच सके यह सब।

मैंने उनसे कहा,—दण्ड दो
मुझे मार कर, ठुकरा कर,
बस यह एक फूल कोई भी
दो बच्ची को ले जाकर।

[६]

न्यायालय ले गये मुझे वे,
सात दिवस का दंड-विधान—
मुझको हुआ, हुआ था मुझसे
देवी का महान् अपमान!

मैंने स्वीकृत किया दण्ड वह
शीश झुकाकर चुप ही रह;
उस असीम अभियोग दोष का
क्या उत्तर देता क्या कह?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सात रोज ही रहा जेल में
या कि वहाँ सदियाँ बीतीं ;
अविश्रान्त बरसा करके भी
आँखें तनिक नहीं रीतीं।

कैदी कहते—"अरे मूर्ख, क्यों
ममता थी मन्दिर पर ही ?
पास वहीं मसजिद भी तो थी
दूर न था गिरजाघर भी।"

कैसे उनको समझाता मैं,
वहाँ गया था क्या सुख से ;
देवी का प्रसाद चाहा था
बेटी ने अपने मुख से।

[९]

दण्ड भोग कर जब मैं छूटा,
पैर न उठते थे घर को ;
पीछे ठेल रहा था कोई
भय-जर्जर तनु पञ्जर को।

पहले की-सी लेने मुझको
नहीं दौड़ कर आई वह ;
उलझी हुई खेल में ही हा !
अबकी दी न दिखाई वह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उसे देखने मरघट को ही
गया दौड़ता हुआ वहाँ,—
मेरे परिचित बन्धु प्रथम ही
फूँक चुके थे उसे जहाँ।

बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी,
हाय! फूल-सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी!

अन्तिम बार गोद में बेटी,
तुझको ले न सका मैं हा!
एक फूल माँ के प्रसाद का भी
तुझको दे न सका मैं हा!

वह प्रसाद देकर ही तुझको
जेल न जा सकता था क्या?
तनिक ठहर ही सब जन्मों के
दण्ड न पा सकता था क्या?

बेटी की छोटी इच्छा वह
कहीं पूर्ण मैं कर देता,
तो क्या अरे देव त्रिभुवन का
सभी विभव मैं हर लेता?

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

यहीं चिता पर धर दूँगा मैं,
—कोई अरे सुनो, वर दो—
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही लाकर दो!

[आर्द्रा से]

———

बापू

विश्व - महावंश - पाल,
धन्य, तुम धन्य हे धरा के लाल!
छद्म-छल के अबोध,
वीतराग वीतक्रोध,
तुम में पुरातन है नूतन में,
नूतन निरन्तर में।
छोटे-से क्षितिज हे,
वसुधा के निज हे,
वसुधा तुम्हारे बीच स्वर्ग में समुन्नत है,
स्वर्ग वसुधा में समागत है,
आकर तुम्हारे नये संगम में,
लघु अवतीर्ण है महत्तम में,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दूर और पास आसपास खिले,
एक दूसरे से हिले;
भीतर में बाहर में;
हास और रोदन ध्वनित एक स्वर में।

जानें किस भाषा में,
ज्ञात किसे, जानें किस आशा में,
हास में तुम्हारे विश्व हँसता,
रोदन में आकर निवसता।

विश्व-वेदना का महा पारावार,
घोर-वन हाहाकार,
छोटा-सा तुम्हारा यह वर्त्तमान
विपुल भविष्य में प्रवर्द्धमान;

आज के अपत्यं तुम, कल के जनक हो,
एक के अनेक में गणक हो;
सब के सहज साध्य,
सब के सदा अवाध्य,

आत्मलीन सर्वकाल सर्वात्मीय;
कौन तव परकीय ?
तुम अपने हो विश्व भर के
पुण्यातिथि भी सदैव घर के,

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हे विदेह
गेही भी सदैव तुम हो अगेह,
फेंक सकते हो तुम्हीं निर्विकार;
मृत्तिका समान हेम-हीर मणि-मुक्ता हार;

सन्तत अतुल हे,
जन्मजात उच्च स्वर्गकुल के,
मर्त्य कुलशाखा में हुए हो गोद
सप्रमोद ;

भूतल की शुक्ति यह हलकी
एक बड़ी बूँद किसी पुण्य-स्वाति जल की
दुर्लभ सुयोग जन्य
प्राप्त कर तुममें हुई है धन्य धन्य धन्य !

बाल तुम ?– बाल युवा-वृद्ध नहीं कुछ भी,
पूर्ण विश्व-मानव तभी, तभी,
प्यार-प्रेम-श्रद्धा सह
वार वार प्रणत प्रणाम तुम्हें अहरह !

[बापू से]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विकलाङ्ग

आया बड़ी देर में दैनिक, किया सभी ने स्वागत
प्रथम पृष्ठ पर ही मुद्रित था 'एक सहस्र हताहत !'

यत्र तत्र यों ही-सा पढ़ कुछ नासा कुंचित करके,
पलट दिया पन्ना पाठक ने क्षण भर भी न ठहर के।

'एक सहस्र हताहत !'— सहसा जाग उठी जिज्ञासा,—
धरती पर उनका जीवन था क्या कृमि कीटों का-सा ?

उनके लिए किसी के उर में उठी न करुणा-लहरी,
उनकी मरण-यातना में भी बोध शक्ति है बहरी।

उनमें से जीवित कुछ अब भी ज्वाला में जल-भुनके,
तड़प रहे होंगे धरती पर, अब तब जीवन उनके।

उन छिन्नाङ्गों की चिल्लाहट रह रह कर अप्रतिहत,
करती होगी वहाँ पवन की छाती में क्षत शत शत।

नहीं प्रभावित यहाँ तनिक भी उनकी उस तड़पन से,
जड़ विकलाङ्ग हमारे मन में श्रवण और लोचन से !

[दैनिकी से]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सियारामशरण गुप्त के ग्रन्थ

कविता—आत्मोत्सर्ग, विषाद, मौर्य-विजय, अनाथ, दूर्वादल, मृण्मयी, पाथेय, आर्द्रा, बापू, उन्मुक्त, दैनिकी ।

नाटक—पुण्य पर्व ।

उपन्यास—गोद, नारी, अन्तिम आकांक्षा ।

कहानियाँ—मानुषी ।

गद्य—झूठ-सच ।

———

आ० हि० का०—२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

विकलाङ्ग

आया बड़ी देर में दैनिक, किया सभी ने स्वागत
प्रथम पृष्ठ पर ही मुद्रित था 'एक सहस्र हताहत !'

यत्र तत्र यों ही-सा पढ़ कुछ नासा कुंचित करके,
पलट दिया पन्ना पाठक ने क्षण भर भी न ठहर के।

'एक सहस्र हताहत !'— सहसा जाग उठी जिज्ञासा,—
धरती पर उनका जीवन था क्या कृमि कीटों का-सा ?

उनके लिए किसी के उर में उठी न करुणा-लहरी,
उनकी मरण-यातना में भी बोध शक्ति है बहरी।

उनमें से जीवित कुछ अब भी ज्वाला में जल-भुनके,
तड़प रहे होंगे धरती पर, अब तब जीवन उनके।

उन छिन्नाङ्गों की चिल्लाहट रह रह कर अप्रतिहत,
करती होगी वहाँ पवन की छाती में क्षत शत शत।

नहीं प्रभावित यहाँ तनिक भी उनकी उस तड़पन से,
जड़ विकलाङ्ग हमारे मन में श्रवण और लोचन से !

[दैनिकी से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सियारामशरण गुप्त के ग्रन्थ

कविता—आत्मोत्सर्ग, विषाद, मौर्य-विजय, अनाथ, दूर्वादल, मृण्मयी, पाथेय, आर्द्रा, बापू, उन्मुक्त, दैनिकी।

नाटक—पुण्य पर्व।

उपन्यास—गोद, नारी, अन्तिम आकांक्षा।

कहानियाँ—मानुषी।

गद्य—झूठ-सच।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्री हरिवंश राय 'बच्चन'

श्री बच्चन जी जीवन की अत्यंत संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में से हो कर वर्तमान में आए हैं। वस्तुतः उनके जीवन का विकाश 'अग्नि पथ' को पार कर हुआ है। अतः उनकी कविता में जीवन की गहराई अपनी तीव्र अनुभूतियों को लेकर आई है। इन अनुभूतियों ने कवि को दार्शनिक नहीं बनाया, प्रत्युत उसमें मादकता और मस्ती की ऐसी मतवाली विह्वलता भर दी कि कविता 'सतरंगिनी' की एक आकर्षक झाँकी बन गई।

श्री बच्चन का काव्य क्षेत्र में प्रवेश तो "तेरा हार" से ही हो गया था किन्तु उन्हें काव्य-क्षेत्र में यश देने का श्रेय उनकी 'मधुशाला' को ही है। उमर ख़ैयाम की रुवाइयों की दार्शनिकता और मस्ती को मौलिक रूप से लिखने का श्रेय बच्चन जी को ही है। ख़ैयाम की शैली और भावों से स्फूर्ति पाकर भी बच्चन जी ने अपनी अनुमति की मौलिकता हाथ से नहीं जाने दी है। इस 'मधुशाला' में जीवन के अनेक दृष्टिकोण मधुशाला का आधार पाकर कवि की भावना में साकार हुए हैं।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

'मधुशाला' के बाद कवि कुछ अधिक गम्भीर हो गया। ज्ञात होता है कि मधुशाला की भावना की प्रतिक्रिया कवि को जीवन में बहुत गहरे उतार ले गई। जीवनगत परिस्थितियों की विषमताएँ कवि को जो गम्भीरता नहीं दे सकीं, वह गम्भीरता 'मधुशाला' की प्रतिक्रिया में कवि को आसानी से मिल गई। इस गम्भीरता का तात्पर्य यह नहीं कि कवि अपनी कविता में दार्शनिक बन गया। वह जीवन की विषमताओं को अधिक सूक्ष्मता के साथ निरखने लगा।

कवि में जीवन के वस्तुवाद से बड़ा विद्रोह है। प्राचीन संस्कारों को वह साहस के साथ कुचल सकता है। नई दिशा में बढ़ने का साहस उसके पास प्रचुर परिमाण में है। कहीं कहीं उसके पास प्राचीन स्मृतियों का संचित कोष भी है और अपने मोह के रंगीन क्षणों में वह उन स्मृतियों की छाया में विश्राम भी कर लेता है किन्तु श्रान्ति दूर होने पर वह पुनः अपने विद्रोह के पथ पर चलने लगता है।

जीवन की गम्भीर परिस्थितियों में अपनी दिशा खोज लेने की दृष्टि श्री बच्चन की विशेषता है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मधुशाला

मृदु भावों के अंगूरों की
आज बना लाया हाला,
प्रियतम ! अपने ही हाथों से
आज पिलाऊँगा प्याला,
पहले भोग लगा लूँ तेरा,
फिर प्रसाद जग पाएगा;
सबसे पहले तेरा स्वागत
करती मेरी मधुशाला !

भावुकता-अंगूर लता से
खींच कल्पना की हाला,
कवि बनकर है साक़ी आया
भरकर कविता का प्याला,
कभी न कणभर खाली होगा,
लाख पिएँ, दो लाख पिएँ !
पाठकगण हैं पीनेवाले,
पुस्तक मेरी मधुशाला !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सुनु ! कलकल, छलछल मधु-
घट से गिरती प्यालों में हाला,
सुन ! रुनझुन, रुनझुन चल
वितरण करती मधु साक़ीबाला,
बस आ पहुँचे, दूर नहीं कुछ,
चार क़दम अब चलना है;
चहक रहे, सुन, पीनेवाले,
महक रही, ले, मधुशाला !

मेहँदी-रंजित मृदुल हथेली
में माणिक मधु का प्याला,
अंगूरी अवगुंठन डाले
स्वर्ण वर्ण साक़ीबाला,
पाग बैंजनी, जामा नीला
डाट डटे पीनेवाले;
इंद्रधनुष से होड़ रही ले
आज रँगीली मधुशाला।

लाल सुरा की धार लपट-सी
कह न इसे देना ज्वाला,
फेनिल मदिरा है, मत इसको
कह देना उर का छाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दर्द नाश है इस मदिरा का,
विगतस्मृतियाँ साक़ी हैं;
पीड़ा में आनन्द जिसे हो.
आए मेरी मधुशाला।

बजी न मन्दिर में घड़ियाली,
चढ़ी न प्रतिमा पर माला,
बैठा अपने भवन मुअज़्ज़िन
देकर मस्जिद में ताला,
लुटे ख़ज़ाने नरपतियों के
गिरीं गढ़ों की दीवारें;
रहें मुबारक पीनेवाले,
खुली रही यह मधुशाला।

एक बरस में एक बार ही
जगती होली की ज्वाला,
एक बार ही लगती बाज़ी,
जलती दीपों की माला,
दुनियावालो, किन्तु किसी दिन
आ मदिरालय में देखो;
दिन को होली, रात दिवाली,
रोज़ मनाती मधुशाला!

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सकुशल समझो मुझको, सकुशल
रहती यदि साक़ीबाला,
मंगल और अमंगल समझे
मस्ती में क्या मतवाला,
मित्रो ! मेरी क्षेम न पूछो
आकर, पर मधुशाला की;
कहा करो 'जय राम' न मिलकर,
कहा करो 'जय मधुशाला'।

सूर्य बने मधु का विक्रेता,
सिंधु बने घट, जल, हाला,
बादल बन-बन आए साक़ी,
भूमि बने मधु का प्याला,
झड़ी लगाकर बरसे मदिरा
रिमझिम, रिमझिम, रिमझिम कर;
वेलि, विटप, तृण बन मैं पीऊँ,
वर्षाऋतु हो मधुशाला।

बजी नफ़ीरी और नमाज़ी
भूल गया अल्लाताला,
गाज गिरी, पर ध्यान-सुरा में
मग्न रहा पीनेवाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शेख़ ! बुरा मत मानो इसको,
साफ़ कहूँ तो मस्जिद को—
अभी युगों तक सिखलाएगी
ध्यान लगाना मधुशाला !

मुसल्मान औ, हिन्दू हैं दो,
एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय,
एक, मगर, उनकी हाला,
दोनों रहते एक न जब तक
मस्जिद - मन्दिर में जाते;
लड़वाते हैं मस्जिद-मन्दिर,
मेल कराती मधुशाला !

मेरे अधरों पर हो अंतिम
वस्तु न तुलसीदल, प्याला,
मेरी जिह्वा पर हो अंतिम
वस्तु न गंगाजल, हाला,
मेरे शव के पीछे चलने—
वालों, याद इसे रखना—
'राम नाम है सत्य' न कहना,
कहना 'सच्ची मधुशाला'।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मेरे शव पर वह रोए, हो
जिसके आँसू में हाला,
आह भरे वह, जो हो सुरभित
मदिरा पी कर मतवाला,
दें मुझको वे कंधा जिनके
पद मद-डगमग होते हों;
और जलूँ उस ठौर जहाँ पर
कभी रही हो मधुशाला!

और चिता पर जाय उँडेला
पात्र न घृत का, पर प्याला,
घंट बँधे अंगूरलता में
किंतु न जल हो, पर हाला,
प्राणप्रिये! यदि श्राद्ध करो तुम
मेरा तो ऐसा करना—
पीनेवालों को बुलवाकर,
खुलवा देना मधुशाला!

मैं मदिरालय के अन्दर हूँ,
मेरे हाथों में प्याला।,
प्याले में मदिरालय विंवित
करने वाली है हाला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इस उधेड़-बुन में ही मेरा
सारा जीवन बीत गया—
मैं मधुशाला के अन्दर या
मेरे अन्दर मधुशाला !

बड़े-बड़े नाज़ों से मैंने
पाली है साक़ीबाला,
कलित कल्पना का ही इसने
सदा उठाया है प्याला !
मान-दुलारों से ही रखना
इस मेरी सुकुमारी को,
विश्व ! तुम्हारे हाथों में अब
सौंप रहा हूँ मधुशाला !

[मधुशाला से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्याला

मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

कल काल-रात्रि के अंधकार
में थी मेरी सत्ता विलीन,
इस मूर्तिमान जग में महान
था मैं विलुप्त कल रूप-हीन,

कल मादकता की भरी नींद
थी जड़ता से ले रही होड़,
किन सरस करों का परस आज
करता जाग्रत जीवन नवीन ?

मिट्टी से मधु का पात्र बनूँ—
किस कुंभकार का यह निश्चय ?

मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन-मेरा परिचय !

भ्रम भूमि रही थी जन्म-काल,
था भ्रमित हो रहा आसमान,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उस कलावान का कुछ रहस्य
होता फिर कैसे भासमान !

जब खुली आँख, तब हुआ ज्ञात,
थिर है सब मेरे आस-पास,

समझा था सबको भ्रमित किन्तु
भ्रम स्वयं रहा था मैं अजान,

भ्रम से ही जो उत्पन्न हुआ,
क्या ज्ञान करेगा वह संचय !

मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन-मेरा परिचय !

जो रस लेकर आया भूपर
जीवन-आतप ले गया छीन,
खो गया पूर्व गुण, रंग रूप
हो जग की ज्वाला के अधीन

मैं चिल्लाया, क्यों ले मेरी
मृदुता करती मुझको कठोर ?'

लपटें बोलीं, 'चुप, बजा-ठोंक
लेगी तुमको जगती प्रवीण।'

यह लो, मीना बाज़ार लगा,
होता है मेरा क्रय-विक्रय।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

मुझको न सके ले धन कुबेर
दिखलाकर अपना ठाट-बाट
मुझको न सके ले नृपति मोल
दे माल-खज़ाना, राज-पाट,

अमरों ने अमृत दिखलाया
दिखलाया अपना अमर लोक,
ठुकराया मैंने दोनों को
रखकर अपना उन्नत ललाट,

बिक, मगर, गया मैं मोल बिना,
जब आया मानव सरस-हृदय !
मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

बस एक बार पूछा जाता
यदि अमृत से पड़ता पाला,
यदि पात्र हलाहल का बनता,
बस एक बार जाता ढाला,

चिर जीवन औ, चिर मृत्यु जहाँ
लघु जीवन की चिर प्यास कहाँ !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

फिर-फिर जो होठों तक जाता
वह तो बस मदिरा का प्याला,
मेरा घर है अरमानों से
परिपूर्ण जगत का मदिरालय !
मिट्टी का तन, मस्ती का मन
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

मैं सखी सुराही का साथी,
सहचर मधुबाला का ललाम,
अपने मानस की मस्ती से
उफनाया करता आठ याम,
कल क्रूर काल के गालों में
जाना होगा—इस कारण ही
कुछ और बढ़ा दी हैं मैंने
अपने जीवन की धूमधाम;
इन मेरी उलटी चालों पर
संसार खड़ा करता विस्मय।
मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

मेरे पथ में आ-आकर के
तू पूछ रहा है बार-बार,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

'क्यों तू दुनिया के लोगों में
करता है मदिरा का प्रचार ?'
मैं वाद-विवाद करूँ तुझसे,
अवकाश कहाँ इतना मुझको,
'आनंद करो'—यह व्यंग-भरी
है किसी दग्ध-उर की पुकार ;
कुछ आग बुझाने को पीते
ये भी, कर मत इनपर संशय !
मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

मैं देख चुका जा मस्जिद में
झुक-झुक मोमिन पढ़ते नमाज़,
पर अपनी इस मधुशाला में
पीता दीवानों का समाज;
कह पुण्य कृत्य, यह पाप कर्म
कह भी दूँ, तो दूँ क्या सबूत !
कब कंचन मस्जिद पर बरसा ?
कब मदिरालय पर गिरी गाज ?
यह चिर अनादि से प्रश्न उठा
मैं आज करूँगा क्या निर्णय ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन – मेरा परिचय ।

सुनकर आया हूँ मन्दिर में
रटते हरिजन थे राम-राम,
पर अपनी इस मधुशाला में
जपते मतवाले जाम-जाम,
पंडित मदिरालय से रूठा,
मैं कैसे मन्दिर से रूठूँ,
मैं फ़र्क़ बाहरी क्यों देखूँ,
मुझको मस्ती से महज़ काम ।
भय-भ्रांति-भरे जग में दोनों
मन को बहलाने के अभिनय !
मिट्टी का तन मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय !

संसृति की नाटक-शाला में
है पड़ा तुझे बनना ज्ञानी,
है पड़ा मुझे बनना प्याला,
होना मदिरा का अभिमानी
संघर्ष यहाँ किसका किसने;
यह तो सब खेल-तमाशा है,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वह देख यवनिका गिरती है,
समझा कुछ अपनी नादानी?
छिप जाएँगे हम दोनों ही
लेकर अपने-अपने आशय!
मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय!

पल में मृत पीनेवाले के
कर से गिर भू पर आऊँगा,
था निर्मित मैं जिस मिट्टी से
उस मिट्टी में मिल जाऊँगा;
अधिकार नहीं जिन बातों पर,
उन बातों की चिंता करके
अब तक जग ने क्या पाया है,
मैं कर चर्चा क्या पाऊँगा?
तुझको अपना ही जन्म-निधन
है सृष्टि प्रथम, है अंतिम लय।
मिट्टी का तन, मस्ती का मन,
क्षण भर जीवन—मेरा परिचय!

[मधुबाला से]

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

रात आधी हो गई है ?

जागता मैं आँख फाड़े,
हाय, सुधियों के सहारे,
जब कि दुनिया स्वप्न के
जादू - भवन में खो गई है !
रात आधी हो गई है !

सुन रहा हूँ, शाँति इतनी,
है टपकती बूँद जितनी
ओस की जिनसे द्रुमों का
गात रात भिगो गई है !
रात आधी हो गई है !

दे रही कितना दिलासा,
आ झरोखे से ज़रा - सा
चाँदनी पिछले पहर की
पास में जो सो गई है !
रात आधी हो गई है !

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बीते दिन कब आने वाले ?

मेरी वाणी का मधुमय स्वर
विश्व सुनेगा कान लगाकर,
दूर गये पर मेरे उर की
धड़कन को सुन पाने वाले !
बीते दिन कब आने वाले !

विश्व करेगा मेरा आदर
हाथ बढ़ाकर, शीश नवाकर,
पर न खुलेंगे नेत्र प्रतीक्षा
में जो रहते थे मतवाले !
बीते दिन कब आने वाले !

मुझमें है देवत्व जहाँ पर
झुक जायेगा लोक वहाँ पर,
पर न मिलेंगे मेरी दुर्बलता
को अब दुलराने वाले !
बीते दिन कब आने वाले

[निशा निमंत्रण से]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अब मत मेरा निर्माण करो !

तुमने न बना मुझको पाया,
युग-युग बीते, मैं घबराया;
भूलो मेरी विह्वलता को,
निज लज्जा का तो ध्यान करो !
अब मत मेरा निर्माण करो !

इस चक्की पर खाते चक्कर,
मेरा तन-मन-जीवन जर्जर;
हे कुंभकार ! मेरी मिट्टी को
और न अब हैरान करो !
अब मत मेरा निर्माण करो !

कहने की सीमा होती है,
सहने की सीमा होती है;
कुछ मेरे भी वश में, मेरा
कुछ सोच-समझ अपमान करो।
अब मत मेरा निर्माण करो !

[एकांत संगीत से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मुझे पुकार लो

इसीलिए खड़ा रहा
कि तुम मुझे पुकार लो!

[१]

ज़मीन है न बोलती
न आसमान बोलता,
जहान देखकर मुझे
नहीं ज़बान खोलता
नहीं जगह कहीं जहाँ
न अजनबी गिना गया,
कहाँ-कहाँ न फिर चुका
दिमाग़-दिल टटोलता,
कहाँ मनुष्य है कि जो
उमीद छोड़कर जिया,
इसीलिए अड़ा रहा
कि तुम मुझे पुकार लो,
इसीलिए खड़ा रहा
कि तुम मुझे पुकार लो!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

[२]

तिमिर - समुद्र कर सकी
न पार नेत्र की तरी
विनष्ट स्वप्न से लदी
विषाद, याद से भरी,

न कूल भूमि का मिला
न कोर भोर की मिली,

न कट सकी, न घट सकी
विरह - घिरी विभावरी,

कहाँ मनुष्य है जिसे
कमी खली न प्यार की,
इसीलिए खड़ा रहा
कि तुम मुझे दुलार लो !
इसीलिए खड़ा रहा
कि तुम मुझे पुकार लो !

[३]

उजाड़ से लगा चुका
उमीद मैं बहार की,
निदाघ से उमीद की
बसंत से बयार की,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मरुस्थली मरीचिका
सुधामयी मुझे लगी,
अँगार से लगा चुका
उमीद मैं तुषार की,
कहाँ मनुष्य है जिसे
न भूल शूल-सी गड़ी,
इसीलिए खड़ा रहा
कि भूल तुम सुधार लो !
इसीलिए खड़ा रहा
कि तुम मुझे पुकार लो !
पुकार कर दुलार लो,
दुलार कर सुधार लो !

———

तुम गा दो

[१]

तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए !
मेरे वर्ण-वर्ण विशृंखल
चरण-चरण भरमाए,
गूँज-गूँज कर मिटनेवाले
मैंने गीत बनाये;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कूक हो गई हूक गगन की
कोकिल के कंठों पर,
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए!

[२]

जब-जब जग ने कर फैलाए,
मैंने कोष लुटाया,
रंक हुआ मैं निज निधि खोकर
जगती ने क्या पाया!
भेंट न जिसमें मैं कुछ खोऊँ
पर तुम सब कुछ पाओ,
तुम ले लो, मेरा दान अमर हो जाए!
तुम गा दो; मेरा गान अमर हो जाए!

[३]

सुन्दर और असुन्दर जग में
मैंने क्या न सराहा,
इतनी ममतामय दुनिया में
मै केवल अनचाहा;
देखूँ अब किसकी रुकती है
आ मुझपर अभिलाषा,
तुम रख लो; मेरा मान अमर हो जाए!
तुम गा दो; मेरा गान अमर हो जाए!

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

[४]

दुख से जीवन बीता फिर भी
शेष अभी कुछ रहता,
जीवन की अन्तिम घड़ियों में
भी तुमसे यह कहता,

सुख की एक साँस पर होता
है अमरत्व निछावर,

तुम छू दो, मेरा प्राण अमर हो जाए !
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए !

[सतरंगिनी से]

श्री हरिवंश राय "बच्चन" के ग्रन्थ

काव्य—तेरा हार, मधुशाला, ख़ैयाम की मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत; आकुल अंतर, विकल विश्व, सतरंगिनी, हलाहल (अप्रकाशित)।

—:०:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री उदय शंकर भट्ट

श्री उदयशंकर भट्ट संसार के एक तीव्र समालोचक हैं। उनकी समालोचना में तर्क की अपेक्षा भावना की प्रधानता होती है और वे अपनी भावना में मनुष्य के नैसर्गिक गुणों की प्रतिष्ठा विशेष रूप में करना चाहते हैं।

उनकी भाव-भूमि करुणा से निर्मित होती है। किन्तु वे करुणा की पृष्ठ-भूमि में साहस और आशावाद की रेखा खींचते हैं। इसी आशावाद से उन्हें देश-प्रेम और देश के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना मिलती है। उनका यह देश-प्रेम युग युग की संचित भावनाओं के सांस्कृतिक वातावरण में पोषित होता है। वे क्षणिक भावोन्माद में विश्वास नहीं रखते। उनका आत्मोत्सर्ग प्राणों के स्पन्दन में अपना विकास देखता है।

श्री भट्ट जी का प्रकृति-चित्रण भी भावना के आगे दब-सा जाता है। उनके प्रकृति सम्बन्धी समस्त चित्रों में फूलों और लताओं की शोभा नहीं रहती; उनमें उनके हृदय का उल्लास या अवसाद अनेक रूपों में निवास करता है। इस प्रकार श्री भट्ट जी अपने काव्य में मनुष्य जीवन की विषमताओं को तथा उसके उतार-चढ़ाव को बड़ी स्पष्ट दृष्टि से देखते हैं। जीवन की आलोचना तथा उसके समस्त रूपों की समीक्षा उनके काव्य में कहीं कहीं घोषणा के रूप में हो उठी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्री भट्ट जी के काव्य में विचारों का प्रवाह अत्यन्त स्वाभाविक है। इस स्वाभाविकता को सुरक्षित रखने के लिये ही कहीं कहीं उन्हें मुक्त वृत्त का आश्रय लेना पड़ा है और अपने काव्य-संगीत के मोह को छोड़ देना पड़ा है। इतने पर भी उन्होंने अपनी पंक्तियों में नाद को स्थान दिया ही है।

श्री उदयशंकर भट्ट में आक्रोश है और उस आक्रोश की वेगवती धारा को उन्होंने उपयुक्त शब्दों के माध्यम से प्रवाहित किया है।

[अपनी कविताओं का प्रस्तुत संकलन उन्होंने स्वयं ही किया है अतः इन कविताओं के अन्त में आधार-भूत ग्रन्थों का नाम नहीं दिया जा सका।]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मैं पथिक अवरुद्ध पथ—

मैं पथिक, अवरुद्ध पथ, कैसे, कहाँ, किस ओर जाऊँ ?

मधु पिपासा - भार लेकर
विश्व में आया अकेला
भावना में विश्व-वैभव—
ने मुझे आगे ढकेला
स्वप्न की उन्मुक्त तरुणी
पर स्वजीवन भार ढोया
जागरण में स्वप्न खोये
स्वप्न में संसार खोया
सुनो, युग युग की शिथिल
सब शृंखलायें तोड़ डालीं
श्वास पर अंकित व्यथाएँ
प्यार के नीचे छिपा लीं
तुम न जानोगे कि कितने
गरल के घट पी चुका हूँ
तुम न समझोगे कि कितने
दुःख पीकर जी चुका हूँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आज रागों में न जाने
महा भैरव बोलता क्यों ?
आज आँखों में न जाने
तिमिर कोई घोलता क्यों ?
किन्तु मैंने यही देखा
एक मैं, आशा अनेकों
एक छोटा दिल न जाने
प्यास क्यों उसमें अनेकों
एक यौवन की लहर
आघात उस पर हैं अनेकों
एक जीवन पर मरण के
दूत मुँह बाए अनेकों
स्कन्ध निर्बल, सैकड़ों दुख-भार यह कैसे उठाऊँ ?
मैं पथिक, अवरुद्ध पथ, कैसे, कहाँ, किस ओर जाऊँ ?
सामने यह लपलपाती
ज्वाल प्रलयंकर जली है
और पीछे बाघिनी - सी
मृत्यु भी आती चली है
इधर नभ को चूमने वाला
भयावह गिरि खड़ा है
उधर यह उत्तुंग लहरों
पर उछलता नद अड़ा है

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शून्य पात्र, विहीन-धनुशर
नाव टूटी, पैर निर्बल
साँझ आती है घिरी, बढ़ती
अमा की रात पल पल
है नहीं विश्वास, साहस
पास, स्मृतियाँ वह पुरानी
सौंप आया प्रिय जनों को
लहर - सी उठती जवानी
नभ गिरा जाता धरा पर
बोझ ले उन्माद का सब
काल का यह ग्रास - सी
खाने चली बिजली धरा अब
दिशा भूलीं, पन्थ भूला
ज्ञान जाने किधर खोया
हाय, छोटे से हृदय पर
क्यों यहाँ अनुराग ढोया ?
गिना करतीं तारिकाएँ
नित्य उठ अपनी व्यथाएँ
पुष्प के स्मय से वसन्ती
प्यार की गीली कथाएँ
जो जवानी गुदगुदी
उल्लास में भर नित्य पीती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जो खिला मधुमास सा
प्रिय-हास पीकर नित्य जीती
जो कटीली भौंह का
विक्षेप - शर पी जी रही थी
अमृत की शत निर्झरी की
लहर से सुख-सी रही थी
जो नशीली आँख सी
जग में विजयिनी हो रही थी
जो कली औ, कुसुम के
अवकाश सी नव हो रही थी
आज वे उल्लास रवि सम
तिमिर पारावार डूबे
जागरण भी आज मुझसे
स्वप्न के सम द्वार डूबे
आज जीवन का निपीड़ित
मरण धन कंकाल हूँ मैं
आज मणि से हीन, गत-मद
सँपेरे का व्याल हूँ मैं

बढ़ रही है आग चारों ओर अब किसको बुलाऊँ ?
मैं पथिक, अवरुद्ध पथ, कैसे, कहाँ किस ओर जाऊँ ?

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

युग युग का मेरा रुद्ध मौन

मज़दूर

युग युग का मेरा रुद्ध मौन मेघों के गर्जन-सा महान।
मुझ पीड़ित के सब प्राण चूस अपरूप हो उठा मूर्तिमान
चींटी सा निर्बल मम समाज रेंगती भूख-व्याकुल कतार
मेरी निशि डाँसों का विलास मेरा दिन मिल का अंधकार
मेरी बरसातें आँसू रे, मेरा बसन्त पीला शरीर
गरमी झरनों-सा स्वेद-स्रोत मेरे साथी दुख, दर्द, पीर
दिन उनको मुझको रात मिली, श्रम मुझे उन्हें आराम मिला
बलि दे देने को प्राण मिले हण्टर को सूखा चाम मिला
कुछ रूखे-सूखे टुकड़ों पर बच्चों का गला हलाक़ किया
बीबी की आशा कुचल, मसल जीवन यों ही बेबाक किया
क्या किया सुनहला सा जीवन सूखे टुकड़ों पर दे डाला
कुछ पैसों पर आशाएँ दीं मैशीनों की पी पी ज्वाला
वे आज स्वर्ग के स्वाद चाख, वैभव गिरि चढ़ छूते तारे
मैं फाँक रहा हूँ इधर धूल औ' चाट रहा आँसू खारे
अब उलट-पुलट दूँगा समाज अपने अपार बलिदानों से
अब और न मागूंगा भिक्षा गिड़गिड़ा कभी धनवानों से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मैं शैल-शिखर से खींच विभव पैरों से रगड़ मसल दूँगा
मैं यम दाढ़ों से मरण खींच जीवन में उन्हें बदल दूँगा
हम मानव हैं, सम हैं, शुभ हैं, चाँदी ही है सर्वस्व नहीं
समता से प्यार मनुज-सेवा सत्पथ पर चलना ह्रस्व नहीं
हम हैं विराम के महारूप द्युति द्युमणि परमसुख सन्निधान
युग युग का मेरा रुद्ध मौन मेघों के गर्जन - सा महान !

मेघ-गीत

आ गये घन मोतियों का हार ले।
नील नभ के हृदय में सब प्यास सावन की लिये वे
जलन अपनी को बुझाने अश्रु से तर दिल किये वे
किसी क्रन्दन के स्वरों से मूर्छनाएँ राग की भर
आग सी भर कर हृदय में स्वकर मुक्ता दल लिये वे
आह भर भर गिर रहे हैं किसी प्रिय का प्यार ले।
आ गये घन आँसुओं का हार ले।
सदा आँसू बन बहा दिल प्रेम पन्था में चले जो
प्यार उनका जल उठा सब, किसी रवि-मणि से मिले जो
सदा अपनापन भुला चिनगारियों से उड़ रहे वे
सदा सिरहाने खड़े पतझड़ हँसे उस पथ चल जो
और जीवन में पराजित, गर्जना संसार ले।
आ गये घन आँसुओं का हार ले।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रात अपनी आग की चिनगारियाँ लाई बुझाने
और पहलू में उफनती साँस की मृदु तह बिठाने
यह उसी की साध पानी हो गगन के अंक फैली
रे, उसी की साध में कुछ शेष जीवन-क्षण सुलाने
क्षणिक जीवन में अचानक द्वन्द्व - पारावार ले।
आ गये घन मोतियों का हार ले।

———

लुई सुई और शेंकाई

[मुक्तवृत्त]

धूम्रहीन धवल अमृत-सिक्त दीप-शिखा;
फुल्ल मालती, अमंद मंद मंद रस-सिक्त मुक्ता-वल्लरी सी थी
एक नारी; यौवन की पूर्णिमा, धम्मिल धन,
सुरति - प्रपंच शुभ्र,
अभ्रहीन शारदीया—
लुई सुई शक्तिमयी कामिनी जापान-मणि
भामिनी कुतूहल की, मुक्ति जाति-बन्धन की,
देश की, समाज संस्कार-भार सब ही की।
किया गठबन्धन औ, स्नेह प्राण-भेद चीर
चीन के नवीन प्रिय शेंकाई तरुण,
हृष्ट-पुष्ट, वज्रयष्टि मंजु कांति पुंज से ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यौवन के रस-से अनंग-रति दम्पती-से
हृदय अभंग एक प्राण, एक कल्पना-से,
एक श्वास, एक रस, एक मन, एक रूप
रहते थे;
सुरभि समीर से,
लता से तरु,
नदी जैसे तट से ऽम्बुधर चल दामिनी से;
प्राण जैसे आशा से,
हृदययुत साहस से।
बीतते थे दिन—
सुख-राशि से विभोर और
आशा से,
उमंग से,
उछाह से अथाह तल।
आते जान पाए नहीं,
जाते जान पाए नहीं,
युग से प्रलम्ब;
किन्तु सुखहित,
मोद हित,
क्षण से अधिक अथ नश्वर अदुःख धन।
बीतती थी रातें—
कहाँ बीततीं सुहाग भरी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रेम का सरोज लिए,
विकसित,
सुरभित,
मोदहित,
मदहित,
रतिहित,
अतिरति, अतिगति, वक्रमति मंजु-मंजु।
बहती निखिल ऋतु एक घन प्रेम पूर,
आशा ले अनन्त, परिभाषा ले अनन्त,
किन्तु सान्त था न कुछ भी।
कभी भी प्रिय बाहु-लता
वेष्टित
अखंड अमरत्व-जैसा प्रतिपल।
वर्ष-वर्ष पल जैसे
बीतते थे दोनों के ही,
दोनों थे अभिन्न मत
दोनों अन्योन्य गत
दोनों प्रेम-लथपथ
वारुणी में मद जैसे
लीन-प्रिय-प्रियतमा, एक-दूसरे में अति।
दो थीं, दो किरण
दो ही आँखें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यौवन के रस-से अनंग-रति दम्पती-से
हृदय अभंग एक प्राण, एक कल्पना-से,
एक श्वास, एक रस, एक मन, एक रूप
रहते थे;
सुरभि समीर से,
लता से तरु,
नदी जैसे तट से ऽम्बुधर चल दामिनी से;
प्राण जैसे आशा से,
हृदययुत साहस से।
बीतते थे दिन—
सुख-राशि से विभोर और
आशा से,
उमंग से,
उछाह से अथाह तल।
आते जान पाए नहीं,
जाते जान पाए नहीं,
युग से प्रलम्ब;
किन्तु सुखहित,
मोद हित,
क्षण से अधिक अथ नश्वर अदुःख धन।
बीतती थी रातें—
कहाँ बीततीं सुहाग भरी

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रेम का सरोज लिए,
विकसित,
सुरभित,
मोदहित,
मदहित,
रतिहित,
अतिरति, अतिगति, वक्रमति मंजु-मंजु।
बहती निखिल ऋतु एक घन प्रेम पूर,
आशा ले अनन्त, परिभाषा ले अनन्त,
किन्तु सान्त था न कुछ भी।
कभी भी प्रिय बाहु-लता
वेष्टित
अखंड अमरत्व-जैसा प्रतिपल।
वर्ष-वर्ष पल जैसे
बीतते थे दोनों के ही,
दोनों थे अभिन्न मत
दोनों अन्योन्य गत
दोनों प्रेम-लथपथ
वारुणी में मद जैसे
लीन-प्रिय-प्रियतमा, एक-दूसरे में अति।
दो थीं, दो किरण
दो ही आँखें

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

औ हृदय दो ही
स्नेह समुद्गार
ओष्ठद्वय के प्रमत्त स्मय
और दोनों नेत्रों की प्रसन्न सुख-निर्झरी-सी ।
शेंकाई आता बरसात-सी हँसी को भरे
नित्य घर;
और था बिखेरता असंद अट्टहास नित्य
शुभ्र मन-सैकत 'उ'
चिर-चिर-चिर-काल ।
कहीं उच्च पद पर कार्य करता था वह
टोकियो में ।
एक दिन
एक सांझ
कण्ठ तोड़
स्वर जोड़
घर-घर फटा स्वर
बल और दर्प लिए टूटे हुए वृत्त-जैसा अंधड़ का,
अम्बर से वज्रपात
भूधर से विस्फोट
हृदय में भर कर ।
'रेकिट' था हाथ में ही
गुमसुम, चुप चुप

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निष्प्रभ, निश्चल;
रुग्ण युग-युग का।
"क्या हुआ, हुआ क्या, कहो
प्रियतम
मेरे प्रिय ?"
लुई सुई कहने लगी खिन्न, उद्भ्रान्त, क्लान्त,
भर दी गई हो
मानों वह्नि नस-नस में
अवश-विवश मति उत्तर के लिए व्यग्र।
"आज ही है जाना,
आज रात देश छोड़ देना।
तुम्हें तज, शिशु तज, घर-बार ताना-बाना।
प्रेम में है देश खड़ा—
(—अचल, अटल फ़्यूजीयामा—)
प्रेम से है देश बड़ा
आज ही है जाना, प्रिये।"
बज्राहत, तरुभ्रष्ट-लतिका-सी, दामिनी-सी,
मेघ की वितर्कना-सी, अज्ञ-सी निरुद्ध नारी,
चकित हुई-सी रुद्ध-कण्ठ बद्ध बोली यों—
"क्या कहा ?
कहो न फिर,
कौन देश,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जाना कहाँ ?
मैं भी तो चलूँगी, सब ले चलूँगी—
हृदय-तरंगें दोनों
जहाँ तुम जाओ, नाथ !
बोलो, कहाँ जाना होगा ?"
चीर सब भ्रम-काई बोल उठा शेंकाई—
"देश से है युद्ध छिड़ा,
देश से है शत्रु भिड़ा।"
कौन शत्रु ?
जापान ?
किससे ?
महान चीन देश से ?
कब सुना ?"
"आज ही तो अभी-अभी,
इसीलिए जाना होगा,
तुम्हें प्रिय आज तज।
जय देश, जय देश !"
तो क्या यह प्रेम हुआ मेरा एक कल्पना ही ?
शून्य की विभावना ही ?
नश्वर विकामना-सा ?
छेद्य
सुख-भेद हाय ?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किन्तु प्रेम स्वर्ग - भूति
खंडनीय नहीं, दयनीय नहीं है, प्रिय !
उस दिन—अन्धकार
अन्धकार तीव्र धार
नदी थी बहाती जब
मुझे ही निगलतों-सी
और तुम आ गये थे मेरे नव भाग्य बन
नव जन्म, नव आशा, नव श्वास, नव भाषा, सब
कुछ नव नव
बन कर अभिनव ।
तुमने बचाया लेके दृढ़ बाहुपाश मुझे
मृत्यु से ही और अपमृत्यु से सतत छीन ।
आज वह भग्न होगा स्वप्न क्या अकाल में ही ?
प्रलय प्रकम्प बन और तोड़ कुसुमित कलिका को
वज्र से ही पीस देगा !
नहीं, तुम मत जाओ, मेरे प्राण छिप जाओ
उर में समाओ, रोम-रोम की पुकार बन ।"
"किन्तु मेरे देश की पुकार बज्र-घटिका सी
मुझको बुलाती—नस-नस में
ध्वनित हो ।
प्राण बोलते हैं, श्वास प्रश्वास बोलते हैं,
चीखती है धमनी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कठिन रुक पाना अब ।
देह से है उच्च देश
नेह से है उच्च देश
प्राण से है उच्च देश ।"
जय देश, चीन देश ।"
'किन्तु यह प्रेम भी तो है महान, सत्य, प्रिय !
यह तो है नर स्वार्थ
लड़ते हों जैसे पशु छोटी छोटी वस्तु पर,
क्या न हम सब एक, एक ही समष्टि के हैं ?
मानव की परिभाषा भिन्न-भिन्न मूल है ।
एक को उजाड़ औ बसाता जो है अपने को
क्या न एक चाहता है चाहता जो दूसरा है ?
क्या है यही न्याय, हाय, हेय यह तुच्छ जग ?';
किया बाहु-पाश बद्ध, कण्ठ रुद्ध, प्रेम रुद्ध
चुम्बित कपोल, शेंकाई रुक उठा बोल—
"ठहरो, मुझे सोचने दो
सोचना न सीखा मैंने, सोचने का काम जिन्हें
वे ही तो बुलाते, सुनो—
मानव महान होगा, देश भी महान ही है,
उन्नत है जाति यदि उन्नत है देश भी जो,
सभी कुछ उन्नत, समुन्नत है विश्व यह
देश की पुकार सुन, छोड़ दूँ निरीह उसे

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैं भी तो उसी का अंग, मैं भी तो उसी का श्वास
देश की पुकार प्रिय—सम्भव नहीं है अब—
व्यक्ति से समाज बड़ा, उससे भी देश बड़ा,
देश ही है धर्म मेरा, देश ही है कर्म मेरा
देश है बुलाता सुनो—हाय, स्वप्न-भंग हुए।"
गाढ़ कर आलिंगन चूम चूम दोनों सुत
विदा हुआ शंकाई चीन के प्रयाण हित—
रोता हुआ, हँसता-सा
पीड़ा को दबाये और गाता हुआ देश-गीत,
—गीत, जाति गीत, दबा दबा हाहाकार,
अनुपल चीत्कार,
बड़वा-सा मथ मन
सभी स्वप्न, सभी सुख, सभी शान्ति खो के मानो
एक नेत्र अश्रु भरे
और दूसरे में हर्ष
हृदय में द्वन्द्व लिए
प्रेम लिए, व्यथा लिए
विष लिए, मृत्यु लिए
और अमरत्व लिए
सुख लिए, शक्ति लिए
अरि का विनाश लिए।
जाता चीर अन्धकार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

× × × ×

लुई सुई व्यक्त हत प्रेम की तरंग भरी
करने लगी थी ग्लानि
रोती-सी बिसूरती।
इतने में सुन पड़ा
गीत निज देश का ही, जाते थे महान वीर
चीन की विजय को—
'क्विक मार्च करते-से, सिंह-से प्रमत्त जन
लुई सुई सुप्त सिंहनी-सी उठ दौड़ी तब
और जाके पहुँची वह गुप्त दूतावास में—
गई वहाँ
पकड़ाने हेतु
शत्रु मित्र शेंकई को ही।
किन्तु वह तीर-सा गया था देश त्याग वीर
हाथ में न आया शत्रु,
रह गई साँस तोड़।

× × × ×

एक दिन, एक साँझ उड़ी शत्रु-देश पर
और बरसाने लगी बम्ब तथा गोले वहाँ
अग्नि सम धाँय-धाँय पल-पल शत्रु पर।
उस धुआँधार में, अनन्त अँधकार में था
नीचे वहीं एक बचा नष्ट होते-होते यन्त्र

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वायुयान नाशकारी—
अग्नि-सी उगल रहा पल-पल यान पर
गिर पड़ा वायुयान छिन्न-भिन्न
टूट फूट,
तारक-सा वेग लिए
कुछ दूर वहीं पास।
चीनी वीर देख दौड़े ले प्रकाश मत्त मन
हर्ष से प्रमत्त मत्त महातन वारुणी-से
और देखा—रमणी थी एक वह
काँप उठे प्राण एक सैनिक के देख यह
वज्राहत, हत आशा, चकित भ्रमित मन
चीत्कार कर गिर गया, उस शव पर
बोलकर शेंकाई—"हाय, प्रिये लुई सुई,
हम मिले अन्त में अनन्त धाम-पथ पर !"
मूक, निवाक् अन्य देखते थे जन सब,
खड़े—खड़े,
ज्ञान हीन,
संज्ञाहीन—प्राणहीन।

—:०:—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जीवन

यह कैसा क्या मैंने पाया ?
क्या जाने, किस अनजाने में यह कटु कटुतर, यह मृदु मृदुतर
चल लहरों - सा चंचल सुखकर
सित ओस-कणों सा जब तक ढल
स्मृतियों की ग्रन्थि बाँध अंचल
मैं निज को वहलाने आया
यह कैसा क्या मैंने पाया ?
क्यों अनचाहा इसमें मिलता, औ चाहा मिलता नहीं खूब
मैं इसी दशा में ऊब ऊब
आशा - सी निज आँखें पसार
कुछ ढूँढ रहा हूँ बार बार
कुछ जाना कुछ न जान पाया
यह कैसा क्या मैंने पाया ?
रजनी में सरिता के समान, मैं देख पा रहा एक छोर
आगे की कोई नहीं कोर
क्या जानूँ केवल वर्तमान
दिन-सा उज्ज्वल निशि-सा अजान
मेरी सीमा ही बन आया
यह कैसा क्या मैंने पाया ?

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सावन-गीत

घिर आओ उमड़ घुमड़ बादल
बरसो पल पल पीयूष धवल
छल छल छलके आनन्द अमल
ओ प्यासों के आशा सम्बल ?
जल रहे विश्व के प्राण इधर
मूर्छित जीवन के अन्तर तर
कलियों के सौरभ-सिक्त अधर
चेतना लुप्त प्रान्तर प्रान्तर
बरसो बरसो सरसो ओ घन,
हर्षित कर मानव का चेतन
प्लावित-सा चेतन बन उपवन
शिंजित जीवन का हो जीवन
स्फुल्लिंग अग्नि के बहे सकल
सब बहे गरल का ग्रीष्माचल
घिर आओ उमड़ घुमड़ बादल
तज क्षार पाप उन्मुक्त अमल
सुमनों के अधरों पर अविरल
अंकित कर दो युग युग का मद

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

युग युग का यौवन औ चंचल
लहरो, लहरा दो हृदय हृदय
खोलो नव जीवन वातायन
झुलसे खारे आँसू के कन
मेरे युग युग पीड़ा कम्पन
हों शान्ति शक्ति में परिवर्तन
छन छनन छनन छन नाच सजल
उल्लसित करो मेरा भूतल।

रात की गोद में

सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
सब मूक नगर, पथ, गली, द्वार
नर मूक सो रहे पग पसार
आँखों में भर कर अघ जघन्य
आँखों में भरकर साध पुण्य
उर में जीवन की आशाएँ,
आशाओं की मृदु भाषाएँ
कुछ शाप और अपलाप लिए
वरदान और अपमान लिए

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अवसान कहीं, अरमान कहीं
कोने में स्मृतियाँ कहीं मूक
चंचल आकृतियाँ कहीं मूक
कुत्ते भी चुप, कौए भी चुप, तस्कर रखते पग दवा चाप।
सुनसान रात गुप चुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
दिल जले समेटे हुए राख
मन चले बटोरे हुए खाक
कुछ पत्थर - से दिल निर्विकार,
कुछ पानी - से पिघले अपार
जीवन में जिनको भार मिला,
केवल स्वप्नों में प्यार मिला
वे मिलन लिए, वे जलन लिए,
वे डाह लिए वे चाह लिए
अवसाद कहीं, उन्माद कहीं,
जीवन में जो कुछ कर न सके
अपने घावों को भर न सके
वे दिन से पा उपहास व्यङ्ग निशि में करते गुपचुप विलाप।
सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
मानिनी कहीं हैं रहीं जाग,
झूठे आँसू झूठा विराग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

युग युग का यौवन औ चंचल
लहरो, लहरा दो हृदय हृदय
खोलो नव जीवन वातायन
झुलसे खारे आँसू के कन
मेरे युग युग पीड़ा कम्पन
हों शान्ति शक्ति में परिवर्तन
छन छनन छनन छन नाच सजल
उल्लसित करो मेरा भूतल।

———

रात की गोद में

सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
सब मूक नगर, पथ, गली, द्वार
नर मूक सो रहे पग पसार
आँखों में भर कर अघ जघन्य
आँखों में भरकर साध पुण्य
उर में जीवन की आशाएँ,
आशाओं की मृदु भाषाएँ
कुछ शाप और अपलाप लिए
वरदान और अपमान लिए

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अवसान कहीं, अरमान कहीं
कोने में स्मृतियाँ कहीं मूक
चंचल आकृतियाँ कहीं मूक
कुत्ते भी चुप, कौए भी चुप, तस्कर रखते पग दबा चाप।
सुनसान रात गुप चुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
दिल जले समेटे हुए राख
मन चले बटोरे हुए खाक
कुछ पत्थर - से दिल निर्विकार,
कुछ पानी - से पिघले अपार
जीवन में जिनको भार मिला,
केवल स्वप्नों में प्यार मिला
वे मिलन लिए, वे जलन लिए,
वे डाह लिए वे चाह लिए
अवसाद कहीं, उन्माद कहीं,
जीवन में जो कुछ कर न सके
अपने घावों को भर न सके
वे दिन से पा उपहास व्यङ्ग निशि में करते गुपचुप विलाप।
सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
मानिनी कहीं हैं रहीं जाग,
झूठे आँसू झूठा विराग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पर उमड़ रहा अनुराग हृदय—
आँसू से करती हैं अभिनय
दीपक से चितवन वक्र मिला,
प्रिय का विह्वल मन रहीं हिला

सब व्यर्थ विनय
बेचैन हृदय
बेचैन प्राण
बेचैन मान
उन्मन, उन्मन
विह्वल तन मन—
दम्पति के हैं तूफान मूक
दम्पति के हैं अरमान मूक

दीपक जल जल
धोता उर-मल
दोनों अपनापन भूल गये
दोनों निज चेतन भूल गये

दीपक की लौ-सी मूक मधुर, दोनों की धड़कन रही काँप।
सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
शैशव की कहीं कहानी चुप,
है आँखों की नादानी चुप

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अल्हड़ मस्ती का पानी चुप
 औ उठती कहीं जवानी चुप
उठते उठते सब रह जाता,
 चुपके चुपके कुछ कह जाता
उद्गार लिए अभिसार और
 यौवन की मधुर मरोर और
अवशेष मधुर सब चले सिहर
 सब अपना 'नव पथ' भूल गये
 प्राणों में लेकर शूल नये
वे भी करवट ले मचा रहे, आँखों में भर कर नये ताप।
सुनसान रात गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद मुख चूम उमंगें रहा माप।
कुछ स्वामी की झिड़कन लेकर
 बेचैनी ऊबा मन लेकर
तन भूख, भर्त्सना-धन लेकर
 जर्जर तन मन, जर्जर जीवन
 विगलित सम्बल
 अनुदिन पल पल
 टूटी आहें
 टूटी चाहें
प्राणों में हाहाकार लिए
 आँसू का जल-उपहार लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सो रहे सहेजे हुए हृदय, अपने दुनिया के सभी पाप।
सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र. नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद, मुख चूम उमंगें रहा माप।
कुछ सोते सुख की लिए साँस,
कुछ सोते कल की लिए आस
क्या जाने कल भी जिन्हें सत्य
लेने दे जीवन का न पथ्य
सब अलग अलग
मानव का जग
चुप्पी भी चुप
अन्धेरा गुप
केवल मेरा कवि रहा जाग
भर हृदय आग
वाणी विहाग
इस महानींद का ताल प्रखर
हर रात गूँजता रह रह कर
पीता है निशि के खप्पर भर जग की साँसों को नाप नाप।
सुनसान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप,
सागर लहरों को सुला गोद मुख चूम उमंगें रहा माप।

— ——

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री उदयशंकर भट्ट के ग्रन्थ

काव्य—तक्षशिला, राका, मानसी, विसर्जन, अमृत और विष, युगदीप ।

नाटक—चन्द्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, दाहर, अम्बा, मत्स्यगंधा, सगरविजय, विश्वामित्र, कमला, राधा, अभिनव एकांकी नाटक, स्त्री का हृदय, तीन नाटक ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

राष्ट्रीय धारा

श्री माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा'

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री माखनलाल चतुर्वेदी

एक भारतीय आत्मा

श्री चतुर्वेदी जी हमारे राष्ट्रीय कवि हैं। उन्होंने 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से जो रचनाएँ की हैं वे मानों नवीन रक्त से लिखी गई हैं। उनकी राष्ट्रीय कविताओं में उनके भाव ऐसे जाग गये हैं। जैसे

प्रभात में मन्द वायु से फूल जाग उठते हैं। प्रकृति के चित्रण में भी जब उनकी राष्ट्रीय भावना जागती है तो वे उस ब्रह्मवादी जैसे ज्ञात होते हैं जो अणु-अणु में अपने आराध्य को देखता है वे इस क्षेत्र में बहुत सफल हैं। प्रकृति के कुसुम भी उस पथ पर गिरना चाहते हैं जहाँ वीर बलि-वेदी पर अपना सिर चढ़ाने जाते हैं। उनकी कोकिला भी देश-प्रेम के राग से कूजती है। प्रकृति और देश-प्रेम का यह परिश्रम चतुर्वेदी जी की विशेषता है।

श्री चतुर्वेदीजी द्विवेदीकाल के कवि हैं। उन्होंने रहस्यवाद की छाप अपनी कविता में प्रारम्भ से ही रक्खी है, किन्तु वह रहस्यवाद देश-प्रेम के क्रोड़ ही में है। संसार की साधारण वस्तुओं में भी वे संकेत देखते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

और अपनी विचित्र शब्दावली में एक रूपक बाँध देते हैं। उनकी शब्दावली विचित्र इसलिए है कि उसके चित्र संकलन में कोई विशेष रुचि नहीं है।

दमयन्ती के एक चीर की माँग हुई बाज़ी पर,
देश-निकाला स्वर्ग बनेगा तेरी नाराज़ी पर।

बाज़ी और नाराज़ी दमयन्ती के चीर और स्वर्ग की कलाभिव्यक्ति के प्रतिकूल हैं, वे चाहे भाव-प्रकाशन के कितने ही अनुकूल क्यों न हों। भावना को प्रकाशित करने में समर्थ जो शब्द कवि के मस्तिष्क में आते हैं उन्हें ही स्वाभाविक रूप से वह सामने रख देता है। फ़ारसी और अरबी के शब्दों से कवि का कोई वैमनस्य नहीं और वह शुद्ध तत्सम संस्कृत शब्दों की पंक्ति में उन्हें सादर बिठला देता है। भाव-प्रकाशन कवि की शैली का चरम उद्देश्य है।

श्री चतुर्वेदीजी की कविताओं में कहीं-कहीं अस्पष्टता भी है। इसका कारण यह है कि उनके देश-प्रेम के साथ उनके आराध्य की अनुभूति भी चलती है और यह अनुभूति अस्पष्ट होने के कारण उनकी कविता में भी अस्पष्टता ला देती है।

श्री चतुर्वेदी जी ने एक नाटक लिखा है—श्री कृष्णार्जुन युद्ध। उसमें चाहे पात्रों का मनोवैज्ञानिक संघर्ष न हो, लेकिन काव्य और कला का स्पष्टीकरण प्रत्येक स्थान पर है। ऐसे साहित्यिक नाटक हिन्दी में कम हैं।

राष्ट्रीय कवि के नाते श्री माखनलाल चतुर्वेदी सर्वमान्य और प्रतिष्ठित हैं। उन्हें संवत् २००० में 'हिमकिरीटिनी, काव्य-संग्रह पर देव-पुरस्कार मिल चुका है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कुंज कुटीरे यमुना तीरे

पगली तेरा ठाट! किया है रत्नाम्बर परिधान,
अपने क़ाबू नहीं और यह सत्याचरण विधान!
उन्मादक मीठे सपने ये और अधिक मत ठहरें!
साक्षी न हों न्याय-मन्दिर में कालिन्दी की लहरें!

डोर खींच, मत शोर मचा,
मत बहक, लगा मत ज़ोर,
माँझी, थाह देख कर आ तू,
मानस - तट की ओर।

कौन गा उठा? अरे करें मत ये पुतलियाँ अधीर;
इसी क़ैद के बन्दी हैं वे श्यामल-गौर शरीर।
पलकों की चिक पर हृत्तल के छूट रहे फव्वारे,
निश्वासें पंखे झलती हैं, उनसे मत गुंजारे

यहीं व्याधि मेरी समाधि है,
यही राग है त्याग,
क्रूर तान के तीखे शर मत
छेदें मेरे भाग।

❀ ❀ ❀ ❀

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

काले अन्तस्तल से फूटी कालिन्दी की धार,
पुतली की नौका पर लायी मैं दिलदार उतार ;
बादबान तानी पलकों ने—हा यह क्या चीत्कार ?
कैसे ढूढ़ूँ ? हृदय-सिन्धु में, छूट पड़ी पतवार !

भूली जाती हूँ अपने को,
प्यारे मत कर शोर
भाग नहीं, गह लेने दे
तेरे अम्बर का छोर।

❀ ❀ ❀ ❀

अरे बिकी बेदाम कहाँ मैं ? हुई बड़ी तक़सीर,
धोती हूँ जो बना चुकी हूँ पुतली में तसवीर ;
डरती हूँ दिखलायी पड़ती तेरी उसमें वंशी ,
कुंज-कुटीरे-यमुना-तीरे तू दिखता यदुवंशी !

अपराधी हूँ मंजुल मूरत, ताकी
हा ! क्यों ताकी ?
वनमाली ! मुझसे न मिटेगी;
ऐसी बाँकी झाँकी।

अरी, खोद कर मत देखे, ये अभी पनप पाये हैं।
बड़े दिनों में, खारे जल से कुछ अंकुर आये हैं ;
पत्ती को मस्ती लाने दे, कलियाँ कढ़ जाने दे ,
अन्तरतर को अन्त चीर कर अपनी पर आने दे।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ही-तल वेध, समस्त खेद तज,
मैं दौड़ी आऊँगी;
नील-सिन्धु-जल-धौत चरण पर,
चढ़ कर खो जाऊँगी।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुर बाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ;
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ;
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर
हे हरि ! डाला जाऊँ;
चाह नहीं, देवों के शिर पर
चढ़ूँ. भाग्य पर इठलाऊँ;
मुझे तोड़ लेना वनमाली !
उस पथ में देना तुम फेंक,
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

खीझमयी मनुहार

किन बिगड़ी घड़ियों में झाँका ?
तुझे झाँकना पाप हुआ;
आग लगे—वरदान निगोड़ा
मुझ पर आकर शाप हुआ !
जाँच हुई, नभ से भूमंडल
तक का व्यापक माप हुआ;
अगणित बार समा कर भी
छोटा हूँ, यह सन्ताप हुआ !
अरे अशेष ! 'शेष' की गोदी
तेरा बने बिछौना-सा।
आ मेरे आराध्य ! खिलालूँ
मैं भी तुझे खिलौना-सा।

———

वेदना गीत से

कम्पन के तागे में गूँथे-से क्यों लहराते हो ?
मारुत ही क्यों, तरुवर-कुंजों में न विलम पाते हो ?
और, पंछियों की तानों से जरा न टकराते हो ?
टेकड़ियों के पार, कहो, कैसे चढ़ कर आते हो ?
आते-जाते हो या मुझमें आकर छिप जाते हो ?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

भ्रमित की मति-सी परम गँवार
आह की मिटती-सी मनुहार,
पूछती है तुमसे दिलदार—

कौन देश से चले ? कौन-सी मंज़िल पर जाते हो ?
कसक चुटकियों पर चढ़कर, क्यों मस्तक डुलवाते हो ?
कम्पन के तागे में गूँथे-से क्यों लहराते हो ?

क्या बीती है ?—आजाने दो उसको भी इस पार;
क्यों करते हो लहराने का भूतल में व्यापार ?
चट्टानों से बनी विन्ध्य की टेकड़ियों के द्वार—
वायु विनिन्दित तरलाई पर तैर रहे बेकार—

छटपटाहट को यों मत मार,
पहन सागर-लहरों का हार,
खोल दे कोटि कोटि हृद्-द्वार,

कहाँ भटकते, यहाँ ? प्राण लेते बन राग बिहाग !
शीतल अंगारों से विश्व जलाने क्यों जाते हो ?
कम्पन के तागे में गूँथे-से क्यों लहराते हो ?

किस के लिए छेड़ते हो अपनी यह तरल तरंग ?
किसे डुबोने को घोला है, यह लहरों पर रंग ?
कोई गाहक नहीं. अरे, फिर क्यों यह सत्यानाश ?
बाँस, काँस, कुश से सहते हो लहरों का उपहास ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अरे वादक ! क्यों रहा उड़ेल,
खेलता आत्म-घात का खेल,
उजड़ता व्यर्थ स्वरों का मेल:

यह सब है किस लिए बिना पंखों की मृदुल उड़ान !
दूर नहीं होते, माना; पर पास नहीं आते हो ?
कम्पन के तागे में गूँथे-से क्यों लहराते हो ?
मानूँ कैसे ? कि यह सभी सौभाग्य सखे ! मुझ पर है ?
है तो मेरे लिए पास आने में किस का डर है ?

मेरे लिए उठेंगी आशाओं में ऐसी ध्वनियाँ !
करुणा की बूँदों ! काली होंगी उनकी जीवनियाँ !

और, वे होंगी क्यों उस पार ?
यहीं होगी पलकों के द्वार;
पहन मेरी श्वासों के हार !

आह ! गा उठे, हेमांचल पर तेरी हुई पुकार—
बनने दें तेरी कराह को परसों की हुँकार—
और जवानी को चढ़ने दे बलि के मीठे द्वार,
सागर के धुलते चरणों से उठे प्रश्न इस बार—
'अन्तस्तल से अतल-वितल को क्यों न बेध जाते हो ?
अजी, वेदना-गीत गगन को क्यों न छेद जाते हो ?
उस दिन ? जिस दिन महानाश की धमकी सुन पाते हो !
कम्पन के तागे में गूँथे-से क्यों लहराते हो !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

क़ैदी और कोकिला

क्या गाती हो ? क्यूँ रह-रह जाती हो ? कोकिल ! बोलो तो ?
क्या लाती हो ? सन्देशा किसका है ? कोकिल ! बोलो तो ?
ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट-भर खाना,
मरने भी देते नहीं—तड़प रह जाना !
जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,
शासन है या तम का प्रभाव गहरा है ?
हिमकर निराश कर गया, रात भी काली;
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली ?
क्यूँ हूक पड़ी ? वेदना-बोझवाली सी कोकिल ! बोलो तो ?
क्या लुटा ? मृदुल वैभव की रखवाली सी—कोकिल ! बोलो तो ?
बन्दी सोते हैं है घर्घर श्वासों का,
दिन के दुख का रोना है निश्वासों का,
अथवा स्वर है - लोहे के दरवाज़ों का,
बूटों का, या सन्त्री की आवाज़ों का,
या गिनने वाले करते हाहाकार,
सारी रातों हैं—एक, दो, तीन, चार !
मेरे आँसू की भरी उभय जब प्याली,
बेसुरा ! मधुर क्यों गाने आयी आली ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

क्या हुई बावली ? अर्द्धरात्रि को चीख़ीं—कोकिल ! बोलो तो ?
किस दावानल की ज्वालाएँ हैं दीखीं—कोकिल ! बोलो तो ?
निज मधुराई को कारागृह पर छाने;
जी के घावों पर तरलामृत बरसाने.
या वायु-विटप-वल्लरी चीर, हठ ठाने—
दीवार चीरकर अपना स्वर अजमाने,
या लेने आयी इन आँखों का पानी.
नभ के ये दीप बुझाने की है ठानी !
खा अन्धकार करते वे जग रखवाली,
क्या उनकी आभा तुझे न भायी आली ?
तुम रवि किरणों से खेल जगत को रोज जगाने वाली—
कोकिल ! बोलो तो ?
क्यों अर्धरात्रि में विश्व जगाने आयी हो मतवाली—
कोकिल ! बोलो तो ?
दूबों के आँसू धोती, रवि-किरणों पर,
मोती बिखराते विन्ध्या के झरनों पर.
ऊँचे उठने के व्रतधारी इस वन पर,
ब्रह्मांड कँपाती उस उद्दंड पवन पर.
तेरे मीठे गीतों का पूरा लेखा,
मैंने प्रकाश में लिखा सजीला देखा,
अब सर्वनाश करती क्यों हो ? तुम जाने या बे-जाने—
कोकिल ! बोलो तो ?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

क्यों तमोपत्र पर विवश हुई लिखने मधुरीली तानें—
कोकिल ! बोलो ! तो ?

क्या ? देख न सकती ज़ंजीरों का गहना
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना !
गिट्टी पर ! अँगुलियों ने लिक्खे गान !
कोल्हू का चर्रक चूँ—जीवन की तान !
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,
खाली करती हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ।
दिन में मत करुणा जगे, रुलाने वाली !
इसलिए रात में गज़ब ढा रही आली !

इस शान्त समय में अन्धकार को बेध, रो रही क्यों हो—
कोकिल ! बोलो तो ?
चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज इस भाँति बो रही क्यों हो—
कोकिल ! बोलो तो ?

काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली,
काली लहर, कल्पना काली,
मेरी काल-कोठरी काली,
टोपी काली, कमली काली,
मेरी लौह-शृंखला काली,
पहरे की हुँकृति की व्याली,
तिस पर है गाली ! ऐ आली !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इस काले संकट-सागर पर मरने की मदमाती -
कोकिल ! बोलो तो !
अपने गति वाले गीतों को किस विधि हो तैराती —
कोकिल ! बोलो तो !
तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली,
तेरा नभ भर में संचार !
मेरा दस फुट का संसार !
तेरे गीतों उठती वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह !
देख विषमता तेरी मेरी,
बजा रही तिस पर रणभेरी !
इस हुँकृति पर, अपनी कृति से, और कहो क्या कर दूँ ?—
कोकिल ! बोलो तो ?
मोहन के व्रत पर, प्राणों का आसव किस में भर दूँ ?—
कोकिल ! बोलो तो ?
फिर कुहू—अरे क्या बन्द न होगा गाना ?
इन अन्धकार में मधुराई दफ़नाना !
नभ सीख चुका है कमज़ोरों को खाना
क्यों बना रही अपने को उसका दाना ?
तिस पर, करुणा गाहक बन्दी सोते हैं,
स्वप्नों में स्मृतियाँ श्वासों से धोते हैं !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सींकचे-रूपिणी! लोहे की पाशों में
क्या भर दोगी, बोलो निद्रित लाशों में ?
क्या ? घुस जायेगा रुदन तुम्हारा निश्वासों के द्वारा—
कोकिल ! बोलो तो ?
और प्रात में हो जायेगा उलट-पुलट जग सारा—
कोकिल ! बोलो तो ?

———

उन्मूलित वृक्ष

भला किया, जो इस उपवन के
सारे पुष्प तोड़ डाले;
भला किया, मीठे फल वाले
ये तरुवर मरोड़ डाले;
भला किया, सींचो पनपाओ
लगा चुके हो जो कलमें;
भला किया, दुनिया पलटा दी
प्रबल उमंगों के बल में !
लो हम तो चल दिये,
नये पौधो प्यारो ! आराम करो।
दो दिन की दुनियाँ में आये,
हिलो-मिलो कुछ काम करो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पथरीले ऊँचे टीले हैं,
रोज़ नहीं सींचे जाते;
वे नागर न यहाँ आते हैं,
जो थे बाग़ीचे आते।
झुकी टहनियाँ तोड़-तोड़ कर,
बनचर भी खा जाते हैं,
शाखा - मृग कन्धों पर चढ़ कर
भीषण शोर मचाते हैं।

*　　*　　*

दीनबन्धु की कृपा, बन्धु!
जीयित हैं, हाँ हरियाले हैं,
भूले-भटके कभी गुज़रना,
हम वे ही फल वाले हैं!

[त्रिधारा से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जवानी

आज अन्तर में लिये पागल जवानी !
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी ?

चल रहीं घड़ियाँ,
चलें नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ,
चलें हिम-खंड प्यारे,
चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाये ?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाये ?

पहन ले नर - मुंड - माला,
उठ स्वमुंड सुभेस कर ले;
भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

द्वार बलि का खोल
चल, भूडोल कर दें,
एक हिम गिरि एक सिर
का मोल कर दें,
मसल कर, अपने
इरादों सी, उठा कर,
दो हथेली हैं कि
पृथ्वी गोल कर दें ?

रक्त है ? या है नसों में क्षुद्र पानी !
जाँच कर, तू सीस दे दे कर जवानी ?

वह कली के गर्भ से फल-
रूप में, अरमान आया !
देख लो मीठा इरादा, किस
तरह, सिर तान आया !
डालियों ने भूमि पर लटका
दिये फल, देख आली !
मस्तकों की दे रही
संकेत कैसे, वृक्ष-डाली !

फल दिया ? या सिर दिया ? तरु की कहानी,
गूँथ कर युग में, बताती चल जवानी !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्वान के सिर हो—
चरण तो चाटता है!
भौंक ले—क्या सिंह
को वह डाँटता है?
रोटियाँ खायीं कि
साहस खो चुका है,
प्राणि हो पर प्राण से
वह जा चुका है।

तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी!
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी!

ये न मग है, तव
चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर
देखा-देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे
कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा
की मेख हैं ये।

प्राण-रेखा खींच ये, उठ बोल रानी!
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

टूटता - जुड़ता समय
'भूगोल' आया,
गोद में मणियाँ समेट
खगोल आया,
क्या जले बारूद ?—
हिम के प्राण पाये !
क्या मिला ? जो प्रलय
के सपने न आये !
धरा ?—यह तरबूज़
है दो फाँक कर दे,

चढ़ा दे स्वातन्त्र्य-प्रभु पर अमर पानी।
विश्व माने—तू जवानी है, जवानी !

लाल चेहरा है नहीं—
फिर लाल किसके ?
लाल ख़ून नहीं ?
अरे कंकाल किसके ?
प्रेरणा सोयी कि
आटा - दाल किसके ?
सिर न चढ़ पाया
कि छाया भाल किसके

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नेह की वाणी कि हो आकाश-वाणी,
धूल है जो जग नहीं पायी जवानी।

विश्व है असि का?—
नहीं संकल्प का है।
हर प्रलय का कोण
काया - कल्प का है,
फूल गिरते; शूल
शिर ऊँचा लिये हैं,
रसों के अभिमान
को नीरस किये हैं!

खून हो जाये न, तेरा देख, पानी,
मरण का त्यौहार, जीवन की जवानी।

घर मेरा है ?

क्या कहा, कि यह घर मेरा है ?

जिसके रवि ऊगें जेलों में,
सन्ध्या होवे वीराने में,
उसके कानों में क्यों कहने
आते हो ? यह घर मेरा है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

है नील चँदोवा तना कि झूमर
झालर उसमें चमक रहे,
क्यों घर की याद दिलाते हो,
जब सारा रैन बसेरा है ?

जब चाँद मुझे नहलाता है,
सूरज रोशनी पिन्हाता है,
क्यों दीपक लेकर कहते हो,
यह तेरा है, यह मेरा है ?

ये आये बादल घूम उठे,
ये हवा के झोंके झूम उठे,
बिजली की चम-चम पर चढ़
गीले मोती भू चूम उठे;

फिर सनसनाट का ठाठ बना
आ गयी हवा, कजली-गाने,
आ गयी रात, सौगात लिये,
ये गुलसब्बो मासूम उठे।

इतने में कोयल बोल उठी,
अपनी तो दुनिया डोल उठी,
यह अन्धकार का तरल प्यार,
सिसकें बन आयीं जब मलार

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मत घर की याद दिलाओ तुम,
अपना तो तो काला डेरा है,
कलरव बरसात, हवा ठंडी,
मीठे दाने खारे मोती;

सब कुछ ले, लौटाया न कभी,
घर वाला महज़ लुटेरा है।

हो मुकुट हिमालय पहनाता,
सागर जिसके पद धुलवाता
यह बँधा बेड़ियों में मन्दिर
मसजिद गुरुद्वारा मेरा है!

क्या कहा कि यह घर मेरा है?

———

हिमकिरीटिनी

री सजनि! बन-राजि की शृंगार।

समय के वन-मालियों
की क़लम के वरदान,
डालियों, काँटों भरी
के ऐ मृदुल-अहसान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मुग्ध मस्तों के हृदय के
मुँदे तत्व अगाध,
चपल अलि की परम
संचित गूँजने की साध।

बाग़ की बाग़ी हवा
की मानिनी खिलवाड़,
पहन कर तेरा मुकुट
इठला रहा है झाड़।

खोल मत निज पंखियों का द्वार,
री सजनि! वन-राजि की श्रृंगार।

आ गया वह वायु-वाही,
मित्र का नव राग
बुलबुलें गाने लगी हैं
जाग प्यारी! जाग!

प्रेम - प्यासे गीत गढ़;
तेरा सराहें त्याग,
रागियों का प्राण है,
तेरा अतुल अनुराग।

पर न वनदेवी! न सम्पुट
खोल तू मत जाग,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विश्व के बाज़ार में
मत बेच मधुर पराग!
खुली पंखड़ियाँ कि तू बे-मोल.
हाट है यह; तू हृदय मत खोल।

वृक्ष के अन्तर हृदय की
री मृदुलतर शक्ति!
फलों की जननी, सुगन्धों
की अमर अनुरक्ति!

छोड़ तू बड़भागिनी,
ये उभय लालच छोड़,
आज तो सिर काटने
में हो रही है होड़!

अरी व्यर्थ नहीं, कि
प्रियतम माँगता है दान,
ले अमर तारुण्य
अपने हाथ, को .कुरबान

मिटेंगी ?-मिट जाँय चंचल चाह,
मुँदी रह तू हो न अरी तबाह!

हँस रही है और हँस
ले .खूब, तू मत बोल,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

भोगियों के चरण की
कुचलन बनाकर मोल।

तुच्छ से अनुराग पर,
वे खो रही हैं त्याग,
राग पर उनके, हुआ
अपमान - भोगी बाग़।

चाह तेरी भी बनेंगी,
नाश का गोदाम?
क्या तुझे भी चाहिए?
तारुण्य का नीलाम?

सँभल, अलिगण छू न पाँय पराग,
भैरवी सोरठ समझ, मत जाग!

क्या कहा, "कैसे सहूँ
इस कोकिला की हूक?
और मैना की मधुरता
कर रही दो टूक?

मृदुल चिड़ियों की चहक
पर महक है बेचैन?
यह सवेरे की हवा,
आ गयी बनकर मैन?"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ठीक है, तब भी छिड़े
तेरा प्रलय से जंग,
री प्रसादिनि ! हो न तेरा
वह तरुण तप भंग !

भावुकों के ऐ अमित अभिमान,
जाग मत. अग्र पर न कर अवसान।

मित्र के कर फेंकते
तुझ पर सुनहली धूल।
डालि पर तेरी रही
निर्दय मुनैया भूल।

कर रहे तुझको हवा
पत्ते, अपनपा भूल,
कामिनी का, दे रहा
झाड़ें, प्रमत्त दुकूल।

पर न इनकी मान तू,
है शाप ये वरदान,
हिमकिरीटिनि ने मँगाये
हैं सखी तब प्राण।

बिना बोले, मातृ-चरणों डोल,
और उस दिन तक हृदय मत खोल !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जब सिपाही उठें,
सेनी उठे ललकार,
मातृ-बन्धन-मुक्ति का
जिस दिन मने त्यौहार,

जब कि जन-पथ लाल हों,
हो किसी की तलवार,
आयगा सिर काटने
उस दिवस मालाकार,

करेगा हुंकार, कलियाँ
बन्द, हों तैयार
सूजियों से छेदने में
आज उनकी बार !

यह मधुर बलि, हो विजय की मोल,
मानिनी, तब तक हृदय मत खोल।
हिम किरीटिनि की परम उपहार !
री सजनि ! बन-राजि की शृंङ्गार !

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री माखनलाल चतुर्वेदी के ग्रन्थ

काव्य—त्रिधारा, हिमकिरीटिनी

गद्य—साहित्य-देवता

नाटक—श्री कृष्णार्जुन युद्ध ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

'श्री नवीन' राष्ट्रीय कवि कहे गये हैं, पर उनकी राष्ट्रीयता संकेतवाद के सामने गौण है। इसमें सन्देह नहीं कि नवीन ने कुछ राष्ट्रीय गीत उच्च कोटि के लिखे हैं पर ऐसे गीतों की संख्या कम है। उनकी अधिकांश कविताओं में सौन्दर्य का अन्वेषण है। कहीं-कहीं उनके पीछे अध्यात्मवाद भी है, पर भाषा 'एक भारतीय आत्मा' की भाषा की भाँति ही 'ऊबड़ खाबड़ है उसमें साहित्यिक सुरुचि नहीं है। भाव-विन्यास में 'नवीन' जी आधुनिक छायावादी कवियों से किसी भाँति भी हीन नहीं हैं। यद्यपि नवीन ने कोई दार्शनिकता प्रदर्शित नहीं की तथापि उनकी पंक्तियों में मानव-जीवन का इतिहास बड़े शक्तिशाली रूप में है। नवीन में देश-भक्ति की भावना के साथ सौन्दर्यान्वेषण की शक्ति भी बहुत अच्छी है। आश्चर्य तो इस बात का है कि जो कवि देश के दुख-दर्द में भैरव हुँकार जैसी कविता लिखता है वही किसी कोमलांगी के सौन्दर्य से अभिभूत हो जाता है।

'नवीन' की देश-भक्ति में भी सौन्दर्य की अनुभूति है।

——

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विप्लव-गायन

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ—जिससे उथल-पुथल मच जाये,
एक हिलोर इधर से आये एक हिलोर उधर से आये,
प्राणों के लाले पड़ जायें, त्राहि-त्राहि रव, नभ में छाये,
नाश और सत्यानाशों का धुँआधार जग में छा जाये,
बरसे आग, जलद जल जायें; भस्मसात् भूधर हो जायें,
पाप-पुण्य सद्सद्भावों की धूल उड़ उठे दायें-बायें,
नभ का वक्षस्थल फट जाये, तारे टूक-टूक हो जायें,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ; जिससे उथल-पुथल मच जाये।

माता की छाती का अमृतमय पय कालकूट हो जाये,
आँखों का पानी सूखे, वे शोणित की घूँटें हो जायें,
एक ओर कायरता काँपे; गतानुगति विगलित हो जाये,
अन्धे मूढ़ विचारों की वह, अचल शिला विचलित हो जाये,
और दूसरी ओर कँपा देने वाला गर्जन उठ धाये,
अन्तरिक्ष में एक उसी नाशक तर्जन की ध्वनि मँडराये,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाये।

नियम और उपनियमों के ये बन्धन टूक-टूक हो जायें,
विश्वम्भर की पोषक बीणा के सब तार मूक हो जायें,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शान्ति दंड टूटे उस महारुद्र का सिंहासन थर्राये,
उसकी पोषक श्वासोच्छ्वास, विश्व के प्रांगण में घहराये,
नाश ! नाश !! हा महानाश !!!—की प्रलयंकरी आँख खुल जाये,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये !

"सावधान ? मेरी वीणा में चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी हैं मिजराबें, युगलांगुलियाँ ये मेरी ऐंठी हैं,
कंठ रुका जाता है, महानाश का गीत रुद्ध होता है,
आग लगेगी क्षण में, हृत्तल में अब क्षुब्ध युद्ध होता है,
झाड़ और झंकाड़ व्याप्त हैं - इस ज्वलन्त गायन के स्वर से,
रुद्ध-गीत की क्षुब्ध तान निकली है मेरे अन्तर-तर से !

"कण-कण में है व्याप्त वही स्वर, रोम-रोम गाता है वह ध्वनि,
वही तान गाती रहती है, कालकूट फणि की चिन्तामणि,
जीवन ज्योति लुप्त है—आह ! सुप्त हैं संरक्षण की घड़ियाँ,
लटक रही हैं प्रतिपल में इस नाशक संभक्षण की लड़ियाँ !
चकनाचूर करो जग को—गूँजे ब्रह्मांड नाश के स्वर से,
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान, निकली है मेरे अन्तर-तर से !

"दिल को मसल-मसल मेंहदी, रचता आया हूँ मैं यह देखो—
एक-एक अंगुलि परिचालन में नाशक तांडव को पेखो !
विश्व-मूर्ति ! हट जाओ—यह वीभत्स प्रहार सहे न सहेगा,
टुकड़े - टुकड़े हो जाओगी, नाश-मात्र अवशेष रहेगा।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आज देख आया हूँ, जीवन के सब राज़ समझ आया हूँ;
भ्रू-विलास में महानाश के, पोषक-सूत्र परख आया हूँ;
जीवन-गीत भुला दो कंठ मिला दो, मृत्यु गीत के स्वर से,
रुद्ध-गीत की क्रुद्ध तान निकली है मेरे अन्तर-तर से !"

नंगों भूखों का यह गाना।

सुन लो, गर तुम में हिम्मत है,
नंगों-भूखों का यह गाना,
अब तक के रोने वालों का
यह विकट तराना मस्ताना;

जिनको तुम कीड़ा समझे थे,
वे तो यारो ! निकले मानव,
जो रेंगा करते थे अब तक,
आज कर उठे हैं वे ताण्डव;

देखो तो इन उरगों के भी
दो-दो कर-पद उग आये हैं,
इन निपट रेंगने वालों ने
अपने सर आज उठाये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तुम क्यों खीझो हो, ओ मालिक !
दो आज बधाई जन-गण को,
आओ सम्मानित करो आज
इस नवल जागरण के क्षण को;

जिस क्षण प्रणोदना-जन्य तीव्र
तड़पन से, चल हो अन्तस्तल,
जिस क्षण विकास की पीड़ा से
हो यह बाह्याभ्यन्तर विह्वल;

उस दिन तुम क्यों न निछावर हो
जाओ मानवता के ऊपर ?
क्या काम खीझने का उस क्षण ?
सोचो तो, ओ तुम लक्ष्मीधर !

हम क्यों उदास हत-आश बनें
जागृति की प्रातर्वेला में ?
हम क्यों मीचें अपने लोचन
किरणों की नूतन खेला में ?

जागृति में कुछ तो उठा-पटक,
कुछ गड़बड़ तो होती ही है;
जागृति तो आखिर जागृति है,
वह तो निद्रा खोती ही है;

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तुम विकट उग्र उद्योगी हो,
तुम व्यवसायी, तुम बहुधन्धी;
तुम हो औद्योगिक क्रान्तिपाल
मत बनो रूढ़ियों के बन्दी।

वे जो थे नव चेतना-शून्य,
अब अँगड़ाई ले उठे, अहो!
इनमें यों विचलित होने की
है कौन बात कुछ तुम्ही कहो;

इनका यह नव जागरण दिवस,
है देवोत्थान पर्व जन का,
है इसमें तो प्रेरणा अगम,
इसमें है स्वर उद्बोधन का,

तुम करो आरती वसुधा की,
जागें धरती के पूत बली;
ये नव निर्माण-स्वप्न-द्रष्टा,
संहारों के अवधूत बली;

अन्तरतर का तम-तोम हटा,
भय भागा, नींद हटी गहरी;
जग-जन-गण के उन्नायक ये
अब जाग उठे सज्जित प्रहरी;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यह दोहन-चक्र चला सदियों,
पिसती आयी यह मानवता,
निज डाढ़ चलाती रही .खूब,
सदियों विकराली दानवता।

आँखें सहसा खुल चलीं आज,
टूटा सम्मोहन—इन्द्रजाल,
गतिमय, कृतिमय, धृतिमय महान
हो रहे आज सब दिशापाल।

तुम आज शिकायत करते हो,
जन-गण की उच्छृङ्खलता की,
पर कभी न देखी क्या तुमने
झाँकी जीवन-चंचलता की ?

सोचो तो, यारो! वह वेला,
जब जड़मय पराभूत जग था,
उस क्षण जीवन-गति-रहित, शून्य
निष्प्राण अकम्पित जग-मग था,

हाँ, जब चेतन काँपा जड़ में,
तब हुई सृष्टि की सुसफलता,
पर; तब, तुम होते तो कहते,
'यह तो है अति उच्छृङ्खलता ?'

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

क्षण भर को तो सोचो भाई,
जड़ चेतन का वह सन्धिकाल,
कितना विस्फोटक, प्रलयंकर,
होगा वह कितना अति कराल!

जीवनधारी होकर के तुम
हड़-बड़ से यों घबड़ाते हो?
यह हेम कूप-मंडूक-वृत्ति
जो तुम यों नाक चढ़ाते हो;

मानवता को कुछ गति देने,
कुछ देने जीवन-दान नया,
कुछ उसे बढ़ाने आगे को
आयी है यह जागृति अभया;

भूखों की रसना आज खुली,
मुर्दों में आयी जान ज़रा;
अब तक के सहने वालों में
आयी है एक उठान ज़रा;

मानवता तभी बढ़ी आगे
जब उभरे ये नीचे वाले;
आया बिहिश्त धरती पर तब
सब सँभले ये भोले-भाले,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सृष्टि पूर्णता की मोहक यह
कल्पना तभी आयी जग में;
जब नया वक्त दौड़ने लगा
नीचे वालों की रग-रग में;

अपने पर तुम यों मत फूलो
मत ऐंठो, यों अपनेपन पर;
सिरजन की यह विराट झाँकी,
तन्मय हो देखो तो क्षण भर

तुम कौन तुम्हारा वैभव क्या?
दिनमान तुम्हारा कितना है?
इस महाकाल के सागर में,
बुद्बुद् सम तम को मिटना है,

सोचो, ब्रह्मांड-मंडल में
भू-मंडल की क्या हस्ती है?
इसमें भी कितनी छोटी-सी
संकीर्ण तुम्हारी बस्ती है!

इस काल-चक्र में जँचते हैं
कितने छोटे ये मन्वन्तर;
इस विश्वरूप के दर्शन से
कँप उठता है बाह्याभ्यन्तर।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जीवन के दिन की लघुता को
तुम स्वयम् ज़रा नापो, भाई !
इस लघु दिन की निज करनी को
देखो, दिल में काँपा, भाई !

इतना छोटा अस्तित्व और
इतनी लिप्सा ? इतना प्रमाद ?
इतना शोषण ? इतना दोहन ?
इतना यह भैरव शंखनाद ?

इतना उत्पात भयानक यह,
इतनी क्रीड़ा राक्षसी क्रूर ?
इस एक निमिष के लिए, हाय !
इतनी तेज़ी ! इतना ग़रूर !

ओ धन-कुबेर ! सत्तावादी !
ओ निपट कल्पना-शून्य जीव !
अपने विशाल भवनों की क्यों
रखते बालू पर सदा नींव ?

जग-पीड़न के आधारों पर,
कब स्थायी गृह-निर्माण हुआ ?
विद्वेषों के व्यवहारों से
मानव-मन का कब त्राण हुआ ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ब्रह्मांड-विश्व में यह धरती
है चुटकी भर मृत्तिका-मात्र !
उसमें भी यह वैभव सारा
है मोह-विनिर्मित भग्न-पात्र !

इतने ही भर के लिये खूब
उत्पात मचा नभ-जल-थल में;
पड़ गयी मानवी सृष्टि खूब !
इस सर्वहारिणी हलचल में,

इस धन सम्मोहन-बन्धन से
मानवता को करने विमुक्त—
हैं आज गा उठे मस्तानी
रागिणी हमारे यज्ञ-मुक्त;

चेतना नवल हममें आयी,
निद्रा टूटी, भय भाग गये,
अँज गया प्रकाशांजन दृग में,
हम जाग गये ! हम जाग गये !!

हृद्गति धड़की, फड़कीं बाहें,
कड़की बिजली भड़कीं आहें;
नर मुक्ति-मार्ग की आज खुलीं
वे चौड़ी नयी-नयी राहें,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हम इन राहों से लायेंगे
नव निर्माणों के भव्य भाव;
हम इन राहों पर जायेंगे;
इसमें क्या खटका ? क्या दुराव ?

हम जागे तो ऐसे जागे
कि जागते ही दीखा सपना,
ऐसा सपना जिससे देखा
हमको जग अपना ही अपना;

मिट गया भेद, मिल गया भेद
सब खेद मिटा, संकोच हटा,
सीमा निःसीमा बन आयी,
मेरे-तेरे का पाप कटा;

कल्पना हंसिनी ने अपने
डैने फैलाये तान-तान,
पहले का लघु आकाश आज,
बन गया असीमित आसमान;

समता की ममता ने हमको,
जन-गण-उद्धारण मन्त्र दिया;
हम करने निकले सिद्ध आज
जन-सत्ता-शासन-तन्त्र क्रिया;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बाधाएँ हैं मग में. भाई !
आने दो, स्वागत है उनका ;
हम क्रान्तिदर्शियों का समूह
पक्का है अपनी इस धुन का;

हम ख़ूब जानते हैं, जग में
विप्लव कोई खिलवाड़ नहीं
है कर्म्म कठिन, पर निश्चित ही
है तिल की ओट पहाड़ यही,

निकले हैं अपने मस्तक को
हम आज हथेली पर लेकर
हम नंगे, भूखे, जाहिल हैं,
हम निपट निराश्रित, हम बेघर;

पर क्या ही यह युग-धर्म्म ख़ूब
नंगों-भूखों पर भार पड़ा,
इनको नव सिरजन करना है,
हमको करना संहार बड़ा,

है देख रहा नव आशा से
हमको समस्त संसार खड़ा;
हम लिए लुकाठी करते हैं
जग बीच अग्नि-संस्कार कड़ा;

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हु-हू करती लपटें उठतीं,
हो रहीं रूढ़ियाँ भस्म आज
हो रही पूर्ण धीरे-धीरे
यों विश्व-क्रान्ति की रस्म आज;

इस होली में सब जलता है,
हम भी हो जाते राख यहाँ;
पर इसी राख से फिर बनते
हम जैसे सौ-सौ लाख यहाँ;

हम नव प्रकाश के पुंज अतुल
हम उच्चाकाश-दीप जग के;
हम पन्थ अगम, हम पन्थ विकट
हम निर्म्माता नव-नव-मग के;

इस जगती में हम विचर रहे,
ले स्वर्ग-राज्य का पुण्य-भाव,
इस मुक्त हमारी वाणी में
है हृदय-स्पन्दन का खिंचाव;

मानवता उट्ठेगी, यारो!
इसमें शक, शुबहा नहीं ज़रा;
है उधर ज़ालिमों की तोपें,
जो सीना इधर खूब उभरा;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मर मिट जायेंगे हम, तो क्या
रह जायेगी असफला क्रान्ति ?
है क्रान्ति सत्य; है क्रान्ति नित्य,
असफलता तो है एक भ्रान्ति।

— —

कब मिलेंगे ध्रुव चरण वे ?

चलित चरणों की जगह अब, कब मिलेंगे ध्रुव चरण वे ?
युग युगान्तर के समाश्रय, रे अडिग, अशरण-शरण वे !

इधर देखा, उधर झाँका, मिल गये कुछ चपल लोचन,
मैं समझ बैठा कि मुझको मिल गये संकट-विमोचन;
किन्तु करता हूँ विगत का आज जब सिंहावलोकन,
देखता हूँ तब अनस्थिर भावना के आचरण ये।

प्राण के उच्छ्वास में मैं खींच लाया शूल कितने !
और इस विश्वास में उड़-उड़ गये हैं फूल कितने !
दान में, स्मृति-रूप-कंटक मिल गये हैं आज इतने—
कि उन सुमनों के हुए हैं शूल ही नव संस्करण ये।

नेत्र विस्फारित किये जल, थल असीमाकाश में नित—
फिर रहा है खोजता कुछ चीज़ मैं व्याकुल, प्रवंचित;
भाल-रेखा पर हुई है चिर विफलता-छाप अंकित,
विकल अन्वेषण-सुरति को कब करेंगे पिय बरण वे ?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दीप लघु मैं, तव अलख कर से समय नद में, प्रवाहित,
नित्य-प्रति प्रतिकूलता के प्रबल झोंकों से प्रताड़ित,
टिमटिमाता बह रहा हूँ मैं जनम का ही निराश्रित;
दीप-सम्पुट कब बनेंगी कर-अँगुलियाँ मनहरण वे?

कौन जाने, यह विकम्पित दीप तुमने कब बहाया?
क्या पता तुमने इसे फिर कब बुझाया, कब जगाया?
क्या पता इतना, कि इससे आज तक प्रश्रय न पाया;
हैं बहाये जा रहे इस को, प्रवाही उपकरण ये।

कँप रही है ज्योति, अब तो तुम इसे कर दो अनिंगित
तव निवास-स्थान में अब लौ लगे इसकी अशंकित;
सजन ज्योतिर्मय करो निज पुंज में इसको सुसंचित,
थाम दो अब तो ज़रा इस के अवश-से सन्तरण ये!

कुहू की बात

चार दिन की चाँदनी थी, फिर अँधेरी रात है अब,
फिर वही दिग्भ्रम, वही काली कुहू की बात है अब!
चाँदनी मेरे जगत की भ्रान्ति की है एक माया;
रश्मि-रेखा तो अथिर है, नित्य है घन तिमिर छाया;
ज्योति छिटकी थी कभी, अब तो अँधेरा पाख आया;
रात है मेरी सजनि, इस भाल में नव प्रात है कब?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

इस असीमाकाश में भी लहरता है तिमिर-सागर ;
कौन कहता है गगन का वक्ष है अह-निशि उजागर ?
ज्योति आती है क्षणिक उद्दीप्त करने तिमिर का घर,
अन्यथा तो अन्धतम का ही यहाँ उत्पात है सब ।

मैं अँधेरे देश का हूँ चिर प्रवासी, सतत चिन्तित,
हृदय विभ्रम-जनित आकुल, अश्रु से मन पन्थ सिंचित;
ओ प्रकाश-विकाश, ओ नव रश्मि हास-विलास रंजित
मत चमकना अब, निराश्रित हूँ, शिथिल से गात हैं सब ।

सजन मेरे सो रहे हैं

सजन मेरे सो रहे हैं;
आज द्वन्द्वातीत से वे योग-निद्रित हो रहे हैं;
सजन मेरे सो रहे हैं !

सुख-शयन के भार से हैं युग दृगच्छद अति थकित वे,
ध्यान वीणा नाद में हैं रम गये लोचन चकित वे ;
नयन-तारा, पलक-कारावद्ध हैं, अति गति चलित वे ;
श्वास-दोलाचलन में प्रिय भार तन्द्रिल ढो रहे हैं,
सजन मेरे सो रहे हैं ।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नींद में घुल-मिल गयी हैं जागरण की सब व्यथाएँ;
स्वप्न के संकेत की हैं, अटपटी-सी सब कथाएँ;
शून्य-निद्रा-लोक-शोभा सजन जागें तो बताएँ;
इस समय तो चित्त की चिर चेतना वे खो रहे हैं,
सजन मेरे सो रहे हैं।

सुप्त-सरिता-धार में अस्तित्व-तरणी पड़ गयी है,
पूर्ण-संज्ञा शून्यता से भँवर लौं वह बढ़ गयी है;
शान्ति के पतवार की शोभा अनोखी नित नयी है;
नाव में विश्रान्ति-जल से मुख-कमल प्रिय धो रहे हैं;
सजन मेरे सो रहे हैं।

ले चलो कुछ देर को तो शयन-अपगा-कूल तक, प्रिय!
दृग निमीलन मत करो अब थक गये हैं ये पलक, प्रिय!
नित्य जागृति-वेदना से हैं शिथिल मन, बुद्धि इन्द्रिय,
आज टुक विश्रान्ति के हित युगल लोचन रो रहे हैं,
सजन मेरे सो रहे हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लिख विरह के गान

लिख विरह के गान, रे कवि !
.खूब खिलने दे अधर पर, दुख भरी मुसकान, रे कवि !
लिख विरह के गान।

इस झड़ी में बढ़ गयी है शून्यता मम हिय विकल की,
असहनीया हो गयी हैं सतत धारें मेघ-जल की ;
किन्तु कब उनने सुनी है प्रार्थना आतुर निबल की ?
तू लगा मम वेदना का आज कुछ अनुमान रे कवि !
लिख विरह के गान।

व्योम में यह ढूँढता-सा फिर रहा निशि-नाथ उनको,
मेघ तरियाँ गगन-सर में खोजती हैं उस निपुण को,
कवि ! सदेही, सगुण कर दे तू सनेही चिर निगुण को,
शून्य में कर शब्द बेधी मन्त्र-शर सन्धान, रे कवि !
लिख विरह के गान।

नित्य निर्गुण चित्रपट में सगुणता की रेख भरना,
है यही पुरुषार्थ नर का अलख का अभिषेक करना ;
अतल से कुछ खींच लाना, शून्य में साश्रय विचरना :
यदि न यह सम्भाव्य हो तो क्यों न तड़पें प्राण रे कवि !
लिख विरह के गान।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नेह मानस-जात मेरा. यह चला अब मूर्त्त खोने,
मचल उट्ठा आज है वह निज स्वरूप अमूर्त्त खोने,
तड़पता है आधिभौतिक भाव में संस्फूर्त्त होने,
आत्म रूपाधार को वह खोजता अनजान, रे कवि !
लिख बिरह के गान।

प्राण प्रिय के रूठने की क्यों मिली है सूचना यह ?
हो गयी क्यों आज उनकी हिय-दशा यों उन्मना यह ?
नेहदानी की विरति की हो रही क्यों व्यंजना यह ?
शिथिल, दीना पड़ गयी क्यों मम अतृप्त उड़ान रे कवि !
लिख विरह के गान।

तप्त प्राणों ने निरन्तर कौन सी विपदा न झेली ?
किन्तु उलझी ही रही फिर भी अभी तक यह पहेली;
सतत अन्वेषण-क्रिया है बन गयी जीवन-सहेली;
आह ! क्या योंही पड़े रह जायँगे अरमान, रे कवि ?
लिख विरह के गान।

आम्र-वन के सघन झुरमुट से पपीहे ने पुकारा,
'पी, कहाँ ?' मैंने तड़प कर शून्य दिङ् मंडल निहारा;
'पी, कहाँ ?' प्यासे दृगों का है कहाँ दर्शन-सहारा ?
क्यों नहीं पहुँचा वहाँ तक निरत मेरा ध्यान ? रे कवि !
लिख विरह के गान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आज इस धूमिल घड़ी में कौन यह सन्देश लाया ?
साँझ आयी, किन्तु उनका राज-रथ अब तक न आया !
ढीठ मन यह पूछता है, क्यों उन्हें अब तक न पाया ?
क्या बताऊँ क्यों नहीं आये सजन रसखान ? रे कवि !
लिख विरह के गान।

हिय-रार मेरी

अमित है छिन्नाभ्र सी यह रसभरी हिय रार मेरी,
कुपित झंझावात में पड़ उड़ चली मनुहार मेरी,
अतल मानस नील नभ में एक दिन कुछ भाव जागे,
कुछ हुआ भ्रम-सा अचानक आ गया कुछ आँख आगे,
सघन घन-गण घुमड़ घहरे, प्राणदाहक त्रास भागे।
यह हुआ अनुभव कि आयी सजल ऋतु इस बार मेरी:
पर, अचिर थी मेघ माला, वह तिरोहित हो गयी है,
आज फिर से क्षितिज-रेखा ताप-लोहित हो गयी है;
बिज्जु-रेखा ? कौन जाने यह किधर को खो गयी है ?
उठ चली आँधी; हुई है वह मधुरिमा क्षार मेरी;
हास छिटका, रौप्य-रेखा खींचते इस व्योम पथ पर—
माघ - मेघों के चमकते; रुपहले गतिवान रथ पर,—
मुदित आरोहित हुए तुम आ गये थे; ललन मनहर !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बस तभी पहले पहल, उस दिन, हुई थी हार मेरी।
श्वास ओ' निःश्वास का यह द्रुत समीरण-तुरग चंचल,
ले चला मुझको जहाँ थे अर्ध मीलित तव दृगंचल;
किन्तु तुम तो डाल बैठे थे मुखाम्बुज पर पटांचल,
लो, निराश्रित हो गयी है मन-लगन सुकुमार मेरी।
रस भरी हिय-रार मेरी।

[स्फुट]

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के ग्रन्थ

काव्य—विस्मृता उर्मिला, कुंकुम।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

श्रीमती सुभद्रा कुमारी की रचनाएँ सबसे पहले 'कर्मवीर' के द्वारा साहित्य-संसार को प्राप्त हुईं। इन रचनाओं में जितनी सरलता थी उतनी ही स्वाभाविकता। धीरे-धीरे सुभद्राजी की रचनाओं ने शक्ति प्राप्त कर हिन्दी काव्य-साहित्य में आदरणीय स्थान पाया।

सुभद्रा जी की रचनाओं में नारी मनोविज्ञान की स्वाभाविक भावना है। उनकी रचनाएँ उनके पारिवारिक अनुभव की महान् कृतियाँ हैं और उनमें दुख सुख की विविध भावनाएँ किसी स्रोतस्विनी की तरंगों की भाँति ही सहज और सौन्दर्य-पूर्ण हैं।

जिन रचनाओं में सुभद्रा कुमारी जी का जीवन अंकित हुआ है वे उनकी राष्ट्रीय रचनाएँ हैं। सुभद्रा कुमारी ने वीर क्षत्राणी बन कर ओजपूर्ण शब्दों में भारत का गौरव-गीत गाया है। उनकी 'झाँसी वाली रानी' कविता अपनी भावना में अद्वितीय है। सुभद्रा जी की कविताओं

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

में अलंकारों का सौन्दर्य नहीं किन्तु भावोन्मेष का सौन्दर्य है। उनमें सरलता है, प्रवाह है।

सुभद्रा जी एक कहानी लेखिका भी हैं। 'बिखरे मोती' में उनकी कहानियाँ जीवन की स्वाभाविकता लिये हुये हैं, उन्हें काव्य और कहानी पर दो बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सेकसरिया पारितोषिक मिला है।

सुभद्रा जी का देश-प्रेम उनके नारीत्व के तेज से मिल कर बहुत शक्तिशाली हो गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कानपूर के नाना की, मुँहबोली बहिन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वीर शिवा जी की गाथाऐं
उसको याद ज़बानी थीं,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयम् वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार;
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी
भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
व्याह हुआ रानी बन आयी लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राज महल में बजी बधाई खुशियाँ छायीं झाँसी में,
सुभट बुँदेलों की विरुदावलि-सी वह आयी झाँसी में,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

चित्रा ने अर्जुन को पाया,
शिव से मिली भवानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छायी,
किन्तु काल-गति चुपके-चुपके काली घटा घेर लायी,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भायीं!
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आयी!

निःसन्तान मरे राजा जी
रानी शोक-समानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया;
फ़ौरन फ़ौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया.

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा
झाँसी हुई बिरानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गयी काया,
राजाओं, नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह
दासी अब महारानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

छिनी राजधानी देहली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
क़ैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तंजौर; सतारा, करनाटक की कौन विसात?
जब कि सिन्ध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बंगाले मद्रास आदि की
भी तो वही कहानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

रानी रोयी रनिवासों में, बेगम ग़म से थी बेज़ार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार;
सरे-आम नीलाम छापते थे अँगरेज़ों के अख़बार,
'नागपूर से जेवर ले लो' 'लखनऊ के लो नौलख हार',

यों परदे की इज्ज़त परदेशी
के हाथ बिकानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

कुटियों में थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान;
बीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान;
नाना धुन्धू पन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहन छबीली ने रण-चंडी का कर दिया प्रकट आह्वान!

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो
सोयी ज्योति जगानी थी,
बुन्देलों हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम से आयी थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छायी थी,
मेरठ. कानपूर, पटना ने भारी धूम मचायी थी,

जबलपूर कोल्हापुर में भी
कुछ हलचल उकसानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी;
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

इस स्वतन्त्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आये काम,
नाना धुन्धूपन्त, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम;
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लेकिन आज जुर्म कहलाती
उनकी जो क़ुरबानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

इनकी गाथा छोड़, चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वौकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व असमानों में,

जख्मी होकर वौकर भागा,
उसे अजब हैरानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
ख़ूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

रानी बढ़ी कालपी आयी, कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अँगरेज़ों ने फिर खायी रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अँगरेज़ों के मित्र सिन्धिया
ने छोड़ी रजधानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

विजय मिली, पर अँगरेज़ों की फिर सेना घिर आयी थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खायी थी,
राना और मन्दरा सखियाँ रानी के सँग आयी थीं;
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचायी थी;

पर पीछे ह्यू रोज आ गया,
हाय! घिरी अब रानी थी;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

तो भी रानी मार-काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

घायल होकर गिरी सिंहनी
उसे वीरगति पानी थी ;
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतन्त्रता नारी थी;

दिखा गई रथ, सिखा गयी
हमको जो सीख सिखानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी!

जाओ रानी! याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तेरा स्मारक तू हीं होगी,
तू .खुद अमिट निशानी थी,
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी—
.खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

———

विजयादशमी

विजये ! तूने तो देखा है
वह विजयी, जो राम, सखी !
धर्म भीरु सात्विक निश्चल मन
वह करुणा का धाम, सखी !
बनवासी असहाय और फिर
हुआ विधाता वाम, सखी !
हरी गयी सहचरी जानकी
वह व्याकुल घनश्याम सखी !
कैसे जीत सका रावण को
यह तो था सम्राट्, सखी !
रक्षक, राक्षस-सैन्य सबल था,
प्रहरी, सिन्धु विराट, सखी !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

राम समान हमारा भी तो
नहीं रहा अब राज, सखी !
राजदुलारों के तन पर हैं
सजे फ़कीरी साज, सखी !

हो असहाय भटकते फिरते
बनवासी से आज, सखी !
सीता-लक्ष्मी हरी किसी ने !
गयी हमारी लाज, सखी !

रामचन्द्र की विजय कथा का
भेद बता आदर्श, सखी !
पराधीन से छूटे यह
प्यारा भारतवर्ष सखी !

सबल पुरुष यदि भीरु बने तो,
हमको दे वरदान सखी !
बतलाएँ उठ पड़ें देश में
करें युद्ध घमसान, सखी !

पापों के गढ़ टूट पड़ें औ,
रहना तुम तैयार; सखी !
विजये ! हम तुम मिलकर लेंगी
अपनी माँ का प्यार, सखी !

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मातृ-मन्दिर में

व्यथित है मेरा हृदय-प्रदेश
चलूँ किसको बहलाऊँ आज ?
बताकर अपना दुख-सुख उसे
हृदय का भार हटाऊँ आज।
चलूँ माँ के पद-पंकज पकड़,
नयन जल से नहलाऊँ आज,
मातृ-मन्दिर में—मैंने कहा—
'चलूँ दर्शन कर आऊँ आज।'

किन्तु यह हुआ अचानक ध्यान
दीन हूँ, छोटी हूँ, अज्ञान !
मातृ-मन्दिर का दुर्गम मार्ग
तुम्हीं बतला दो, हे भगवान !
मार्ग के बाधक पहरेदार
सुना है ऊँचे से सोपान;
फिसलते हैं ये दुर्बल पैर
चढ़ा दो मुझको, हे भगवान् !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

आह ! वे जगमग-जगमग जगीं
ज्योतियाँ देख रही हैं वहाँ,
शीघ्रता करो, वाद्य बज उठे
भला मैं कैसे जाऊ वहाँ ?
सुनायी पड़ता है कलगान
मिला दूँ मैं भी अपनी तान;
शीघ्रता करो, मुझे ले चलो
मातृ-मन्दिर में हे भगवान् !

चलूँ, मैं जल्दी से चढ़ चलूँ,
देख लूँ, माँ की प्यारी मूर्ति,
आह ! वह मीठी-सी मुसकान
जागती होगी न्यारी स्फूर्ति ;
उसे भी आती होगी याद !
उसे ? हाँ आती होगी याद ;
नहीं रूठूँगी मैं, लो, आज
सुनाऊँगी उसको फ़रियाद ।

कलेजा माँ का मैं सन्तान,
करेगी दोषों पर अभिमान,
मातृ-वेदी पर घंटा बजा,
चढ़ा दो मुझको, हे भगवान् !

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सुनूँगी माता की आवाज़,
रहूँगी मरने को तैयार;
कभी भी उस वेदी पर, देव!
न होने दूँगी अत्याचार।

न होने दूँगी अत्याचार
चलो, मैं हो जाऊँ बलिदान,
मातृ-मन्दिर में हुई पुकार—
चढ़ा दो मुझको, हे भगवान!

———

समर्पण

सूखी सी अधखिली कली है,
परिमल नहीं, पराग नहीं,
किन्तु कुटिल भौंरों के चुम्बन
का, है इस पर दाग़ नहीं।

तेरी अतुल कृपा का बदला
नहीं चुकाने आयी हूँ,
केवल पूजा में ये कलियाँ
भक्ति-भाव से लायी हूँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रणय-जल्पना, चिन्त्य-कल्पना
मधुर वासनाएँ प्यारी;
मृदु अभिलाषा, विजयी आशा,
सजा रही थीं फुलवारी;

किन्तु गर्व का मौक़ा आया,
यदपि गर्व था वह तेरा;
उजड़ गयी फुलवारी सारी
बिगड़ गया सब कुछ मेरा।

बची हुई स्मृति की ये कलियाँ,
मैं बटोर कर लायी हूँ,
तुझे सुझाने, तुझे रिझाने,
तुझे मनाने, आयी हूँ।

प्रेम-भाव से हो, अथवा हो,
दया भाव से ही स्वीकार;
ठुकराना मत इसे जान कर,
मेरा छोटा सा उपहार।

[मुकुल से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वीरों का कैसा हो वसन्त ?

वीरों का कैसा हो वसन्त ?
आ रही हिमांचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्—दिगन्त,
वीरों का कैसा हो बसन्त ?

फूली सरसों ने दिया रंग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग;
वधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,
हैं वीर देश में किन्तु कन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,
मिलने आये हैं आदि अन्त;
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

गलबाहें हों, या हो कृपाण;
चल चितवन हो, या धनुष-बाण,
हो रस-विलास या दलित-त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

कह दे अतीत अब मौन त्याग,
लंके ! तुझमें क्यों लगी आग ?
ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग, जाग,
बतला अपने अनुभव अनन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

हल्दीघाटी के शिला-खंड !
ऐ दुर्ग सिंह-गढ़ के प्रचंड !
राणा, ताना का कर घमंड,
दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलन्त
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

भूषण अथवा कवि चन्द नहीं;
बिजली भर दे वह छन्द नहीं;
है क़लम बँधी, स्वच्छन्द नहीं,
फिर हमें बतावे कौन ? हन्त !
वीरों का कैसा हो बसन्त ?

[त्रिधारा से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के ग्रन्थ

काव्य—मुकुल ।

कहानी—बिखरे मोती, उन्मादिनी, एकादशी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्री रामधारी सिंह दिनकर

श्री 'दिनकर' जी नवीन पीढ़ी के उन कवियों में हैं जिन्होंने काव्य की अनुभूतियों में देश-प्रेम की भावनाओं को स्थान दिया है। इस देश प्रेम के क्रोड़ में सांस्कृतिक परिस्थितियाँ विश्राम ले रही हैं। ये सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अधिकतर स्मृति के रूप में हैं। इन प्राचीन स्मृतियों के आवेग में वे देश के जागरण का गीत गाते हैं और अपने काव्य की शक्ति-शालिनी हुंकार में वे देश के उदास वातावरण को प्रकम्पित कर देते हैं।

'दिनकर' के हृदय में सौन्दर्यात्मक दृष्टि-कोण प्रचुर मात्रा में है। वे प्रकृति के किसी भी चित्र में अपनी अनुभूति का गहरा रंग भरने में समर्थ हैं। उनके काव्य में एक जिज्ञासा है जिसकी प्रकृति में कल्पना से खींचे गए अनेक चित्र उद्घाटित होते हैं और उनकी मनोरम झाँकी से समस्त कविता में एक आकर्षण शक्ति आ जाती है।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

'दिनकर' की कविता में स्वाभाविकता का अनोखा गुण है। उनकी कविता किसी न किसी को लक्ष्य या संबोधन कर लिखी गई है। उन्होंने अनेक बार स्वयं अपनी कविता को संबोधित करके अपनी भावनाओं को उभारने की चेष्टा की है। प्रायः उनकी कविता जनता को संबोधित करके लिखी गई है जिसमें देश को स्वतंत्र बनाने की प्रबल हुंकार है। प्रकृति के विविध रूपों को संबोधन करने की तो दिनकर की अपनी एक शैली ही है।

'दिनकर' की भाषा में एक प्रवाह है उस प्रवाह में भाषा मिश्रित होकर जनता के हृदय तक पहुँच जाती है। भाषा के मिश्रित होते हुए भी कलात्मकता कवि के हाथ से नहीं जाने पाती। वे काव्य-चित्र का सौन्दर्य सुरक्षित रखने में समर्थ होते हैं।

श्री माखनलाल चतुर्वेदी की भाँति 'दिनकर' भी अपनी राष्ट्रीयता में मनोविज्ञान की रूपरेखा सजाते हैं। इसी लिये 'दिनकर' की कविता के संबंध में कहा गया है—'दिल में धधकता हुआ अंगारा' जिस पर इन्द्रधनुष खेल रहे हैं।

श्री दिनकर 'राष्ट्रीय-धारा' के नवीन कवियों में सर्व श्रेष्ठ हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कविता की पुकार

आज न उडु के नील-कुंज में
स्वप्न खोजने जाऊँगी
आज चमेली में न चन्द्र-
किरणों से चित्र बनाऊँगी

अधरों में मुसकान, न लाली
बन कपोल में छाऊँगी
कवि ! किस्मत पर भी न तुम्हारी
आँसू आज बहाऊँगी

नालन्दा, वैशाली में तुम रुला चुके सौ बार
धूसर भुवन-स्वर्ग—ग्रामों में—कर पाई न विहार

आज यह राज-वाटिका छोड़
चलो कवि ! वन-फूलों की ओर

चलो, जहाँ निर्जन कानन में वन्य कुसुम मुसकाते हैं
मलयानिल भूलता, भूलकर जिधर नहीं अलि जाते हैं
कितने दीप बुझे झाड़ी-झुरमुट में ज्योति पसार
चले शून्य में सुरभि छोड़कर कितने कुसुम-कुमार

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कब्र पर मैं कवि ! रोऊँगी
जुगुनु-आरती सँजोऊगी

विद्युत छोड़ दीप साजूँगी, महल छोड़ तृण-कुटी-प्रवेश,
तुम गाँवों के बनो भिखारी, मैं भिखारिणी का लूँ वेश।

स्वर्णाञ्चला अहा ! खेतों में उतरी संध्या श्याम परी
रोमन्थन करती गायें आ रहीं रौंदती घास हरी
घर-घर से उठ रहा धुआँ, जलते चूल्हे बारी-बारी
चौपालों में कृषक बैठ गाते—'कहँ अटके बनवारी'

पनघट से आ रही पीतवसना युवती सुकुमार
किसी भाँति ढोती गागर, यौवन का दुर्वह भार

बनूँगी मैं कवि ! इसकी माँग
कलस, काजल, सिन्दूर, सुहाग

बन-तुलसी की गन्ध लिये हलकी पुरवैया आती है
मन्दिर की घंटा-ध्वनि युग-युगा का सन्देश सुनाती है
टिमटिम दीपक के प्रकाश में पढ़ते निज पोथी शिशुगण
परदेशी की प्रिया बैठ गाती यह विरह-गीत उन्मन-
'भैया ! लिख दे एक कलम खत मों बालम के जोग
चारों कोने खेम-कुसल माँझे ठाँ मोर बियोग'

दूतिका मैं बन जाऊँगी
सखी ! सुधि उन्हें सुनाऊँगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पहन शुक्र का कर्णफूल है दिशा अभी भी मतवाली
रहते रात रमणियाँ आईं, ले-ले फूलों की डाली
स्वर्ग-स्रोत, करुणा की धारा, भारत-मा का पुण्य तरल
भक्ति-अश्रुधारा-सी निर्मल गंगा बहती है अविरल

लहर-लहर पर लहराते हैं मधुर प्रभाती-गान
भुवन स्वर्ग बन रहा उड़े जाते ऊपर को प्राण

पुजारिन की बन कंठ-हिलोर
भिगो दूँगी अग-जग का छोर

कवि! असाढ़ की इस रिमझिम में धनखेतों में जाने दो
कृषक-सुन्दरी के स्वर में अटपटे गीत कुछ गाने दो
दुखियों के केवल उत्सव में इस दम पर्व मनाने दो
रोऊँगी खलिहानों में, खेतों में तो हर्षाने दो

मैं बच्चों के संग जरा खेलूँगी दूब-बिछौने पर
मचलूँगी मैं जरा इन्द्रधनुष के रंगीन खिलौने पर
तितली के पीछे दौड़ूँगी, नाचूँगी दे-दे ताली
मकई की मैं सुरभि बनूँगी, पके आम-फल की लाली

वेणु-कुंज में जुगनू बन मैं इधर-उधर मुसकाऊँगी
हर-सिंगार की कलियाँ बनकर बधुओं पर झर जाऊँगी
सूखी रोटी खायेगा जब कृषक खेत में धरकर हल
तब दूँगी मैं तृप्ति उसे बनकर लोटे का गंगाजल

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उसके तन का दिव्य स्वेदकण बनकर गिरती जाऊँगी
और खेत में उन्हीं कणों से मैं मोती उपजाऊँगी
शस्य-श्यामता निरख करेगा कृषक अधिक जब अभिलाषा
तब मैं उसके हृदय-स्रोत में उमड़ूँगी बनकर आशा
अर्द्धनग्न दम्पति के घर में मैं झोंका बन आऊँगी
लज्जित हों न अतिथि-सम्मुख वे, दीपक तुरत बुझाऊँगी
ऋण-शोधन के लिये दूध, घी बेच-बेच धन जोड़ेंगे
बूँद-बूँद बेचेंगे, अपने लिये नहीं कुछ छोड़ेंगे
शिशु मचलेंगे दूध देख, जननी उनको बहलायेगी
मैं फाड़ूँगी हृदय, लाज से आँख नहीं रो पायेगी

इतने पर भी धन-पतियों की उन पर होगी मार
तब मैं बरसूंगी बन बेबस के आँसू सुकुमार

फटेगा भू का हृदय कठोर
चलो कवि ! बन-फूलों की ओर

———

पाटलिपुत्र की गंगा से

संध्या की इस मलिन सेज पर
गंगे ! किस विषाद के संग
सिसक-सिसककर सुला रही तू
अपने मन की मृदुल उमंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

उमड़ रही आकुल अन्तर में
कैसी यह वेदना अथाह
किस पीड़ा के गहन भार से
निश्चल-सा पड़ गया प्रवाह

मानस के इस मौन मुकुल में
सजनि! कौन-सी व्यथा अपार
बनकर गन्ध अनिल में मिल
जाने को खोज रही लघु द्वार

चल अतीत की रंगभूमि में
स्मृति-पंखों पर चढ़ अनजान
विकल-चित्त सुनती तू अपने
चन्द्रगुप्त का क्या जय-गान

घूम रहा पलकों के भीतर
स्वप्नों-सा गत विभव विराट
आता है क्या याद? मगध का
सुरसरि! वह अशोक सम्राट

संन्यासिनी-समान विजन में
कर-कर गत विभूति का ध्यान
रो रोकर गा रही देवि! क्या
गुप्त-वंश का गरिमा-गान

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गूँज रहे तेरे इस तट पर
गंगे! गौतम के उपदेश
ध्वनित हो रहे इन लहरों में
देवि! अहिंसा के सन्देश

कुहुक-कुहुक मृदु गीत वही
गाती कोयल डाली-डाली
वही स्वर्ण-सन्देश नित्य
बन आता उषा की लाली

तुझे याद है? चढ़े पदों पर
कितने जय-सुमनों के हार
कितनी बार समुद्रगुप्त ने
धोई है तुझ में तलवार

तेरे तीरों पर दिग्विजयी
नृप के कितने उड़े निशान
कितने चक्रवर्तियों ने हैं
किये कूल पर अवभृथ-स्नान

विजयी चन्द्रगुप्त के पद पर
सैल्यूकस की वह मनुहार
तुझे याद है? देवि! मगध का
यह विराट उज्ज्वल शृङ्गार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

जगती पर छाया करती थी
कभी हमारी भुजा विशाल
बार-बार झुकते थे पद पर
ग्रीक, यवन के उन्नत भाल

उस अतीत गौरव की गाथा
छिपी इन्हीं उपकूलों में
कीर्त्ति-सुरभि वह गमक रही
अब भी तेरे वन-फूलों में

नियति-नटी ने खेल-कूद में
किया नष्ट सारा शृङ्गार
खँड़हर की धूलों में सोया
तेरा स्वर्णोदय साकार

तूने सुख-सुहाग देखा है
उदय और फिर अस्त, सखी
देख आज निज युवराजों को
भिक्षाटन में व्यस्त, सखी

एक एक कर गिरे मुकुट
विकसित वन भस्मीभूत हुआ
तेरे सम्मुख महासिन्धु
सूखा, सैकत उद्भूत हुआ

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

धधक उठा तेरे मरघट में
जिस दिन सोने का संसार
एक एक कर लगा दहकने
मगध-सुन्दरी का शृंगार

जिस दिन जली चिता गौरव की
जय-भेरी जब मूक हुई
जमकर ! पत्थर हुई न क्यों
यदि टूट नहीं दो-टूक हुई

देवि ! आज बज रही छिपी ध्वनि
मिट्टी में नक्कारों की
गूँज रही झन-झन धूलों में
मौर्यों की तलवारों की

दायें पार्श्व पड़ा सोता
मिट्टी में मगध शक्तिशाली
वीर लिच्छवी की विधवा
बायें रोती है वैशाली

तू निज मानस-ग्रन्थ खोल
दोनों की गरिमा गाती है
वीचि-दृगों से हेर-हेर
सिर धुन-धुनकर रह जाती है

× × × ×

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

देवि ! दुखद है वर्तमान की
यह असीम पीड़ा सहना
कहीं सुखद इससे संस्मृति में
है अतीत की रत रहना

अस्तु, आज गोधूलि-लग्न में
गंगे ! मन्द-मन्द बहना
गाँवों, नगरों के समीप चल
दर्द-भरे स्वर में कहना—

'सम्प्रति जिसकी दरिद्रता का
करते हो तुम सब उपहास
वहीं कभी मैंने देखा है
मौर्य-वंश का विभव-विलास"

———

बोधिसत्व

सिमिट विश्व-वेदना निखिल बज उठी करुण अन्तर में
देव ! हुंकरित हुआ कठिन युगधर्म तुम्हारे स्वर में
काँटों पर कलियाँ, गैरिक पर किया मुकुट का त्याग
किस सुलग्न में जगा प्रभो ! यौवन का तीव्र विराग

चले ममता का बंधन तोड़
विश्व की महामुक्ति की ओर

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तप की आग, त्याग की ज्वाला में प्रबोध-संधान किया
विष पी स्वयम्, अमिय जीवन का तृषित विश्व को दान किया
वैशाली की धूल चरण चूमने ललक ललचाती है
स्मृति-पूजन में तप-कानन की लता पुष्प बरसाती है
वट के नीचे खड़ी खोजती लिये सुजाता खीर तुम्हें
बोधिवृक्ष-तल बुला रहे कलरव में कोकिल कीर तुम्हें
शस्त्र भार से विकल खोजती रह-रह धरा अधीर तुम्हें
प्रभो ! पुकार रही व्याकुल मानवता की जंजीर तुम्हें
आह ! सभ्यता के प्राङ्गण में आज गरल-वर्षण कैसा
घृणा सिखा, निर्वाण दिखाने वाला यह दर्शन कैसा
स्मृतियों का अन्धेर ! शास्त्र का दम्भ ! तर्क का छल कैसा
दीन-दुखी असहाय जनों पर अत्याचार प्रबल कैसा
आज दीनता को प्रभु की पूजा का भी अधिकार नहीं
देव ! बना था क्या दुखियों के लिए निठुर संसार नहीं
धन-पिशाच की विजय, धर्म की पावन ज्योति अदृश्य हुई
दौड़ो बोधिसत्व ! भारत में मानवता अस्पृश्य हुई
धूप-दीप, आरती, कुसुम ले भक्त प्रेमवश आते हैं
मन्दिर का पट बन्द देख 'जय' कह निराश फिर जाते हैं
शबरी के जूठे बेरों से आज राम को प्रेम नहीं
मेवा छोड़ शाक खाने का याद पुरातन नेम नहीं
पर गुलाब-जल में गरीब के अश्रु राम क्या पावेंगे
बिना नहाये इस जल में क्या नारायण कहलायेंगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मनुज-मेध के पोषक दानव आज निपट निर्द्वन्द्व हुए
कैसे बचें दीन ? प्रभु भी धनियों के गृह में बन्द हुए
अनाचार की तीव्र आँच में अपमानित अकुलाते हैं
जागो बोधिसत्व ! भारत के हरिजन तुम्हें बुलाते हैं
जागो विप्लव के वाक् ! दम्भियों के इन अत्याचारों से
जागो हे जागो तप-निधान ! दलितों के हाहाकारों से
जागो, गांधी पर किये गये नरपशु पतितों के वारों से
जागो, मैत्री-निर्घोष ! आज व्यापक युगधर्म-पुकारों से

जागो गौतम ! जागो महान
जागो अतीत के क्रान्ति-गान
जागो जगती के धर्म-तत्व
जागो हे जागो बोधिसत्व ।

[रेणुका से]

दिगम्बरि

उदय-गिरि पर पिनाकी का कहीं टङ्कार बोला
दिगम्बरि बोल अम्बर में किरण का तार बोला ।
× × × ×

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

तिमिर के भाल पर चढ़ कर विभा के बाण वाले
खड़े हैं मुन्तज़िर कब से नये अभियान वाले।
प्रतीक्षा है, सुनें कब व्यालिनी ! फुंकार तेरा,
विदारित कब करेगा व्योम को हुंकार तेरा ?
दिशा के बन्ध से झंझा विकल है छूटने को,
धरा के वक्ष से आकुल हलाहल फूटने को।
कलेजों से लगी बत्ती कहीं कुछ चल रही है,
हवा की साँस पर बेताब-सी कुछ चल रही है,
धराधर को हिला गूँजा धरणि में राग कोई,
तलातल से उभरती आ रही है आग कोई !
क्षितिज के भाल पर नव सूर्य्य के सप्ताश्व बोले,
चतुर्दिक् भूमि के उत्ताल पारावार बोला -
नये युग की भवानी आ गई बेला प्रलय की,
दिगम्बरि ! बोल अम्बर में किरण का तार बोला।

× × × ×

थकी बेड़ी कफस की हाथ में सौ बार बोली,
हृदय पर झनझनाती टूट कर तलवार बोली !
कलेजा मौत ने जब जब टटोला इम्तिहाँ में,
जमाने को तरुण की टोलियाँ ललकार बोलीं।
पुरातन और नूतन वज्र का संघर्ष बोला,
विभा-सा कौंध कर भू का नया आदर्श बोला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

नवागम-रोर से जागी बुझी ठण्डी चिता भी,
नई श्रृंगी उठा कर वृद्ध भारतवर्ष बोला।
दरारें हो गईं प्राचीर में बन्दी-भवन के,
हिमालय की दरी का सिंह भीमाकार बोला—
नये युग की भवानी आ गई बेला प्रलय की,
दिगम्बरि ! बोल अम्बर में किरण का तार बोला !

× × × ×

लगी है धूल को परवाज़ उड़ती छा रही है,
कड़कती दामिनी, झंझा कहीं से आ रही है।
घटा-सी दीखती जो, वह उमड़ती आह मेरी,
खड़ी जो विश्व का पथ रोक है, वह चाह मेरी।
सजी चिनगारियाँ, निर्भय प्रभंजन मग्न आया,
क़यामत की घड़ी आई, प्रलय का लग्न आया।
दिशा गूँजी, बिखरता व्योम में उल्लास आया,
नये युगदेव का नूतन कटक लो ! पास आया।
पहन द्रोही-कवच रण में युगों के मौन बोले
ध्वजा पर चढ़ अनागत धर्म का उच्चार बोला—
नये युग की भवानी आ गई बेला प्रलय की
दिगम्बरि ! बोल अम्बर में किरण का तार बोला।

× × × ×

हृदय का लाल रस हम वेदिका में दे चुके हैं,
विहँस कर विश्व का अभिशाप सिर पर ले चुके हैं।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

परीक्षा में रुचे वह कौन हम उपहार लायें ?
बता उस बोलने का मोल हम कैसे चुकायें
युगों से हम अनय का भार ढोते आ रहे हैं
न बोली तू मगर हम रोज मिटते जा रहे हैं।
पिलाने को कहाँ से रक्त लायें दानवों को ?
नहीं क्या स्वत्व है प्रतिशोध का हम मानवों को ?
ज़रा तू बोल तो, सारी धरा हम फूँक देंगे।
पड़ा जो पन्थ में गिरि, कर उसे दो टूक देंगे।
कहीं जो पूछने बूढ़ा विधाता आज आया,
कहेंगे—हाँ, तुम्हारी सृष्टि को हमने मिटाया।
जिला फिर पाप को, टूटी धरा यदि जोड़ देंगे
बनेगा जिस तरह उस सृष्टि को हम फोड़ देंगे।
हृदय की वेदना बोली लहू बन लोचनों में
उठाने मृत्यु का घूँघट हमारा प्यार बोला—
नये युग की भवानी आ गई वेला प्रलय की
दिगम्बरि ! बोल अम्बर में किरण का तार बोला।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

हिमालय के प्रति

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

साकार, दिव्य, गौरव विराट!
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!
मेरी जननी के हिम-किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!

मेरे नगपति! मेरे विशाल!

युग-युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान
निस्सीम व्योम में तान रहे,
युग से किस महिमा का वितान।

कैसी अखंड यह चिर-समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?

उलझन का कैसा विषम जाल
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ओ, मौन तपस्या-लीन यती !
पल-भर को तो कर दृगोन्मेष !
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश !

सुखसिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र
गंगा यमुना की अमिय-धार
जिस पुण्यभूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार।

जिसके द्वारों पर खड़े क्रान्त
सीमापति ! तूने की पुकार।
'पद-दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार'।

उस पुण्यभूमि पर आज तपी
रे ! आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे,
डँस रहे चतुर्दिक् विविध व्याल।

मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

कितनी मणियाँ लुट गईं ? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष !
ध्यान-मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कितनी द्रुपदा के बाल खुले,
कितनी कलियों का अन्त हुआ;
कह हृदय खोल चित्तौर! यहाँ
कितने दिन ज्वाल-वसन्त हुआ!

पूछे, सिकता-कण से हिमपति
तेरा वह राजस्थान कहाँ?
वन-वन स्वतन्त्रता-दीप लिये
फिरनेवाला बलवान कहाँ?

तू पूछ अवध से, राम कहाँ?
वृन्दा! बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?

पैरों पर ही है पड़ी हुई
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ, कहाँ इसने खोईं
अपनी अनन्त-निधियाँ सारी?

री कपिलवस्तु! कह बुद्धदेव
के वे मंगल-उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन
तक गये हुए सन्देश कहाँ?

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी-शान कहाँ ?
ओरी उदास गंडकी! बता
विद्यापति-कवि के गान कहाँ ?

तू मौन त्यागकर पूछ आज!
बंगाल, नवाबी ताज कहाँ
भारत का अन्तिम ज्योति-नयन
मेरा प्यारा 'सीराज' कहाँ ?

तू तरुण देश से पूछ अरे!
गूँजा कैसा यह ध्वंस-राग ?
अम्बुद्धि-अन्तस्तल-बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग ?

प्राची के प्राङ्गण-बीच देख
जल रहा स्वर्ण-युग-अग्निज्वाल,
तू सिंहनाद कर जाग यती!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

रे! रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर!
पर फिरा हमें गांडीव, गदा,
लौटा दे अर्जुन, भीम वीर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कह दे शंकर से आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार ;
सारे भारत में गूँज उठे
'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार !

ले अँगड़ाई उठ, हिले धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद,
तू शैलराट् ! हुंकार भरे
फट जाय कुहा, भागे प्रमाद।

तू मौन त्याग; कर सिंह नाद
तू तपी ! आज तप का न काल ;
नव युग-शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग मेरे विशाल !

मेरी जननी के हिम-किरीटनी
मेरे भारत के दिव्य भाल !
नवयुग-शंखध्वनि जगा रही !
जागो नगपति ! जागो विशाल !

[हुंकार से]

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रतीक्षा

अयि संगिनी सुनसान की !

मन में मिलन की आस है
दृग में दरसन की प्यास है
पर ढूँढ़ता फिरता जिसे
उसका पता मिलता नहीं
झूठे बनी धरती बड़ी
झूठे वृहद् आकाश है
मिलती नहीं जग में कहीं
प्रतिमा हृदय के गान की
अयि संगिनी सुनसान की !

तुम जानती सब बात हो
दिन हो कि आधी रात हो
मैं जागता रहता कि कब
मंजीर की आहट मिले
मेरे कमल-वन में उदय
किस काल पुण्य-प्रभात हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

किस लग्न में हो जाय कब
जानें कृपा भगवान् की
आयि संगिनी सुनसान की !

मुख में हँसी मन म्लान है
उजड़े घरों में गान है
जग ने सिखा रक्खा गरल
पीकर सुधा-वर्षण करो
मन में पचा ले आह जो
सबसे वही बलवान है
उर में पुरातन पीर, मुख
पर द्युति नई मुसकान की
आयि संगिनी सुनसान की !

[रसवंती से]

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के ग्रन्थ

कविता—रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वन्द्वगीत ।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

परिचय

१—श्री मैथिली शरण गुप्त (जन्म सं० १६४३)

चिरगाँव, झाँसी।

२—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय (जन्म सं० १६२२)

संकटमोचन, बनारस।

३—श्री रामनरेश त्रिपाठी (जन्म सं० १६४६)

हिन्दी ज्ञान मन्दिर, बम्बई।

४—श्री गोपालशरण सिंह (जन्म सं० १६४८)

नयी गढ़ी, रीवाँ।

५—श्री जयशंकर प्रसाद (जन्म सं०—१६४६ मृत्यु सं० १६६४)

६—श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (जन्म सं० १६५३)

दारागंज, इलाहाबाद।

७—श्री सुमित्रानन्दन पन्त (जन्म सं० १६५७)

उदय शंकर कलाकेन्द्र, बम्बई!

८—श्रीमती महादेवी वर्मा (जन्म सं० १६६४)

प्रयाग महिलाविद्यापीठ, इलाहाबाद।

९—श्री रामकुमार वर्मा (जन्म सं० १६६२)

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी, इलाहाबाद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

१०—श्री भगवती चरण वर्मा (जन्म सं० १६६०)

बाम्बे टाकीज, बम्बई ।

११—श्री सियाराम शरण गुप्त (जन्म सं० १६६२)

चिरगाँव, झाँसी,

१२—श्री हरिवंश राय बच्चन (जन्म सं० १६६४)

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी, इलाहाबाद ।

१३—श्री उदयशंकर भट्ट (जन्म सं० १६५४)

कृष्णगली, लाहौर ।

१४—श्री माखनलाल चतुर्वेदी (जन्म सं० १६४५)

कर्मवीर प्रेस, खंडवा ।

१५—श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (जन्म सं० १६५४)

प्रताप प्रेस, कानपुर ।

१६—श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान (जन्म सं० १६६१)

राइट टाउन, जबलपुर ।

१७—श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' (जन्म सं० १६६५)

हिमालय प्रेस, पटना ।

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इस संग्रह में निम्नलिखित काव्य-ग्रन्थों से अवतरण लिये गये हैं

१	अणिमा	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
२	अनामिका	" "
३	अभिशाप	श्री रामकुमार वर्मा
४	आँसू	श्री जयशंकर 'प्रसाद'
५	आर्द्रा	श्री सियारामशरण गुप्त
६	एकांत संगीत	श्री हरिवंश राय 'बच्चन'
७	कल्पलता	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय
८	कादम्बिनी	श्री गोपाल शरण सिंह
९	कानन कुसुम	श्री जयशंकर 'प्रसाद'
१०	कुंकुम	श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
११	कुकुरमुत्ता	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
१२	कामायनी	श्री जयशंकर 'प्रसाद'
१३	कुणाल गीत	श्री मैथिली शरण गुप्त
१४	गीतिका	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
१५	गुञ्जन	श्री सुमित्रानन्दन पन्त
१६	ग्राम्या	" "
१७	चन्द्रकिरण	श्री रामकुमार वर्मा
१८	चित्ररेखा	" "

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

१६	चुभते चौपदे	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय
२०	चोखे चौपदे	” ”
२१	ज्योतिष्मती	श्री गोपाल शरण सिंह
२२	झरना	श्री जयशंकर 'प्रसाद'
२३	झंकार	श्री मैथिली शरण गुप्त
२४	तुलसीदास	श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
२५	त्रिधारा	श्री माखनलाल चतुर्वेदी श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान श्री केशव प्रसाद पाठक
२६	दीपशिखा	श्रीमती महादेवी वर्मा
२७	दूर्वादल	श्री सियाराम शरण गुप्त
२८	दैनिक	” ”
२९	द्वापर	श्री मैथिली शरण गुप्त
३०	नहुष	” ”
३१	निशा निमंत्रण	श्री हरिवंश राय 'बच्चन'
३२	नीरजा	श्रीमती महादेवी वर्मा
३३	नीहार	” ”
३४	पथिक	श्री रामनरेश त्रिपाठी
३५	परिमल	श्री सुर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
३६	पल्लव	श्री सुमित्रानन्दन पन्त
३७	पाथेय	श्री सियाराम शरण गुप्त
३८	पारिजात	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय
३९	प्रिय प्रवास	” ”

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

४०	प्रेम संगीत	श्री भगवती चरण वर्मा
४१	बापू	श्री सियाराम शरण गुप्त
४२	बोलचाल	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय
४३	मधुकण	श्री भगवती चरण वर्मा
४४	मधुबाला	श्री हरिवंश राय 'बच्चन'
४५	मधुशाला	" "
४६	माधवी	श्री गोपाल शरण सिंह
४७	मानव	श्री भगवती चरण वर्मा
४८	मानवी	श्री गोपाल शरण सिंह
४६	मानसी	श्री रामनरेश त्रिपाठी
५०	मुकुल	श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान
५१	मृण्मयी	श्री सियाराम शरण गुप्त
५२	यशोधरा	श्री मैथिली शरण गुप्त
५३	युगान्त	श्री सुमित्रा नन्दन पन्त
५४	रसवंती	श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'
५५	रश्मि	श्रीमती महादेवी वर्मा
५६	रूपराशि	श्री रामकुमार वर्मा
५७	रेणुका	श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'
५८	लहर	श्री जयशंकर 'प्रसाद'
५६	वैदेही बनवास	श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय
६०	संकेत	श्री रामकुमार वर्मा
६१	संचिता	श्री गोपाल शरण सिंह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

६२	सतरंगिनी	श्री हरिवंश राय 'बच्चन'
६३	साकेत	" मैथिली शरण गुप्त
६४	सागरिका	" गोपाल शरण सिंह
६५	साँध्यगीत	श्रीमती महादेवी वर्मा
६६	स्वप्न	श्री रामनरेश त्रिपाठी
६७	हिमकिरीटिनी	" माखन लाल चतुर्वेदी
६८	हुंकार	" रामधारी सिंह 'दिनकर'

———

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding
pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc